Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

आर्योदय

(मासिक) अक्टूबर 1997

निशिचर हीन करौं महि धनु उठाय प्रण कीन्ह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नवयुग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आदि मनुज से सुन्दरतम तुम, आदि 'प्रारा' से सुन्दर प्रारा।
तुम 'मानव' थे युग मानव या, मानवता के ही अभियान॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्
जन-ज्ञान
कृण्वन्तो-विश्वमार्य्यम्
वेदः
नई दिल्ली

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

कार्यालय
2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 5724741, 5815457
प्रधान कार्यालय
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-36, दूरभाष : 7202249
संस्थापक
स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक
पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक, **दिव्या आर्य**
वार्षिक मूल्य - 70 रुपये
आजीवन - 501 रुपये
एक प्रति - 7 रुपये
विदेश में विमान से, 50 पौंड, 65 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
विदेश में आजीवन 5001 रुपये
अक्टूबर 1997 वर्ष 32 अंक 6

सम्पादकीय

विजयादशमी एवम् दीपोत्सव तथा मर्यादा पुरुषोत्तम

आंग्ल कालदर्शिका के अनुसार यह है अक्टूबर मास। अनेक पर्वों की है, इस मास में एक श्रृंखला। पर्व भी ऐसे कि जो आज विभिन्न मत-मतान्तरों, पंथ, सम्प्रदायों में विभाजित धरा की सर्वाधिक प्राचीन जाति, जिसे कालचक्र के प्रवाह ने विश्व में 'हिन्दू' नाम से विख्यात किया है, के अन्तस में निहित एकता के अमृत तत्त्व की अनुभूति कराते हैं। इस मास में आयोजित होने वाले इन पर्वों में प्रमुखतम है विजयादशमी और दीपामलिका।

यह भी एक अद्भुत संयोग है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से विजयादशमी पर्व संबंधित है तो दीपोत्सव से भी उनका अटूट नाता है। इन दोनों पर्वों को इस राष्ट्र का वह प्रत्येक नागरिक सोत्साह मनाता है, जो आर्यावर्त्त, भारतवर्ष, हिन्दुस्थान के कण-कण में व्याप्त सांस्कृतिक सरिता में अवगाहन कर स्वयं को धन्य मानता है।

श्रीराम की गुण गरिमा के गायकों ने उनके प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति हेतु विभिन्न विशेषणों से विभूषित किया है। किसी ने उन्हें सूर्यवंश प्रभाकर की संज्ञा प्रदान की तो किसी ने उन्हें अखिल आर्य निषेवितपाद पद्म साकेताधीश्वर कहा है। किसी ने दशरथानन्दनवर्धन, जानकी-जीवन, सुग्रीव सुहृद कहकर सम्बोधित किया है तो किसी को वे स्वकुलदीपक के रूप में भाए हैं। उनको मिले अनेक विशेषणों से उनके महिमामंडित व्यक्तित्व की एक झलक मिलती है। अपने व्यक्तित्व के बल पर श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में जगद्श्रुत हुए। उनका जीवन वृत्त इस तथ्य का साक्षात्कार कराता है कि वह मानवी मूल्यों के लिए संघर्षरत, सामाजिक चेतना से परिपूर्ण, अगाध ज्ञान सागर से आप्लावित, गहन यातना में डूबे इतिहास के निर्णायक मोड़ पर स्थित एक महान व्यक्तित्व हैं। श्रीराम अपने समय के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ जन मानस के लाखों वर्षों से प्रतीक बने हुए हैं। श्रीराम का व्यक्तित्व अनेकानेक गुणों से लिपटा हुआ संघर्षरत है। जनमानस में रचा बसा, इतिहास के पृष्ठों में गरजता मर्यादाओं के लिए सर्वस्व समर्पण करता आज भी अलख जगा रहा है।

श्रीराम की जीवन गाथा करुणा और वेदना से भरी पड़ी है। उनका दर्द, उनकी पीड़ा मात्र व्यक्तिगत नहीं, निजी नहीं। यदि उनका दर्द, उनकी पीड़ा निजी ही होती तो संभवतः इतिहास में अपना अमर स्थान नहीं बना पाते। उनकी

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक : पंडिता राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 द्वारा डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 305/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदना गहरी सामाजिक वेदना है। विश्वामित्र सरीखे ज्ञान के आगार गुरु ने भी उन्हें शिरस्त्राण बनाया। शिक्षा के बहाने उन्होंने श्रीराम को इसलिए अपने शिष्य के रूप में चुना, जिससे वे अपने यज्ञ को निर्भीक होकर पूर्ण कर सकें।

श्रीराम ने सुबाहु और ताड़का का वध अपने किसी वैर भाव अथवा स्वार्थ साधन हेतु नहीं अपितु जगत् के हित साधन को ध्यान में रखकर ही किया। उन्हीं श्रीराम के जीवन की संघर्षगाथा में सर्वाधिक तीखा मोड़ उनके राज्याभिषेक की घोषणा के तत्काल बाद तब आया था जब एक ओर राज्य सिंहासन पर उनके आरोहण की मंगलमयी शहनाइयों की मृदु ध्वनियों से अयोध्या निनादित थी। तभी एकाएक हुआ था पट परिवर्तन। कालचक्र ने तभी वह मोड़ लिया था कि उन्हें चौदह वर्षों का वनवास मिल गया। किन्तु इस पर भी श्रीराम के मुख पर न तो विषाद की रेखा थी और न ही आक्रोश का भाव।

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के शब्दों में (आहूतस्याभिषेकाय) राज्याभिषेक के लिए बुलाए हुए और वन के लिए विदा किए गए श्रीरामचन्द्र के मुख पर मैंने (वशिष्ठ ने) ने कोई अंतर नहीं पाया। वास्तव में निष्काम, कर्मवीर का यही होता है चरित्र और चित्र। आज ही मृत्यु आ जाए या युगान्तर के पश्चात आए, निष्काम कर्मवीर अपनी राह नहीं भूलते, पथ से विचलित नहीं होते। उसी मधुर मुस्कान के साथ वे अपने कर्त्तव्य निर्वाह में रत रहते हैं। श्रीराम के वनवास की दुःखभरी व्यथा कथा में तेरह वर्षों का वर्णन न के बराबर है। वनवास का चौदहवां वर्ष संघर्ष और घोर तपश्चर्या का रहा। इस वर्ष में भगवती सीता के हरण की घटना ने श्रीराम को अत्यन्त व्यथित कर दिया था। परन्तु वे व्यक्तिगत व्यथा में डूबकर ही नहीं रह जाते अपितु वियोग के अश्रुओं से नहाकर उनकी चेतना और अधिक दीप्तिमान हो जाती है। वे उस दुर्दान्त अहंकारी, मर्यादाच्युत मतांध सत्ताधीश रावण के अन्याय को चुनौती देने को उद्धत होते हैं, परन्तु लंका पर अचानक आक्रमण नहीं करते। रावण को अंगद और हनुमान द्वारा चेतावनी दिलायी जाती है। परन्तु क्रूर और शक्ति के दर्प से आप्लावित दंभी और प्रकांड पांडित्य के गर्व से दर्पित होकर मर्यादाओं से च्युत जीवन जीने वाले रावण को जब वह सही राह पर आता हुआ नहीं देखते तो अपने धनुष की प्रत्यंचा पर बाण चढ़ाते हैं। महावीर हनुमान के सेनापतित्व में वानर (बंदर नहीं) जातीय योद्धाओं की सेना को संगठित करते हैं। और इस तरह श्रीराम ने लंका के अतुल बलशाली, महापराक्रमी राक्षस संस्कृति की अनुगामी जाति केसमृद्ध साम्राज्य के अधीश्वर पापी, अनाचारी, रावण की सत्ता का विध्वंस कर वहीं विजय वैजयन्ती फहरायी। अतीत के उस स्वर्णिम पृष्ठ की स्मृति ही विजयादशमी का पावन पर्व सहस्रों वर्षों से कोटि-कोटि जन को कराता आ रहा है। लंका पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त श्रीराम ने वहां अपना आधिपत्य स्थापित नहीं किया अपितु रावण के अनुज धर्मपरायण एवं मर्यादाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के अनुव्रती विभीषण को ही प्रजापालकार्य हेतु सिंहासनासीन कराया।

श्रीराम ही भारत की उत्तरी और दक्षिणी धुरी को मिलाने वाले महान जननायक के रूप में विश्व की सर्वोच्च उपाधि मर्यादा पुरुषोत्तम से महिमामंडित हुए। उन्होंने अपने समस्त जीवन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। उनके मर्यादा पालन का एक दृष्टान्त महर्षि वाल्मीकि द्वारा किए गए इस उल्लेख में वर्णित है। वन गमन आदेश दे देने के पश्चात दशरथ अचेत हो गए। चेतना आते ही वह कहते हैं— अहं राघव! कैकेय्या वरदानेन— हे राम मैं कैकेयी को वचन देकर बंध गया हूं। तुम मुझे बंदी बनाकर अयोध्या के राजा बन जाओ। तब श्री राम ने अपने गांभीर्य तथा विवेक का प्रदर्शन करते हुए कहा था भगवान वर्ष सहस्राय भव पृथिव्या। पिताजी! आप इस धरती के हजारों वर्ष तक स्वामी रहें। मुझे तो वन का राज मिला है, मैं सहर्ष उसी में संतुष्ट हूं।

वनवास की अवधि के समापन के उपरान्त श्री राम के अयोध्या पुनरागमन की प्रेरक स्मृतियां दीपमालिका के उस पावन पर्व से जुड़ी हैं जिस पर विशाल अट्टालिकाओं में आज विद्युत छटा आलोकित होती है तो ग्राम का किसान भी अपनी कुटिया में माटी के दीप जला कर मर्यादा पुरुषोत्तम का पावन स्मरण करता है। छान्दोग्यपनिषद में धर्म का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा गया है :

त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमः। तपः एव द्वितीयो, ब्रह्मचर्याचार्यकुल वासी तृतीयः॥

अर्थात् धर्म के तीन स्कन्ध अर्थात् भाग हैं— यज्ञ, तप और ब्रह्मचर्य। यज्ञ अर्थात् देवयज्ञ, शुभ कर्मादि करना, अध्ययन अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा को पहुंचना, दान अर्थात् त्याग की प्रवृत्ति, लोभ से कोसों दूर रहना। तप अर्थात् आत्म नियंत्रण और द्वन्द्व सहना। ब्रह्मचर्य-व्रत धारण कर आचार्य कुल में रहना।

श्रीराम के जीवन में धर्म के ये तीनों स्कन्ध इतने रच-पच गए थे कि अन्ततोगत्वा वाल्मीकि कह उठे थे—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

विजयदशमी एवं दीपोत्सव तथा मर्यादा पुरुषोत्तम —सम्पादकीय १
— महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी ४
भिक्षां देहि
सामयिकी— रेल विलास ५
आपके पत्र ६
हमारी परम्परा में वेदार्थ के तीन क्षेत्र —पं० युधिष्ठिर मीमांसक ७
विश्व का महाज्योति पर्व—पं० बदरी नारायण शर्मा १२
आर्यावर्त्त के प्राण-श्रीराम—राजेन्द्र पाल गुप्ता १४
रामराज्य के बाद—डॉ० सत्यनारायण सिन्हा १६
मेरे जीवन में ऋषि दयानन्द का प्रथम सत्संग १७
— स्वामी श्रद्धानन्द
दयानन्द मानवता का संगीत—पं० चमूपति एम. ए. १९
आर्य समाज अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला —उमा राव २३
जननायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम २६
—श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा
उपनिषद्, ब्राह्मण और वैदिक अलंकारों पर दयानन्द २८
—वेद प्रकाश गुप्त
ओ३म् ध्वज का संदेश ३२
—श्रीमती निर्मला चोपड़ा
वसुधैव कुटुम्बकम् ३३
—डॉ० कर्ण सिंह
जब यतीन्द्र के फेफड़े में दूध चला गया ३५
—डॉ० के० एल० जौहर
अश्फाक को उनके सहपाठी ने पकड़वाया ३७
—डॉ० के० एल० जौहर
हिन्दू राष्ट्र नेपाल में आर्य समाज की स्थिति-२ ३९
—भवानीलाल भारतीय
बच्चों डर पैदा न करें ४१
—सीमा
योद्धा सम्पादक गणेश शंकर विद्यार्थी ४५
—जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
समाचार दर्शन ४६

"रामो विग्रहवान धर्मः।

अर्थात् श्रीराम धर्म की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं।

वह अमर दीप वह प्रकाश पुंज

दीप से किरणें विस्फटित होती हैं, प्रसारित होता है प्रकाश पुंज। 'तमसोमा ज्योतिर्गमय' ही है, वह कामना जो वैदिक संस्कृति के प्रति अनुरक्त जन के मुख से सतत निनादित होती है। देवभूमि भारतवर्ष की महिमामयी गोद में समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म ग्रहण कर विश्व की विभ्रान्त मानवता को सत्य-पथ का दर्शन करा धराधाम में व्याप्त अज्ञान के गहन तिमिर को विदीर्ण कर ज्ञान का प्रकाश फैलाया है। इसी श्रृंखला में एक कड़ी थे महर्षि दयानन्द। जब इस युग पुरुष ने जन्म लिया तो समग्र भारतवर्ष निराशा के गहन तिमिर से आच्छादित था। आर्य जाति अपनी महान संस्कृति, गौरव, इतिहास, परम्परा और धर्म के सत्य स्वरूप को बिसार अज्ञान के गहन अन्धकार से संतप्त थी।

वह मूलशंकर, वह दयानन्द वस्तुतः दया और आनन्द का सागर सिद्ध हुआ। उन्होंने वेद की पावन ऋचाओं का उद्धार, उनकी पुनः प्रतिष्ठा की। महर्षि का एक वैशिष्ठय यह था कि वह जितने वेद भक्त थे, उससे कम राष्ट्रभक्त भी नहीं थे। मत, पंथ और संप्रदाय के जो मतभेद आज राष्ट्र जीवन में वैषम्य और वैमनस्य का विष घोल रहे हैं, उनसे मुक्ति का अमोघ मंत्र उन्होंने वेद ज्ञान के प्रसार के रूप में उच्चारित किया था। जन-जन के मन को उस पावन प्रकाश से आलोकित करने का दायित्व ही उन्होंने आर्य समाज को सौंपा था। वेदवाद और राष्ट्रवाद ही आर्य जनों को विरासत में उनसे मिली अक्षय सम्पदा है। आज जब स्वदेश में वैचारिक पाखण्ड का अन्धकार दिन-प्रतिदिन गहन होता जा रहा है, ऋषि के आह्वान पर ध्यान देने की आवश्यकता और महत्ता अधिकाधिक उजागर होती जा रही है। दीपमालिका के अवसर पर हम उस महान् आत्मा का स्मरण और स्तवन मात्र ही नहीं करें, ज्योतिर्मय की ज्योति में लीन हुए उस प्रेरणा पुरुष के प्रति शाब्दिक श्रद्धा ही व्यक्त न करें, उसके स्वप्नों की धरोहर की चर्चा भर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं मान लें, अपितु संकल्प का दीप प्रज्वलित करें, यही है युग की पुकार। यही है दीप पर्व का आह्वान।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

सबके लाभ के लिए

कोई भी सर्वहितकारी कार्य बिना दान के नहीं चल सकता। प्राचीन शास्त्रों में दान की महिमा इसलिए गायी गयी है कि दान से वह सब कार्य सम्पन्न होते हैं जो मानव को ऊंचा उठाते हैं।

वेद प्रचार, अज्ञान विरोध, सत्य प्रसार क्या बिना धन के हो सकता है? लाखों पादरी क्या बिना दान के प्रचार कर सकते थे? कोई भी विचार प्रचार के लिए शक्ति चाहता है। काम छोटा हो या बड़ा बिना अर्थ के सम्भव नहीं।

दयानन्द संस्थान का सारा कार्य दान से ही आगे बढ़ा है। स्वर्गीय पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने हमें १०० रु० का दान दिया। उनका पवित्र दान लाखों रु० के साहित्य प्रसार का कारण बना।

महात्मा गांधी चार-चार आने की भिक्षा लेते थे। महामना मालवीय जी ने भिक्षा न ली होती तो क्या हिन्दू विश्वविद्यालय बनता? जो भी करना होता है उसके लिए धन चाहिए। देखना यह उचित है कि आपका दान उसी उद्देश्य में लग रहा है या नहीं।

दयानन्द संस्थान दान-भिक्षा मांगता रहता है—मांगता रहेगा। आप उसकी झोली में जितना डालेंगे, उतना ही वह काम कर सकेगा। बिना धन के काम नहीं होगा। अगर आप आंखें खोलकर देखें तो स्वयं आपका मन संस्थान के प्रति दान देने को उत्सुक होगा।

१ रु० मासिक या १००० रु० मासिक जो भी आप दे सकते हों, दीजिए। प्रति माह पहली तारीख को आप दान भेजिए। प्रत्येक शुभ अवसर पर, पर्व पर संस्थान को स्मरण रखिए।

धरती पर वेद की विचारधारा फैलाने के लिए, अज्ञानी मत-वाद मिटाने के लिए, संघर्ष में लगे दयानन्द संस्थान को जितना भी सहयोग मिलेगा उतनी ही गति से हम आगे बढ़ सकेंगे।

काम चाहिए तो दान चाहिए

यह सत्य जिस दिन भी आप समझ लेंगे उस दिन संसार का भाग्य उदय होगा।

घर में दिया जलाते हुए कभी भी यह न भूलें कि आपने संसार को भी ज्योतिर्मय करना है।

भिक्षां देहि

क्रान्ति की तैयारी करो

संसार का इतिहास बदलना है, चिन्तन, विचार, दर्शन सभी बदलना है और इस परिवर्तन का नाम है क्रान्ति।

सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए आर्य समाज स्थापित हुआ था, १०० वर्ष में कुछ हुआ पर सम्पूर्ण परिवर्तन अभी बहुत दूर है।

जो अधूरा है उसे पूरा करने के लिए काम आर्य समाज ने करना है। धर्म-अर्थ समाज-दर्शन सभी का आमूल परिवर्तन हेतु हमें संघर्ष करना है।

ग्रामों में, नगरों में, गरीबी में, अमीरी में सबमें जो भटकन है वह भटकन हमें कहां ले जाकर फेंकेगी यह कौन जानता है? किसे ज्ञान है कि जीवन की दौड़ में मृत्यु का कटु नाम छिपा है? इस महानाश को जीवन गीत में बदलने के लिए आर्य समाज कृत संकल्प है।

जो सो रहा है या लड़ रहा है या मिट रहा है वह आर्य समाज नहीं है। आर्य समाज समुद्र की उत्ताल तरंगे हैं। हिमगिरि का उत्तुंग शिखर है। वह सूर्य की ज्योतिर्मय किरण है।

शक्तिपुंज आर्यसमाज को ज्योतिर्मय करने की प्रेरणा का व्रत लेकर उठो और परिवर्तन करो। समाज की सड़ी-गली रूढ़ियां मिटाओ, गरीबी जलाओ और पशुता कुचल दो।

काम करो इसलिए कि धरती स्वर्ग बने। विजय वरो, बढ़ो इसलिए कि कष्ट-क्लेश का कहीं लेश भी न रहे। क्या आप सोचेंगे?

("मासिक" जनज्ञान जून १९७८ से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

रेल विलास

केन्द्रीय रेल मंत्री राम विलास पासवान धीरे-धीरे रेल विलास मंत्री के रूप में मशहूर होने लगे हैं। एक तरफ रेल दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं, दूसरी तरफ अखबारों में नई रेल सेवा शुरू होने के पूरे पेज के विज्ञापन प्रकाशित हो रहे हैं। उसमें एक तरफ राम विलास जी की फोटू छपती है, दूसरी ओर प्रधानमंत्री जी की। जब देवेगौड़ा जी थे तो उनकी छपती थी और अब गुजराल जी हैं तो इनकी छपती है। प्रधानमंत्री की इतनी तस्वीरें तब भी नहीं छपीं जब भारत में परमाणु विस्फोट किया गया या पहला उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजा गया। इसलिए वे भी खुश और उनकी शीतल छांव में हमारे पासवान जी भी खुश। १९९४-९५ में रेलवे की विज्ञापनबाजी का खर्चा ५५.६ लाख था जो बढ़ कर १९९५-९६ में १.३७ करोड़ हो गया। और ९६-९७ के तो अभी नौ महीने ही बीते हैं लेकिन विज्ञापनों पर पौने चार करोड़ रुपये फूंके जा चुके हैं। हालत यह है कि सरकारी कर्मचारियों को वेतनवृद्धि देने के पैसे मंत्रालय के पास नहीं हैं, वित्त मंत्री ने योजना खर्च में से कटौती करने का सुझाव दे डाला है और रेलवे बोर्ड के साथ रोज बैठकें हो रही हैं कि यात्रा भाड़े में कैसे वृद्धि की जाए। लेकिन दिक् दिगंत में पासवान जी की पताका फहरा रही है। डेढ़ जगह आमान परिवर्तन, ढाई जगह शिलान्यास, पौने तीन जगह का प्रोजेक्ट विकास। अब इतना सारा काम होगा तो उसे प्रचारित करने के लिए इतने सारे लोग भी तो चाहिएं। तो इसके लिए राम विलास जी ने इतने लोग रखे हैं जितने रेल के डिब्बे में सीटें नहीं होतीं। उनके व्यक्तिगत स्टाफ में ७४ लोग हैं, १४ पूर्ववर्ती के और ६० इनके अपने। मंत्रालय को इसकी अनुमति नहीं है। रेल का डिब्बा होता तो टिकट चेकर सारी फालतू सवारियां उतार देता। अब इन्हें कौन उतारे। तिस पर मेहमाननवाजी का खर्च है, जो रेलवे की कैटरिंग के मत्थे पड़ता है। अखबारों में खबर है कि हर माह ऐसे लोगों के खाने पीने का तीन लाख का बिल बन रहा है। मंत्री के मन में राजा की तरह रहने का भाव जग जाए तो भला कौन रोक सकता है? बंगले में एक से एक आराम के उपकरण लगाए गए हैं। सैक्सशन से ज्यादा एयरकंडीशनर है। जाहिर है, सारा तामझाम सरकारी तिजोरी के मत्थे ही है। हो सकता है राम विलास जी इसका खंडन करें और कहें कि यह सब नाराज अधिकारियों के एक वर्ग द्वारा उनके खिलाफ किया जा रहा दुष्प्रचार है। अब आप ज्यादा प्रचार की लालसा रखेंगे तो उसका यह हश्र भी होगा ही। धुआं दिखता है तो क्या तनिक आग वहां नहीं होगी।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

दयानन्द संस्थान की रजत जयन्ती **वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम**

लेखराम नगर, (इब्राहीमपुर) दिल्ली-३६

में २९ अक्टूबर सायं चार बजे आयोजित

दीपयज्ञ

में आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

डॉ० धर्मवीर	मदन सिंह	रमेशचन्द्र चोपड़ा	स्वामी जगदीश्वरानन्द	राकेशरानी
मंत्री	*प्रचार सचिव*	*संचालक वानप्रस्थाश्रम*	*आचार्य*	*अध्यक्ष दयानन्द संस्थान*

सम्पर्क कार्यालय **: दयानन्द संस्थान,** २२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष : ५७२४७४१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाठकों के पत्र

दीपावली अभिनन्दन

महोदया, दीपमालिका की इस दिव्य दीप्ति से जीवन में प्रखर ज्ञान का विकास हो तथा मंगलमय नववर्ष आपके परिवार हेतु सर्वाधिक सुख, शान्ति, वैभव, सुस्वास्थ्य एवं चिरस्थायी स्नेह का संवाहक बने। दीपमालिका मूलतः बुद्धिकरण का संदेश देने वाला उत्सव है। क्यों ना इस बार हम इन जातिवादी व्यवस्थाओं और गुटों को धकिया कर समभाव की व्यवस्था करें। त्यौहार जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, उसे मंगलकारी सिर्फ अपने ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी बनाया जाए।

दीप से दीप जला करके, संस्कारित समाज बनाना है।
तभी हो सत्ता मर्यादित, राम राज्य फिर लाना है।

नरेन्द्र अवस्थी, आर्य समाज मार्केट, श्रीनिवासपुरी, दिल्ली

महर्षि का चित्र क्यों नहीं?

महोदय, १५ अगस्त के समाचार पत्रों में दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा के हस्ताक्षरों से युक्त एक सम्पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। शीर्षक है— 'देश की आजादी है जिन वीरों की निशानी, आओ मिलकर याद करें उनकी कुर्बानी'। इस विज्ञापन में भारत का नक्शा दर्शाकर उन व्यक्तियों को दिखाया गया है जिन्होंने १८५७ से १९४७ तक के आजादी के सफर में योगदान दिया है खेद हुआ कि उस नक्शे में कहीं भी स्वामी दयानन्द का उल्लेख नहीं है। 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' लोकमान्य तिलक के इस उद्घोष से बरसों पहले स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में स्पष्ट रूप से लिख दिया था कि "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है"। स्वामी जी ने १८५७ की क्रांति में जो योगदान दिया वह सब इतिहास की पुस्तकों में अंकित है। स्वामी जी के अनेकों शिष्यों यथा श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिलआदि ने आजादी की लड़ाई में जो योगदान दिया वह अविस्मरणीय है। स्वामी श्रद्धानन्द ने आजादी के लिए जो कुछ किया क्या वह स्वामी दयानन्द की प्रेरणा का ही फल नहीं था? मुख्यमंत्री महोदय से अनुरोध है कि भविष्य में स्वामी दयानन्द को उनका समुचित मान देकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

भवदीय,

अरविन्द कुमार गर्ग, जी-१४२, प्रताप विहार, गाजियाबाद।

प्रतिक्रिया

महोदया, मेरठ के श्री अजय मित्तल ने अपने एक लेख में कांग्रेस पर आरोप लगाया है कि उसने सदैव, सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज केयोगदान को देशवासियों से छुपाया ताकि देश को स्वतंत्र कराने का पूरा श्रेय उसे ही मिले। —मित्तल जी, ऐसा ही आरोप संघ परिवार पर भी लगाया जाता है कि वह वीर सावरकर और हिन्दू महासभा के कार्यों को जनता के समक्ष प्रस्तुत नहीं करते हैं ताकि हिन्दू संगठन का सारा श्रेय उन्हें ही मिले। दिल्ली के आर्य समाजी डॉ० महेश विद्यालंकार ने कहा है कि वेद, प्रचार-प्रसार की महती आवश्यकता है। —महेश जी आप दूसरों से तो आशा कर रहे हैं कि वह, यह करे किन्तु आप स्वयं कुछ ठोस कार्य करके आदर्श प्रस्तुत कीजिए।

नई दिल्ली के श्री गोपाल शरण विद्यार्थी ने कहा है कि श्रावणी पर्व पर, किसी दुर्गुण को छोड़ने और किसी सद्गुण को धारण करने का व्रत यज्ञाग्नि के समक्ष लेना चाहिए। —गोपाल जी, आपने कौन सा सा व्रत धारण किया है? कृपया बताएं ताकि कथनी और करनी में अन्तर न रहे तभी दूसरे भी ऐसे व्रत लेने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

समाजवादी पार्टी, मुस्लिमों को तमाम सरकारी सेवाओं में आरक्षण देना चाहती थी अब कांग्रेस भी आरक्षण देने पर विचार कर रही है। —यदि बुद्धिजीवी देशभक्त राष्ट्रवादी राजनीति को प्रभावित करने से अलग ही रहना चाहेंगे तो मुस्लिमों को सरकारी सेवाओं में आरक्षण मिल ही जाएगा।

इन्द्रदेव, सावरकर विचार मंच, बुलन्दशहर

आत्मिक धन्यवाद

पंडिता राकेशरानी जी, आशा है आपका स्वास्थ्य उत्तम ही होगा। जून माह ९७ का जनज्ञान पढ़ने का अवसर मिला। उसी अंक में ८ जून को युगपुरुष महाराणा प्रताप जन्म दिवस का सन्देश है। ८ जून के शुभ दिन में आपके जन्म दिवस पर श्री मदन सिंह जी का लेख भी पढ़ा, इस शुभ अवसर पर मेरी भी शुभकामना स्वीकार करें। इसी अंक में महात्मा वेदभिक्षुः जी की अमरवाणी का लेख जनज्ञान के ५ दिसम्बर १९७६ से उद्धृत भी पढ़ा। स्व० महात्मा वेदभिक्षुः जी के आत्मा की करुण पुकार "आर्यो एक हो जाओ" आपस में मतभेदों को भुलाइये, जातिवाद की दीवारों को तोड़िए आदि उनके तेजस्वी विचारों को जन-जन में पहुंचाने का महान् कार्य आप कर रही हैं। इसके लिए मेरा आत्मिक धन्यवाद।

स्वामी केवलानन्द सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद विचार

हमारी परम्परा में वेदार्थ के तीन क्षेत्र?

❑ पं० युधिष्ठिर मीमांसक

भारतीय प्राचीन वाङ्मय में वेद का स्थान सर्वोपरि माना गया है। प्राचीन परम्परा के अनुसार वेद समस्त विद्याओं के आकर ग्रंथ हैं। आजकल संस्कृत वाङ्मय में जितने विषयों के ग्रंथ उपलब्ध हैं उनके प्रवक्ता ऋषि, मुनि और आचार्य सबकी एक स्वर से प्रतिज्ञा है कि उनकेग्रंथों में प्रतिपाद्य विद्याओं का आदिस्रोत वेद हैं। इस प्रतिज्ञा से स्पष्ट है कि प्राचीन संस्कृत-वाङ्मय के अनुसार वेदार्थ का क्षेत्र बहुत विस्तृत है।

वेदार्थ के विभाग— प्राचीन आचार्यों ने वेदार्थ के उक्त महान् क्षेत्र को स्थूलतया दो विभागों में बांटा है। एक है आदिदैविक और दूसरा आध्यात्मिक।

प्रथम क्षेत्र—आधिदैविक क्षेत्र स्थूलता द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक और पृथिवी लोक में भेद से त्रिधा विभक्त है। तदन्तर प्रत्येक लोक में विविध भौतिक तत्त्व विद्यमान हैं, जिनका वेद में वर्णन है। वैदिक परिभाषा में त्रिलोकी के ये भौतिक तत्त्व ही देव अथवा देवता कहाते हैं। इसी तथ्य का उल्लेख महाभारत में निम्न शब्दों में किया गया है— **स्तुत्यर्थमिह देवानां वेदाः सृष्टाः स्वयम्भुवा।** शान्ति० ३२७/५० ॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती का मन्तव्य— स्वामी दयानन्द सरस्वती का भी मन्तव्य यही है कि वेद में मुख्यतया आधिदैविक (आधिभौतिक) पदार्थों के अतिसूक्ष्म विज्ञान का उपदेश है। उन्होंने पूना के १२ जुलाई १८७५ ई० के वेदविषयक व्याख्यान में कहा था—

> पदार्थ ज्ञान के विषय में वेदों में बड़ी दक्षता है।

इतना ही नहीं, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद भाष्य की रचना से पूर्व चारों वेदों का गहरा अनुशीलन करके जो **चतुर्वेदविषयानुक्रम** तैयार किया था उसके अध्ययन से भी यही प्रतीत होता है कि उनके मतानुसार वेद में प्रधानतया पदार्थ विज्ञान का ही वर्णन है।

द्वितीय क्षेत्र— आधिदैविक जगत् के तीनों लोक अध्यात्म=शरीर में भी निहित हैं। इस तत्त्व का निर्देश भगवती श्रुति इस प्रकार करती है—

> **अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्।**
> **सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व ॥**
>
> मा० सं० ७/५ ॥

अर्थात् भीतर तुम्हारे द्युलोक और पृथवीलोक को स्थापित करता हूं, भीतर स्थापित करता हूं विस्तृत अन्तरिक्ष लोक को। साथ देवों के अवरों और परों के (इस) अन्तर्यामी द्युलोक रूपी (ग्रह) पात्र में हे मघवन् (इन्द्र=जीव) हर्षित हो। ये 'पर' और 'अवर' देव शरीर में ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां हैं। इन्हीं पर और अवर देवों को ऋ० १/१/२ में पूर्व और नूतन ऋषि कहा है। वैदिक वाङ्मय में ऋषि शब्द इन्द्रियों के लिए बहुधा प्रयुक्त है। यथा—अथर्व० १०/८/९; बृ० उ० २/२/३ ॥

असौ (द्यौ) एवान्तर्यामः। शत० ४/१/२/२७ ॥ यज्ञ में अन्तर्याम एक सोमपात्र की संज्ञा है। अध्यात्म में यह अन्तर्याम पात्र मस्तिष्क का वह भाग है जिसमें सोम=ब्रह्मज्ञान भरा हुआ है। वहीं इन्द्र=जीव का निवासस्थान है। उसी के चारों ओर ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के मूल स्थान हैं। वहीं इन्द्र देवों के साथ सोम का पान करता है।

यद् ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे— वेद द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त तथ्य का निर्देश प्राचीन तत्त्वदर्शी मनीषियों ने **'यद् ब्रह्माण्डे तत् पिण्डे'** सूत्र द्वारा दिया है। इस मानुष पिण्ड में शिरोभाग द्युलोक, नाभिपर्यन्त भाग अन्तरिक्ष लोक और उससे नीचे का भाग पृथिवी लोकस्थानीय है।

वेद में प्रधानतया इन्हीं आधिदैविक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र के विभिन्न विभागों में निहित देवताओं का वैज्ञानिक वर्णन है।

वैदिक देवताओं का विभाग— वेद में जिन आधिदैविक तथा आध्यात्मिक तत्त्वों का प्रतिपादन है, उन्हें वैदिक परिभाषा में देव अथवा देवता कहते हैं। उनमें ग्यारह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवता प्रधान है। इन्हें रुद्र भी कहा जाता है। इनके व्याकुलित होने अथवा अपने अपने क्षेत्र से निकल जाने पर न केवल वही क्षेत्र, अपितु समष्टिरूप से सम्पूर्ण आधिदैविक अथवा आध्यात्मिक जगत् डांवाडोल हो उठता है। कभी-कभी उसकी स्थिति भी संशयास्पद हो जाती है। अतएव इन ग्यारह प्रधान देवों को वैदिक परिभाषा में रुद्र कहते हैं।

देवों का त्रिवृत्त्व— वेदों में जिन देवों का वर्णन है, वे आधिदैविक और आध्यात्मिक जगत् में पूर्वोक्त तीनों क्षेत्रों में त्रिधारूप से विद्यमान है। इसलिए देवों को त्रिवृत् कहा जाता है। ऋग्वेद २/१३९ के ११वें मन्त्र में ग्यारह प्रधान देवों का त्रिवृत्त्व (तीनों लोकों में रहना) स्पष्ट दर्शाया है। यथा—

ते दवासो दिव्येकादश स्थ पृथव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिंम जुषध्वम्॥

अर्थात्—जो देव द्युलोक में ग्यारह हैं, पृथिवी लोक में ग्यारह हैं और अन्तरिक्ष लोक में निवास करने वाले अपनी महिमा से ग्यारह हैं, वे देव इस यज्ञ का सेवन करें। यज्ञ से यहां द्रव्यमय आहुत्यात्मक यज्ञ अभिप्रेत नहीं है। क्योंकि यज्ञों की उत्पत्ति वेद-प्रादुर्भाव के बहुत पश्चात् त्रेता के आरम्भ में हुई है। इसलिए वेद में जहां भी यज्ञ शब्द का व्यवहार मिलता है वह आधिदैविक अर्थ में ब्रह्माण्ड तथा अध्यात्मपक्ष में पिण्ड का वाचक है। इन्हीं ब्रह्माण्ड और पिण्ड (शरीर) में निरन्तर होने वाले यज्ञों को समझाने के लिए ऋषियों ने द्रव्यमय यज्ञों की कल्पना की है। देखिए हमारा 'वैदिक सिद्धान्त मीमांसा' अन्तर्गत 'वेदार्थ की विविध प्रतिक्रियाओं का ऐतिहासिक अनुशीलन' नामक निबन्ध।

इन लोकों के ग्यारह देवों की पृथक्-पृथक् गणना करने पर ११+३=३३ संख्या होती है। ये ही मूल वैदिक ३३ देव हैं। शतपथ १४६/९/३-६ में कहे गए १२ आदित्य, ११ रुद्र और ८ वसु ये तैंतीस देव वेदानुसारी नहीं हैं। उपर्युक्त मन्त्र में कहे गए ग्यारह देव कौन से हैं, यह हम निश्चय पूर्वक तो नहीं कह सकते तथापि अग्निचयन के अन्तर्गत शतरुद्रिय होम की प्रक्रिया देखने से हमारा विचार है कि वेदोक्त तीनों स्थानों में ११-११ देव रुद्र संज्ञक है।

प्रधानभूत तीन देवताओं का त्रिवृत्त्व—आधिदैविक पक्ष में तीन ही प्रधान देवता हैं—

तिस्र एव देवता इति नैरुक्ताः। अग्निः पृथिवीस्थानः, वायुर्वेन्द्रो वाऽन्तरिक्षस्थानः, सूर्यो द्युस्थानः। निरुक्त ७/५॥

ये तीनों प्रधान देवता त्रिवृत् हैं। छान्दोग्य उपनिषद् (६/३/२-३) में कहा गया है— **हन्ताहमिमास्तिस्रो देवताः, तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकां करवाणि।**

अब हम ब्राह्मण ग्रंथों के वे वचन उद्धृत करते हैं जिनमें कतिपय देवों का त्रिवृत्त्व (=तीनों लोकों में निवास करना) स्पष्ट शब्दों में उल्लिखित है। यथा— वायु का त्रिवृत्त्व—शतपथ ८/४/१/९ में लिखा है—

वायुर्वा आशुस्त्रिवृत्। स एषु त्रिषु लोकेषु वर्तते।

अर्थात् वायु की शीघ्रगामी त्रिवृत् है, वह इन तीनों लोकों में रहता है।

अग्नि का त्रिवृत्त्व— तैत्तिरीय ब्राह्मण १/५/१०/४ में कहा है— **अग्निर्वै त्रिवृत।** अर्थात् अग्नि निश्चय से त्रिवृत् है। ऋग्वेद १/१४०/२ अभि द्विज्मा त्रिवृत् मन्त्र में भी अग्नि को त्रिवृत् कहा है। ऋग्वेद १०/८८/१० में तो अग्नि का त्रिवृत्त्व अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में दर्शाया है। मन्त्र है— **तमू अकृण्वन त्रेधा भुवेकम्।** यास्क ने इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखा है—

तमकुर्वस्त्रेधाभावाय। पृथिव्यामन्तरिक्षे दिवीति शाकपूणिः। निरु० ८/२८॥

अर्थात् उस (अग्नि) को क्रिया तीन प्रकार से होने के लिए, पृथिवी में अन्तरिक्ष में, और द्युलोक में। यह शाकपूणि आचार्य का मत है।

बृहद्देवता १/६५ में आचार्य शौनक का कथन है—

अग्निभूतं स्थितं त्रिधा। अर्थात् अग्नि नाम का भूत तत्त्व ठहरा तीन प्रकार से।

शतपथ में त्रिवृत् अग्नि के विशिष्ट नाम—शतपथ में तीनों लोकों में विद्यमान अग्नि के विशिष्ट नामों का उल्लेख किया है। यथा—

स एतास्तिस्रस्तनूरेषु लोकेषु विन्यधत्त। यदस्य पवमानं रूपमासीत् तदस्यां पृथिव्यां न्यधत्ताथ यत्पावकं तदन्तरिक्षेऽथ यच्छुचिस्तद्दिवि। तद्वा ऋषयः प्रति बुबुधिरे। श० २/२/१/१४।

अर्थात् पृथिवी में पवमान रूप से, अन्तरिक्ष में पावक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूप से और द्युलोक में शुचि रूप से अग्नि को स्थापित किया गया है।

वेदस्थ पवमान आदि पदों का अर्थ— शतपथ के उपर्युक्त प्रमाण से स्पष्ट है कि वेद में जहां पवमान, पावक और शुचि नाम से अग्नियों का वर्णन है वह आधिदैविक प्रक्रिया में क्रमशः पार्थिव, आप्य (वैद्युत) और सौर अग्नि का ही है। इसलिए वेद के वैज्ञानिक अर्थ में इनका यही अर्थ करना चाहिए। शतपथ के उक्त वचन की विस्तृत व्याख्या वायु पुराण ५३/५-१७, मत्स्यपुराण १२७/५-९, ब्रह्माण्ड पुराण पूर्वभाग २४/६ में मिलती है। इस विषय के विस्तार के लिए श्री पं० भगवद्दत्त जी कृत 'वेदविद्या निदर्शन' ग्रंथ पृष्ठ ६२-६८ तक देखना चाहिए।

अग्नि का चतुर्विधत्व— प्रशस्तपाद भाष्य में अग्नि की चतुर्विधत्व दर्शाया है। उसका विभाजन प्रकार अन्य प्रकार का है।

देवों के त्रिवृत्त्व के कतिपय उदाहरण— अब हम देवों के त्रिवृत्त्व के स्पष्टीकरण के लिए कतिपय उदाहरण देते हैं। यथा—

१. वैश्वानर अग्नि— वेद के शतस+ मन्त्रों में वैश्वानर संज्ञक अग्नि देव का वर्णन मिलता है। वेद की वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार वैश्वानर उस अग्नि का नाम है जिसमें ताप (उष्णता) तो हो, परन्तु ज्वाला न हो। जैमिनीय ब्राह्मण में इस परिभाषा का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है—

अथ ह वा अग्निर्वैश्वानर इत्थमेवास, यथेमे अङ्गाराः। —जै० ब्रा० ३/१६५॥

अर्थात्, निश्चय ही अग्नि वैश्वानर इसी प्रकार का था जैसे अङ्गारे। अङ्गारों में ताप होता है परन्तु उनमें ज्वाला नहीं होती, यह सर्वलोकविदित है।

आधिदैविक जगत् में वैश्वानर— यही वैश्वानर अग्नि आध्यात्म में द्युलोक में सूर्य रूप से विद्यमान है, अन्तरिक्ष में विद्युत् रूप से और पृथिवी में भूगर्भस्थ ताप रूप में।

अध्यात्म में वैश्वानर— यही वैश्वानर अग्नि अध्यात्म में द्युलोक स्थानीय शिरोमणि (मस्तिष्क) में जीव रूप में अन्तरिक्ष रूप मध्यम में जठराग्नि के रूप में और पृथिवीस्थानीय अधोभाग=नाभि से नीचे वीर्यरूप में निहित है।

इन्हीं आधिदैविक तथा आध्यात्मिक तीनों अग्नियों का प्रतिनिधित्व यज्ञ में आहवनीय, दक्षिण और गार्हपत्य नाम की अग्नियां करती हैं। आचार्य शौनक ने इस तथ्य का उल्लेख इस प्रकार किया है—

त्रिस्थानं चैनमर्चन्ति होत्रायां वृक्तबर्हिषि। बृहद्देवता १/६५॥ अर्थात् इसी त्रिस्थान (पृथिवी-अन्तरिक्ष-सूर्य में स्थित) अग्नि की यज्ञ में अर्चना करते हैं।

२. जातवेदस् अग्नि— जातवेदस् उस अग्नि को कहते हैं, जो उत्पन्न होते ही सबको जाने, देखे अथवा प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ में विद्यमान हो।

आधिदैविक जातवेदाः— आधिदैविक जातवेदाः अग्नि का त्रिवृत्त्व (तीनों लोकों में रहना) निरुक्त ७/२१ में स्पष्ट दर्शाया है। वहां द्यु, अन्तिरिक्ष और पृथिवी स्थानीय जातवेदाः अग्नि के लिए मन्त्र भी उद्धृत किए हैं।

आध्यात्मिक जातवेदाः— यही जातवेदाः अग्नि शरीर के शिरोभाग में जीवन रूप में है। इसके शरीर में प्रकट होते ही अन्य देव (इन्द्रियां) ज्ञान से युक्त हो जाती हैं, उसके शरीर से पृथक् होते ही इन्द्रियां अपने कर्म में असमर्थ हो जाती हैं। यही जातवेदाः मध्यभाग में जठराग्नि के रूप में है। यह मनुष्यादि प्राणियों तथा वृक्ष, लता, गुल्मादि सभी पदार्थों में व्याप्त है। इसके बिना रस आदि का परिपाक असम्भव है। नाभि से नीचे अधोभाग में वीर्यरूप से स्थित है। इस तत्त्व के बिना किसी भी प्राणी की स्थिति सम्भव नहीं। अथर्ववेद ४/३४/२ में वीर्य के लिए जातवेदाः का प्रयोग उपलब्ध होता है। उक्त मन्त्र में कहा है—

नैषा शिश्नं प्रदहति जातवेदाः।

अर्थात् नहीं उसकी उपस्थेन्द्रिय को जाता है जातवेदाः (अग्नि)।

३. इन्द्र— विभिन्न रूपों में विद्यमान अग्नि ही परमैश्वर्य रूप महान् गुण से युक्त होने के कारण इन्द्र भी कहाता है।

आधिदैविक इन्द्र— यह परमैश्वर्यवान् इन्द्र, भी द्यु,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्तरिक्ष और पृथिवी इन तीनों लोकों में विविध रूप से विद्यमान है। यथा—

द्युस्थानी—ऋग्वेद में द्युस्थानी सूर्य को इन्द्र कहा है—

युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश॥ ६/४७/१८॥

अर्थात्— युक्त हैं (जुड़े हुए हैं) निश्य से इस (=इन्द्र) क हरि सौ (गुणित) दश (=१०००)।

इस मन्त्र में इन्द्र पद वाच्य सूर्य है और १०० ×१० हरि उसकी सहस्रविध रश्मियां हैं। जैमिनी उपनिषद् ब्राह्मण १/४४/५ में इस मन्त्रांश को उद्धृत करके लिखा है—

युक्ता ह्यस्य हरयः शता दशेति सहस्रं वैत आदित्यरश्मयः। तेऽस्य युक्तास्तैरिदं सर्वं हरति। तद्यदेतैरिदं सर्वं हरति तस्माद्धरयः।

अर्थात्, 'युक्त है निश्चय से इसके हरि शत गुणित दश' यह सहस्र निश्चय से ये आदित्य की रश्मियां हैं। वे इसकी युक्त हैं, उनसे इस सबको हरण करता है। जो इनसे इस सबको हरण करता है इस कारण हरि है।

ऋग्वेद में निर्दिष्ट सूर्य की सहस्रविध रश्मियों का वर्णन वायु पुराण ५३/१८-२७ मत्स्य पुराण १२७/१७-२८ तक विस्तार से किया गया है। द्रष्टव्य और गवेषणीय है।

अन्तरिक्षस्थानी— नैरुक्त सम्प्रदाय में इन्द्र अन्तरिक्षस्थानी प्रसिद्ध है। वेद में भी इसका बहुधा उल्लेख है।

पृथिवीस्थानी— ऋग्वेद में पृथिवी को चलायमान करने वाले अर्थात् पृथिवी पर जलाशय और समुद्रों में पृथिवी का प्रादुर्भाव करने में समर्थ प्रलयंकारी भूकम्पों को उत्पन्न करने वाले भूगर्भस्थ अग्नि के लिए इन्द्र शब्द का प्रयोग मिलता है। यथा— **हन्ताहं पृथिवीमिमां निदधानीह वह वा। १०/११९/९॥**

अर्थात्, हन्त (विचारार्थ) मैं इस पृथिवी को रखूं यहां अथवा वहां? इस मन्त्र का गायत्री छन्द होने से इस मन्त्र में निर्दिष्ट इन्द्र निश्चय ही पार्थिव अग्नि रूप है।

अध्यात्म में इन्द्र— वह इन्द्रदेव द्युस्थानीय शिरोभाग में जीवरूप से विद्यमान है। पाणिनि ने अपने **इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टम्०** (अ० ५/२/९३) सूत्र में इन्द्र पद जीव के लिए ही प्रयुक्त किया है। मध्यस्थानीय जठराग्नि भी अपने आहार पाचन तथा रसादि की निष्पत्ति रूप अद्भुत कर्म के कारण इन्द्र कहाता है। अधोभाग स्थित वीर्य भी शरीरोत्पत्ति तथा उसके पालनरूपी महान् कार्य के कारण इन्द्र पदवाच्य है। इसीलिए यज्ञ में अध्यात्म से वीर्यस्थानीय गार्हपत्याग्नि के उपस्थान कर्म के लिए इन्द्र देवतावाली ऋचा का विधान ब्राह्मण ग्रंथों में किया गया है।

(क्रमशः)

"जन-ज्ञान" प्रसार अभियान में योगदान ऋषि भक्तों-हिन्दुत्वनिष्ठों से आह्वान

- ❑ 'जनज्ञान मासिक' मात्र एक पत्रिका ही नहीं अपितु आन्दोलन है।
- ❑ राष्ट्रद्रोही तत्वों के षड़यन्त्रों का भण्डाफोड़ और राष्ट्रभक्तों को सुस्पष्ट समर्थन ही हमारी नीति है।
- ❑ देव दयानन्द की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हमारा संकल्प है।
- ❑ "सत्य के अर्थ" का प्रकाश हमारा व्रत है।
- ❑ वैदिक संस्कृति और हिन्दुत्व की मानव-कल्याणकारिणी विचारधारा के हम प्रसारक हैं।
- ❑ राष्ट्र की एकता और अखण्डता तथा सुरक्षा के लिए जन-जागरण ही हमारा कार्यक्रम है।
- ❑ "जनज्ञान" व्यवसायिक नहीं एक वैचारिक मासिक पत्रिका है। वार्षिक शुल्क ७० रुपये है। आजीवन ५०१ रु० है।
- ❑ **अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर हमारा सहयोग करें।**

आपका सहयोग ही जनज्ञान का सम्बल है। हमारा आप सब कृपालु पाठकों से आह्वान है कि राष्ट्रनिर्माण के इस अनुष्ठान को गतिमान रखने के लिए अपने सहयोग का हाथ और बढ़ायें। जनज्ञान को घर-घर में पहुँचाकर वैदिक संस्कृति और हिदुत्वनिष्ठा का प्रकाश फैलाएं।

अपने नगर में जनज्ञान की एजेन्सी स्थापित करें। नियम पत्र मंगायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राम जगो संताप मिटाओ

❑ लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"

संकल्पों के बने खण्डहर, संस्कृतियों के राज महल में।
सूरज के घर घिरी अमावस, रश्मि-रथी तम के दल-दल में।
कालजयी धमकाये जाते, मर-पिपीलिका की फौजों से।
नील कण्ठ कतराते दिखते, उठी हलाहल की मौजों में।

स्वर्गादपि गरीयसी धरती पर होता अभाव का नर्तन।
देवों की क्रीड़ा का आंगन बना दैत्यों का सुख-साधन।
मंत्रों गुंजित अन्तरिक्ष में फैला कलयुग का कोलाहल।
श्वास-श्वास अवरुद्ध घुटन से, मांग रही मानवता सम्बल।

आह-कराह विवशताओं से डसी हुई जीवन की तानें।
चेहरों पर उदासियां उभरीं राहें भूल रही मुस्कानें।
एक अनिश्चित भाग दौड़ के बीच, फंसा मानव का जीवन।
अपना खोया सुख तलाशते, भरे-भरे दृग हैं सूनापन।

चहल-पहल की चकाचौंध में, हम अपनी क्षमतायें भूले।
उसी डाल को काट रहे हैं, जिस पर डाल रहे हैं झूले।
युद्धों के बादल ऋषियों की कुटियों पर गड़गड़ा रहे हैं।
अस्थिदान की इस बेला में, युग दधीचि थरथरा रहे हैं।

कल्पवृक्ष का देश, क्षुधा की महाज्वाल में, धधक रहा है।
कामधेनु के घर में कान्हा, दुग्ध बूंद को सिसक रहा है।
तमसा तट से चीत्कार का कोई छन्द नहीं जगता है।
शान्ति वधिक की निर्ममता को कोई शाप नहीं डसता है।

यज्ञ कुण्ड जागो, आहुति लो चरम पतन की महानाश की।
मंगल मधु वर्षो पर्जन्यों धारायें बरसो प्रकाश की।
सम्बलहीन आस्थाओं को अपने गौरव की ममता दो।
अमृतघट धारे संस्कृति को, क्रान्ति जगाने की क्षमता दो।

विश्वासों को अभय दान दो, प्राणों में जी उठे ऋचायें।
आता सतयुग लौट न जाये, लेकर चन्दन की समिधायें।
जाग्रत नई चेतना हो फिर राम जगो सन्ताप मिटाओ।
ध्वन्स नाश की आग शान्त हो, उठो शिवम् का चाप बढ़ाओ।

हे भारत के राम

महिमण्डल की असुर शक्तियां,
का तुमने ही नाश किया था।
रावण जैसे सभी राक्षसों
का भी सहज विनाश किया था।
तोड़ दिया था तुमने राघव,
पूर्ण मनोबल दुष्टों का।
किया निवारण था आगे बढ़,
जन-जन के सब कष्टों का।
ऐसा राज्य चलाया तुमने,
हुए निरत क्षुति यथ पर लोग।
वर्णाश्रम की बनी व्यवस्था,
नहीं किसी को भय या रोग।
वेदों के पथगामी सब थे,
करते रहे परस्पर प्रेम।
फल-फूलों से लदी वनस्पति,
थी बिखरा था योगक्षेम।
मर्यादा पुरुषोत्तम तुम थे,
मर्यादा की थी स्थापित।
दिया उन्हें वरदान तुम्हीं ने,
जो थे अब तक अभिशापित।
वैदिक धर्म समुत्प्रेरक थे,
जग को वेदालोक दिखाया।
स्वयं चले वेदों के पथ पर,
वेदों पर संसार चलाया।
साक्षात थे मूर्ति धर्म की,
सत्य धर्म के तुम थे रक्षक।
दीन बन्धु बन, दलित जनों का,
तुमने दिला दिया समुचित हक।
हे जनरक्षक! हे युग मानव!
धीर-वीर-गम्भीर ललाम।
अपराजेय, जयी, मानव तुम।
अमर पुत्र भारत के राम!!

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति,
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीपावली पर विशेष

विश्व का महाज्योति पर्व

❑ पं० बदरी नारायण शर्मा

दीपावली का महापर्व न केवल भारत का प्राचीन पर्व है अपितु हमारे पड़ोसी देश नेपाल, ब्रह्मा, श्रीलंका, सुमात्रा, जावा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, जापान और चीन आदि भी इसे किसी न किसी रूप में अथवा विभिन्न तिथियों पर मनाते हैं। अधिक खोज करें तो यूरोप, मिश्र, सीरिया, मेसोपोटोमिया (इराक) आदि देशों में भी दीपावली मनाये जाने के अनेक सन्दर्भ प्राप्त होते हैं।

दीपावली परम्परा

भारतवर्ष में दीपावली का आरम्भ कब से हुआ? पौराणिक दृष्टि से इसका सम्बन्ध नरकासुर वध से है। ऐतिहासिक दृष्टि से भगवान राम चौदह वर्ष के पश्चात वनवास से लौटते हैं तब यह मनाया जाता है। अनुश्रुतियों में दीपावली का सम्बन्ध भगवान विष्णु और लक्ष्मी से है। संस्कृत साहित्य में दीपावली का उल्लेख नागानन्द नाटक में दीप प्रतिप्रदा के दिन कन्या या जामाता को नये वस्त्र देने की प्रथा है। जैन हरिवंश क अनुसार भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या (दीपावली) के दिन निर्वाण प्राप्त किया था। सिख बन्धुओं के लिये भी यह पर्व बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज के ही दिन सातवें गुरु हरगोविन्द राय अपने ५२ साथियों के साथ ग्वालियर के किले की कैद से मुक्त होकर अमृतसर पधारे थे। अतः स्वर्ण मन्दिर में भव्य प्रकाश का आयोजन कर दीपावली मनायी गई थी। आर्य समाज के प्रर्वतक स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं महान् समाज सुधारक स्वामी रामतीर्थ ने भी आज ही के दिन प्राणोत्सर्ग किया था। पुरातन शास्त्र के ठोस वैज्ञानिक आधार से देखा जाये तो कई हजारों वर्ष पूर्व यह पर्व प्रचलित था। सिन्धु सभ्यता के अवशेषों से जो हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो (अब पाकिस्तान में) की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। मिट्टी की ऐसी अगणित मूर्तियां प्राप्त हुई हैं जिनके सिरों के दोनों ओर कानों के स्थान पर दो-दो दीपक बने हुए हैं। निश्चय ही इन दीपों को प्रत्येक घर में जलाया जाता होगा। इससे प्रतीत होता है कि इस सभ्यता में भी इस प्रथा का अत्यधिक प्रचलन था।

नेपाल

पड़ोसी नेपाल में यह पर्व पांच दिन तक बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रथम दिन कौवों को चावल खिलाया जाता है, दूसरे दिन कुत्तों को, तीसरे दिन गाय तथा लक्ष्मी की पूजा, चौथे दिन गाय-बैलों की खूब सजावट और पांचवें दिन बहिनें भैया दूज के रूप में मनाती हैं।

श्रीलंका

श्रीलंका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक बौद्ध देशों में विभिन्न प्रकार से दीपावली मनाने की प्रथा प्रचलित है। श्रीलंका में इसे 'पेरहारा" याने दत्त-पर्व के रूप में मनाते हैं। इस दिन हाथियों का एक विशाल जुलूस निकाला जाता है जिन्हें रंग-बिरंगी रोशनी वाले लैम्पों से सजाया जाता है।

सुमात्रा जावा

सुमात्रा तथा जावा में यह पर्व तीन दिन से लेकर तीन सप्ताह तक सभी बाल, वृद्ध, युवा, नर-नारी रंग-बिरंगे वस्त्राभूषण धारण कर उमंग के साथ दीपोत्सव मनाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने से बड़ों एवं गुरुजनों के घर जाकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। जावा का प्रमुख नगर जोग जकार्ता है जो रामायण का प्रमुख केन्द्र है। कठपुतलियों के माध्यम से रामायण के विभिन्न प्रसंगों का प्रदर्शन कर दर्शकों का ज्ञानवर्धक मनोरंजन किया जाता है। रामायण यहां का स्थायी महाकाव्य है। रामायण परम्परा इतनी महत्त्वपूर्ण और गौरवशाली मानी जाती है कि जोग जकार्ता के सुल्तान के ज्येष्ठ पुत्र को यह अधिकार है कि वह रामायण में राम की भूमिका खेले। हमारे यहां की भांति रात आठ बजे से ग्यारह बजे तक विराट रामलीला तथा महाभारत के आयोजन होते रहते हैं। यहां का आचार, विचार, व्यवसाय एंवं सामाजिक रीति-रिवाजों में भारतीय सभ्यता, संस्कृति की छाप स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है।

मलेशिया-इण्डोनेशिया

मलेशिया तथा इण्डोनेशिया मुस्लिम बहुसंख्यक देश होते हुए भी राम जनजीवन के उत्सवों, उल्लासों में विशेषकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दृश्यमान अथवा अभिनय कला में प्रतिष्ठित है। सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पूर्ण अक्टूबर मास तक चलते रहते हैं। डाक्टर सुकर्णो (इण्डोनेशिया के स्वर्गीय राष्ट्रपति) के पिता महाभारत के प्रकाण्ड पंडित थे जो महाभारत में कर्ण का अभिनय किया करते थे। अभिनय के कारण ही उन्होंने अपने पुत्र का नाम सुकर्ण रखा था। मुस्लिम देश होते हुए भी इण्डोनेशिया ने रामायण को राष्ट्रीय स्तर प्रदान किया है। रामायण की चेतना इतनी प्रबुद्ध हो गई है कि यहां का प्रत्येक नागरिकस्वतः को रामायण अथवा महाभारत का एक पात्र समझता है।

जापान

जापान में सितम्बर के आरम्भ से ही यह पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है। जापानियों का विश्वास है कि दीपोत्सव मनाने से देश समृद्ध होकर वर्षाजनित रोगों का दमन होता है। पितृ आत्माओं को शान्ति प्राप्त होती है। प्रत्येक नगर या ग्रामवासी ऊंचे-ऊंचे बांस गाड़कर कागज के आकाशदीप लटका कर उनमें दीपक या मोमबत्ती जलाते हैं। दूसरे दिन नये वस्त्र धारण कर अपने इष्ट-मित्रों व बन्धु-बान्धवों से मिलते हैं। तीसरे दिन छोटे-छोटे दल बनाकर सरोवर, तालाब या नदी किनारे जाते हैं, वहां नावों में बैठकर जल विहार करते हैं और उन्हीं नावों में सामूहिक भोजन करते हैं। सायंकाल घर लौटते समय हाथों में जलती हुई मशालें लाते हैं जिन्हें अपने घर के प्रवेश द्वार पर गाड़ देते हैं। रात केसमय न तो घरों में झाड़ू लगाते हैं और न ही तीन दिनों तक रात के समय घर का द्वार बन्द करते हैं।

चीन

चीन का सबसे बड़ा पर्व होने के कारण इन दिनों लम्बी छुट्टियां रहती हैं। कारखाने, दुकानें तथा मकानों की खूब सफाई के साथ-साथ रंग बिरंगे कागज के फूलों की सजावट की जाती है। प्रत्येक अपने द्वार के बाहर द्वारपाल (जय-विजय) के रूप में मानव आकृतियां (कागज की काटकर) लगाता है। उनका विश्वास है कि इससे हमारा घर वर्ष भर सुरक्षित रहेगा। किसी भी प्रकार की भूत-प्रेत या पिशाच बाधा नहीं होगी। यहां के आदिवासी सफेद रोशनी को शोक सूचक मानते हैं। दीपावली के त्रिदिवसीय समारोह का आयोजन कर अपने ईष्ट देवता तथा मृतक पितरों का आह्वान करते हैं। व्यापारी वर्ग पुराना हिसाब चुकता कर नये वर्ष के शुभारंभ में नया खाता खोलते हैं।

अनेक यूरोपीय देशों में भी इस पर्व के मनाये जाने के विविध लिखित प्रमाण प्राप्त हैं। अंग्रेजी साहित्य के महान् कवि होमर ने अपने महाकाव्य इलियम इण्ड ओडसी में कई स्थलों पर 'फेस्टीवल ऑफ लेम्पस' की चर्चा की है। लैम्पों से उनका अभिप्राय टार्चों या मशालों से रहा होगा, जो मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों या अन्य पूजा स्थलों पर इस पर्व के अवसर पर जलाई जाती होंगी। ब्रिटिश म्यूजियम में ऐसे अनेक सदियों पुराने लैम्प्स (चिराग) आज भी सुरक्षित हैं।

मिश्र

मिश्र में लचनों के नाम से इस देश में एक त्यौहार मनाया जाता है। इस अवसर पर विशेष प्रकार की बनी मशालों में तेल डालकर इन्हें सम्पूर्ण रात्रि जलाते हैं। इस प्रकार मिस्र वालों का यह खुशियों तथा सम्पन्नता का त्यौहार माना जाता है।

मेसोपोटामिया (ईराक) में प्राचीन खण्डहरों की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से विशेष धातु की बनी लैम्पों तथा मशालों से यह सिद्ध होता है कि प्रगतिशील युग के निवासी त्यौहार के शुभ अवसरों पर बड़ी संख्या में इन लैम्पों तथा मशालों का प्रयोग किया करते थे। यहूदी लोगों का भी दीपावली जैसा ही खुशियों का ज्योति महापर्व होता है जिसे वे 'हनाकू फीस्ट ऑफडैडीसन' अर्थात् 'समर्पण का भोज' कहते हैं। जो वास्तव में दीपावली का ही एक स्वरूप होता है।

विश्व के किसी भी भाग में जायें, दीपावली महापर्व किसी न किसी रूप में अवश्य देखने को मिलेगा। इसे मनाने की विधि उपलक्ष्य तिथि एवं समय भिन्न हो सकते हैं, परन्तु बुनियादी स्वरूप दीपावली जैसा ही प्रतीत होगा। क्योंकि दीपावली एक महाज्योति पर्व, प्रकाश पुंज त्यौहार सुख-शान्ति, समृद्धि, सम्पन्नता तथा ऋतु परिवर्तन का महापर्व है। एकता स्थापित करने वाले तत्त्वों में दीपावली एक तत्त्व है। दीपावली मनाये जाने केकारण भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न हो सकते हैं, परन्तु यह सनातन सत्य है कि सभी मानव इसे मनाते अवश्य हैं। बन्धु-बान्धवों में हार्दिक शुभकामनायें प्रकट की जाती है। मिश्रित रूप से दीपावली सामाजिक, धार्मिक एवं व्यावसायात्मक त्यौहार है। सामाजिक क्षेत्र में अभिनन्दन तथा प्रसन्नता का, धार्मिक क्षेत्र में सुख-शान्ति तथा समृद्धिकी पूजा का और व्यावसायिक जीवन में सत्य सदाचार का मार्ग अनुसरण करने की प्रतिज्ञा का महार्व है।

शुभम् करोति कल्याणम्, आरोग्यम् धन सम्पदा।
शत्रु-बुद्धि विनाशाय-दीप ज्योति नमस्तुते॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यावर्त्त के प्राण-श्रीराम

❑ राजेन्द्र पाल गुप्ता

श्रीराम के समर्पित जीवन की चमत्कारपूर्ण सफलता का मूल्यांकन सर्वथा असम्भव सा है। श्रीराम ने जिस अभिशाप से इस धरा को मुक्त किया उसकी झलक वाल्मीकि रामायण के इन उद्धरणों से मिलती है जो उस समय के हैं जब श्रीराम पन्द्रह वर्ष के थे और मुनि विश्वामित्र उन्हें महाराजा दशरथ से अपने यज्ञ की रक्षा के लिये मांगने आए थे। जब राजा दशरथ श्रीराम को न भेज कर स्वयं जाना चाहते थे तो उन्होंने विघ्नकारी राक्षसों के बारे में जानना चाहा। विश्वामित्र जी ने बतलाया—

महाराज! रावण नाम से प्रसिद्ध एक राक्षस है जो महर्षि पुलस्त्य के कुल में उत्पन्न हुआ है। बलशाली और महापराक्रमी होकर बहुसंख्यक राक्षसों से घिरा हुआ निशाचर तीनों लोकों के निवासियों को अत्यन्त कष्ट दे रहा है। सुना जाता है कि राक्षसराज रावण विश्रवा मुनि का औरस पुत्र तथा साक्षात कुबेर का भाई है। वह महाबली निशाचर इच्छा रहते हुए भी स्वयं आकर यज्ञ में विघ्न नहीं डालता (अपने लिये इसे तुच्छ कार्य समझता है) इसलिये उसी की प्रेरणा से दो महान् बलवान राक्षस मारीच और सुबाहु यज्ञों में विघ्न डाला करते हैं। आगे बढ़ने से पहले 'सुविज्ञ' बुद्धिजीवियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट कर लें कि रावण वंशावली के आधार पर अनार्य नहीं था। महर्षि पुलस्त्य के कुल को, रावण के पिता विश्रवा मुनि को, उसके भाई कुबेर को कोई भी अनार्य नहीं कहेगा। इस प्रकार राम रावण का युद्ध अनुशासन पर आधारित क्रूर विद्रोह के बीच युद्ध था, आर्यों और अनार्यों के बीच, नस्ली जातीय युद्ध नहीं था।

महाराजा दशरथ ने उत्तर दिया "मुनिवर मैं उस दुरात्मा रावण के सामने युद्ध में नहीं ठहर सकता। धर्मज्ञ महर्षि आप मेरे पुत्र तथा मन्दभागी दशरथ पर भी कृपा कीजिए, क्योंकि आप मेरे देवता तथा गुरु हैं। युद्ध में रावण का वेग तो देवता, दानव, गन्धर्व, यक्ष, गरुड़ और नाग भी नहीं सह सकते फिर मनुष्यों की क्या बात है? मुनिश्रेष्ठ! रावण युद्ध में बलवानों के बल का अपहरण कर लेता है, अतः मैं अपनी सेना और पुत्रों के साथ रहकर भी उससे तथा उसके सैनिकों से युद्ध करने में असमर्थ हूं।"

इस क्रूर आतंकवादी रावण का आतंक सिद्धाश्रम में कहर ढा रहा था जिसकी रक्षा का उत्तरदायित्व महाराज दशरथ पर था। उस काल के अन्य विद्वान, ऋषि और तपस्वी भी रावण से परेशान थे। यज्ञ के अवसर पर सभी आर्य पद्धति से सोचने वालों को एक स्थान पर विचार विनिमय का भी सुअवसर मिला था।

यज्ञ की प्रक्रिया के अतिरिक्त एक और विषय उनकी चर्चाओं पर भारी पड़ रहा था। उस यज्ञ से सबकी आशा ऐसी सन्तान से थी जो इस धरा को आततायी रावण के अत्याचार और क्रूरता से मुक्त कर सके। सोलह-सत्रह वर्ष पश्चात् महर्षि विश्वामित्र श्रीराम की मांग को लेकर उपस्थित हुए थे। उस राम को जो महर्षि वशिष्ठ से वेद-वेदांग की शिक्षा ले रहे थे और आयु के उस मोड़ पर थे जहां शस्त्र-अस्त्र की शिक्षा का आरम्भ भी होना था। महर्षि विश्वामित्र पूर्व काल में शूरवीर राजा थे और इस समय ब्रह्म विद्या और शस्त्र विद्या दोनों में पारंगत थे। वे महर्षि वशिष्ठ की ब्रह्म विद्या और क्षत्रियोचित शस्त्र विद्या दोनों की शिक्षा दे सकते थे। परिणाम रावण द्वारा पोषित आतंकवाद के प्रबल प्रतिनिधि मारीच सुबाहु और ताड़का का वध हुआ जो छत्तीस-सैंतीस वर्ष के पश्चात स्वयं रावण को काल का ग्रास बनाने वाला पहला प्रहार था। इस कालखंड की पुष्टि सीता जी द्वारा अपने अपहरण से पूर्व संन्यासी का कपट वेश बनाये हुए रावण को स्वयं का परिचय देने से होती है।

सीता जी के अनुसार विवाह के समय श्री राम की आयु पच्चीस वर्ष और उनकी स्वयं की आयु अठारह वर्ष थी। विवाह के बाद बारह वर्ष वे अयोध्या में रहे। वनवास की घटना विवाह के तेरहवें वर्ष की है। तात्पर्य यह है कि राजा दशरथ से श्रीराम को दूसरी बार लाने के लिये आर्यावर्त्त के हितैषियों को और बारह वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी और राजा को अपने प्रिय पुत्र को युवराज देखने की अभिलाषा अपने साथ ही ले जानी पड़ी।

यदि कैकेयी की ऐतिहासिक भूमिका न होती तो श्री राम पिता की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये अयोध्या के राजा बन जाते और रावण के आतंकवाद को न जाने कितनी पीढ़ियों के लिये जीवन प्रदान कर जाते। बाद की घटनाओं से यह स्पष्ट है कि अयोध्या से सैनिक अभियान द्वारा लंका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर अधिकार नहीं किया जा सकता था। दण्डकारण्य राक्षसों से भरा हुआ था। वहां राक्षस आक्रामक मुद्रा में थे और ऋषि प्रतिरक्षात्मक उपायों में लगातार पिछड़ रहे थे। मारीच सुबाहु और ताड़का वाली बात बारह-तेरह वर्ष पुरानी पड़ चुकी थी। जनस्थान खर और दूषण के कब्जे में था। किष्किन्धा का राजा बाली आतंकवादी रावण के साथ सुविधान की सन्धि किये हुए था। इन सभी क्षेत्रों को नक्शे पर देखे बिना उस लम्बी आतंक की परछाई की कल्पना भी नहीं की जा सकती जो अयोध्या के राज्य पर भयानक रूप से मंडरा रही थी। इस तार राम का वियोग राजा को इतना भारी पड़ा कि वह अपने प्राणों की रक्षा भी न कर सके।

दण्डकारण्य पहुंचते ही श्रीराम का ऐतिहासिक कार्य आरम्भ हुआ। वहां रहने वाले मुनियों ने उन्हें कुछ कंकाल दिखाए और कहा : "स्वामी! जो राजा प्रजा से उसकी आय का छठा भाग कर के रूप में ले ले और पुत्र की भांति प्रजा की रक्षा न करे उसे महान् अधर्म का भागी होना पड़ता है। आईये, देखिये ये भयंकर राक्षसों द्वारा बारम्बार अनेक प्रकार से मारे गए बहुसंख्यक पवित्रात्मा मुनियों के शरीर दिखाई देते हैं। पम्पा सरोवर और उसके निकट बहने वाली तुङभद्रा नदी के तट पर जिनका निवास है जो मन्दाकिनी के किनारे रहते हैं तथा जिन्होंने चित्रकूट पर्वत के किनारे अपना निवास स्थान बना लिया है, उन सभी ऋषियों महर्षियों का राक्षसों द्वारा महान संहार किया जा रहा है।"

श्रीराम दण्डकारण्य इसलिये भेजे गए थे कि वे राजा को अधर्म का भागी होने से बचाएं और रावण का समूल नाश करें। श्रीराम ने राक्षसों के वध की प्रतिज्ञा की। उस प्रतिज्ञा का अनुपालन करते हुए धीरे-धीरे दण्डकारण्य को राक्षस विहीन सा कर दिया और पंचवटी पर अपना निवास ही नहीं अपितु दुर्ग बना कर जनस्थान के खर, दूषण, त्रिशिरा आदि राक्षसों की छावनी के अत्यन्त निकट चुनौतीपूर्वक स्थिर हो गए। शूर्पणखा प्रकरण खर दूषण के नाश तथा सीता हरण का कारण बना। अब तक श्रीराम दण्डकारण्य और जनस्थान को मुक्त कर चुके थे। अब लंका को ढहाना बाकी था परन्तु उससे भी पहले वाली की समस्या थी। उन्होंने सुग्रीव से मित्रता करके वाली का नाश किया। कुछ लोगों का विचार है कि श्रीराम के लिये यह उचित नहीं था कि वह सीधे वाली से बात कर सकते थे।

वाली वध के पश्चात् आतंकवाद लंका में ही मुंह छिपाए अपने अन्त की प्रतीक्षा कर रहा था। विभीषण सदा रावण के क्रियाकलाप के विरुद्ध था उसने मेघनाद को यह कहा "महर्षियों का भयंकर वध, सम्पूर्ण देवताओं के साथ विरोध, अभिमान, रोष, वैर और धर्म के प्रतिकूल चलना ये सभी दोष मेरे भाई में मौजूद हैं, जो उसके प्राण और ऐश्वर्य दोनों का नाश करने वाले हैं। जैसे बादल पर्वतों को आच्छादित कर देते हैं उसी प्रकार इन दोषों ने मेरे भाई के सारे गुणों को ढक दिया है।"

पन्द्रह वर्ष की आयु से लेकर इक्यावन वर्ष की आयु तक श्रीराम ने जीवन का एक-एक पल रावण रूपी अधर्म और आतंक के निराकरण में व्यतीत किया तथा आहत और मृतप्रायः आर्यावर्त्त को पुनः प्राण प्रतिष्ठित किया।

ज्ञान प्रदीप जलाना होगा

जागो स्वयं जगाओ जग को, ज्ञान प्रदीप जलाना होगा,
गिरे हुये जो हैं खाई में, मिलके उन्हें उठाना होगा।
घनीभूत पीड़ा छाई है,
फैल रहा अज्ञान अंधेरा।
वृत्ति आसुरी दूर करें मिल,
अगल बगल में खड़ा लुटेरा।
द्वार-द्वार पर दुर्दिन घूमे, शान्ति धरा पे लाना होगा,
जागो स्वयं जगाओ जग को, ज्ञान प्रदीप जलाना होगा।
जातिवाद अलगाव वाद है,
आतंकवाद करारा है।
दानवता अट्टहास कर रही,
सत्य धर्म अब हारा है।
निर्भय वेद ऋचायें गाओ, आर्य समाज बनाना होगा,
जागो स्वयं जगाओ जगको, ज्ञान प्रदीप जलाना होगा।
वीरो यह कर्त्तव्य तुम्हारा,
देश जाति की रक्षा करना।
त्याग और बलिदान सिखाकर,
सबके हित में अच्छा करना।
उपकारों के दीपक बनके, सबको गले लगाना होगा,
जागो स्वयं जगाओ जग को, ज्ञान प्रदीप जलाना होगा।

राधेश्याम श्रीवास्तव 'सुमन'
इंटरमीडिएट कालेज पौरी, पो०-पौरी,
सुलतानपुर (उ० प्र०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामराज्य के बाद

❑ डॉ० सत्य नारायण सिन्हा

श्री रामचन्द्र अपने काल के चक्रवर्ती राजा थे। उनका साम्राज्य समृद्धिशाली होने के साथ-साथ बहुत विस्तृत था। उस काल के अपने देश का प्रामाणिक इतिहास हमें वाल्मीकि रामायण में मिल जाता है। पर विशेषज्ञों का अनुमान है कि वाल्मीकि ने रामायण केछः कांड ही लिखे थे। रामायण की फलश्रुति हमें युद्ध कांड के आखिर में ही मिल जाती है। उसके सातवें— उत्तरकांड की रचना बाद में हुई है। पर फिर भी वह बहुत नया नहीं है। उसी में हमें रामचन्द्र के बाद का भी कुछ वृतान्त मिलता है जिसकी पुष्टि महाभारत तथा दूसरे आधार ग्रंथों से भी हो जाती है।

महाभारत में इसी का उल्लेख है— 'रामचन्द्र ने अपने और भाइयों के अंशरूप दो-दो पुत्रों के द्वारा आठ प्रकार से राजवंश की स्थापना कर परधाम गमन किया। इन आठ राज्यों का विशेष वर्णन भी उपलब्ध है।

रामचन्द्र का पुत्र कुश सब भाइयों में ज्येष्ठ था। राम के आदेश से वह कुशावती में अभिषिक्त हुआ। उत्तरकांड रामायण के अनुसार यह नगरी विन्ध्य पर्वतरोध पर थी। यही उस समय के कोशल की नई राजधानी निर्मित हुई। पर कुश कुछ काल ही कुशावती में निवास कर अयोध्या को ही : अपनी राजधानी बनाया। 'वीरान' पड़ जाने के का अयोध्या में जो क्षति हो गई थी शिल्पियों ने उसे ठीक कर दिया। कुशावती नगरी ब्राह्मणों को दे दी गई।

कुश के काल तक आर्यों का पूर्व दिशा की ओर का अभियान समाप्त नहीं हो पाया था। उस काल में भी हमें उस ओर 'इन्द्र और दैत्यों' (आर्यों तथा आर्येतर) के बीच युद्ध चलते रहने के वृत्तांत मिलते हैं। ऐसे ही एक युद्ध में इन्द्र की सहायता करता हुआ (आर्य पक्ष) कुश रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुआ।

कुश के छोटे भाई लव को कोशल का उत्तरी भाग मिला था जिसकी राजधानी श्रावस्ती कर दी गई थी। इस श्रावस्ती नगरी ने आगे चल कर हमारे देश के इतिहास में काफी ख्याति प्राप्त कर ली थी। बुद्ध के समय प्रसेनजित वहां का राजा था। बौद्ध साहित्य में उसका तथा उसकी राजधानी श्रावस्त का बहुधा उल्लेख मिलता है।

उत्तरकांड में ही एक स्थान पर पुरोहित गार्ग्य राम से कहते हैं— 'सिन्धु के दोनों ओर यह गन्धर्व देश परम शोभायमान है, इसे आप विजय करें। वर्तमान पेशावर से लेकर डेरागाजीखां तक का प्रदेश उस समय गंधर्व देश कहलाता था। आगे चल कर उस प्रदेश का विस्तार भी हुआ था। गार्ग्य की राय सर्वसम्मति से ग्राह्य कर लिये जाने पर भरत पुत्रों तक्ष और पुष्कल ने अपने पिता के साथ केकय देश के लिए प्रस्थान किया। फिर वहां से चल कर उन लोगों ने गांधार देश जीता। तब वहीं तक्ष के नाम से तक्षशिला और पुष्कल के नाम से पुष्कलावत नगर बसाये गए। भारतीय इतिहास में इन दोनों नगरों की बड़ी प्रसिद्धि रही है। तक्षशिला बड़े नाके पर बसाई गई थी, वह पंजाब से कश्मीर तक तथा कपिश देश के रास्ते पर अपना कब्जा रखती थी। आगे चल कर यह विद्या, व्यापार तथा राजनैतिक दृष्टि से बड़े महत्त्व का केन्द्र बना। पुष्कलावत आधुनिक काबुल और स्वात नदी के संगम पर बसाई गई थी। कपिश देश तथा स्वात की उत्तरी दून के रास्ते वहीं होकर जाते थे।

उत्तरकांड के ही अनुसार रामराज्य के आरम्भ की एक बड़ी घटना लवण-वध है। यह लवण यमुना के पश्चिम एक यादव राज्य का शासक था। वह यमुना तीर वासी ऋषियों को बहुत त्रसित किया करता था। उन्हीं की प्रार्थना पर राम की आज्ञा से लवण वध किया गया था। उन दिनों लवण के प्रदेश में सम्राट मधु के नाम से मधुवन नाम का बहुत बड़ा जंगल था। शत्रुघ्न ने वही जंगल साफ कर मथुरा नगरी बसाई। शत्रुघ्न के छोटे पुत्र शूरसेन के नाम से इस नगरी के चारों ओर का प्रदेश शूरसेन कहलाने लगा। शूरसेन के बड़े भाई—सुबाहु को विदिशा का राज्य मिला।

लक्ष्मण के दोनों लड़के— अंगद और चन्द्रकेतु को भी हिमालय की तराई के प्रदेश मिले थे।

रामचन्द्र के साम्राज्य के इस वृत्तांत से भी पता चलता है कि उसका विस्तार पूर्वी भारत से लेकर पश्चिम में काबुल और स्वात नदियों तक तथा दक्षिण में विंध्य से लेकर हिमालय के प्रदेशों तक था। इन प्रदेशों के रंचमंच पर रामायण काल में आर्यावर्त्ती इतिहास का बहुत सुन्दर चित्र आंका जा चुका था। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरे जीवन में ऋषि दयानन्द का प्रथम सत्संग

❑ स्वामी श्रद्धानन्द

१४ श्रावण संवत् १९३६ के दिन स्वामी दयानन्द बांसबरेली पधारे। ९ भाद्रपद को चले गए। स्वामी जी महाराज के पहुंचते ही कोतवाल साहब को हुकुम मिला कि पंडित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों के अन्दर फिसाद को रोकने का बन्दोबस्त कर दे। पिताजी स्वयं सभा में गये और स्वामी जी महाराज के व्याख्यानों से ऐसे प्रभावित हुए कि उनके सत्संग से मुझ नास्तिक की संशय निवृत्ति का उन्हें विश्वास हो गया। रात को घर आते ही मुझे कहा— "बेटा मुन्शीराम! एक दण्डी संन्यासी आए हैं, बड़े विद्वान् और योगीराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना।" उत्तर में कह तो दिया कि चलूंगा परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा। दूसरे दिन बेगम बाग की कोठी में पिताजी के साथ पहुंचा जहां व्याख्यान हो रहा था। उस दिव्य आदित्य मूर्ति को देख श्रद्धा उत्पन्न हुई, परन्तु जब पादरी टी० जे० स्काट और तीन अन्य यूरोपियनों को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढ़ी। अभी दस मिनट वक्तृता नहीं सुनी थी कि मन में विचार किया— "यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल संस्कृतज्ञ होते हुए ऐसी युक्तियुक्त बातें करता है कि विद्वान् दंग हो जायं।" व्याख्यान परमात्मा के निज नांम ओ३म् पर था। वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि आत्मा का ही काम था।

उसी दिन दण्डी स्वामी से निवेदन किया गया कि टाउन हाल मिल गया है इसलिए कल से व्याख्यान वहां शुरू होंगे। स्वामी जी ने उच्च स्वर से कहा दिया कि सवारी समय पर पहुंच जाया करेगी तो वह तैयार मिलेंगे।

टाउन हाल में जब तक "नमस्ते", "पोप" "पुराणी, जैनी, किरानी, कुरानी," इत्यादि परिभाषाओं का अर्थ बतलाते रहे तब तकतो पिताजी श्रद्धा से सुनते रहे, परन्तु जब मूर्ति पूजा और ईश्वरावतार का खंडन होने लगा तो जहां एक ओर मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी वहां पिताजी ने तो आना बन्द कर दिया और एक अपने मातहत थानेदार की ड्यूटी लगा दी। २४ अगस्त की शाम तक मेरा समय विभाग यह रहा कि दिन का भोजन करके दोपहर को ही बेगम बाग की कोठी पहुंच ड्योढ़ी पर बैठ जाता। २ और ४ बजे के बीच में जब ऋषि का दरबार लगता तो आज्ञा होते ही जो पहला मनुष्य आचार्य ऋषि को प्रणाम करता वह मैं था। प्रश्नोत्तर होते रहते और मैं उनका आनन्द लेता रहता। व्याख्यान के बाद २० मिनट तक सब दरबारी बिदा हो जाते और आचार्य चलने की तैयारी कर लेते। मैं अपनी बेगनट पर सीधा टाउन हाल पहुंचता। व्याख्यान का आनन्द उठाकर उस समय तक घर न लौटता जब तक कि आचार्य दयानन्द की बग्घी उनके डेरे की ओर न चल देती। २५, २६, २७ अगस्त को ऋषि दयानन्द के पारी स्काट के साथ तीन शास्त्रार्थ हुए। विषय प्रथम दिवस पुनर्जन्म द्वितीय दिन ईश्वरावतार और तीसरे दिन यह था कि मनुष्य के पाप बिना फल भुगते क्षमा किये जाते हैं या नहीं। पहले दो दिन लेखकों में मैं भी था। परन्तु दूसरी रात को मुझे सन्निपातज्वर हो गया। ३० श्रावण से ९ भाद्रपद (१५ से २५ अगस्त) तक ऋषि जीवन सम्बन्धी अनेक घटनाएं मैंने देखीं जिनमें से उन्हीं कुछ एक को यहां लिखूंगा जिनका प्रभाव मुझ पर ऐसा पड़ा कि अब तक मेरी आंखों के सामने घूम रही हैं।

मुझे आचार्य दयानन्द के सेवकों से मालूम हुआ कि वह नित्य प्रातः शौच से निवृत्त होकर, केवल कौपीन, पहिरे लट्ठ हाथ में लिये, ३॥ बजे बाहर निकल जाते हैं और ६ बजे लौटकर आते हैं। मैंने निश्चय किया कि उनका पीछा करके देखना चाहिए कि बाहर वह क्या करते हैं। दबदबा-ए कैसरी अखबार के एडिटर भी मेरे साथ हो लिये। ठीक ३॥ बजे बाहर निकल कर आचार्य चल दिये हम पीछे हो लिये। पाव मील धीरे-धीरे चलकर वह इस तेजी से चले कि मुझसा शीघ्रगामी जवान भी उन्हें निगाह में न रख सका। आगे तीन मार्ग फटते थे। हमें कुछ पता न लगा कि किधर गये। दूसरे प्रातःकाल हम अढ़ाई बजे से ही घात में उस जगह छिपकर जा बैठे जहां से तीन मार्ग फटते थे। उस विशाल रुद्र मूर्ति को आते देखकर हम भागने को तैयार हो गये। वह तेज चलते थे और मैं पीछे भाग रहा था। मेरे पीछे बनिये एडिटर भी लुढ़कते पुढ़कते आ रहे थे। बीच में एक आध मील दौड़ भी रुद्र स्वामी ने लगाई। परन्तु वहां मैदान था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने भी उनको आंख से ओझल न होने दिया अन्त को पाव मील धीरे-धीरे चलकर एक पीपल के वृक्ष तले बैठ गये। घड़ी से मिलाया तो पूरे डेढ़ घंटे आसन जमाये समाधि में स्थित रहे। प्राणायाम करते नहीं प्रतीत हुए, आसन जमाते ही समाधि लग गयी। उठकर दो अंगड़ाइयां लीं और टहलते हुए अपने तत्कालीन आश्रम की ओर चल दिए।

उस शाम के व्याख्यान को कौन सुनने वाला भूल सकता है? मैंने बड़े-बड़े वाग्विशारदों के व्याख्यान सुने हैं परन्तु जो तेज आचार्य के उस दिन के सीधे-साधे शब्दों से निकल कर सारी सभा को उत्तेजित कर गया उसके साथ किसकी उपमा दूं। उस दिन आत्मा के स्वरूप पर व्याख्यान था। पूर्व दिवस के सब अंग्रेज पादरी स्काट के अतिरिक्त उपस्थित थे। व्याख्यान में सत्य के बल का विषय आया। सत्य की व्याख्या करते हुये आचार्य ने कहा— "लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो कलक्टर क्रोधित होगा, अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हों, हम तो सत्य ही कहेंगे।" इसके पीछे एक श्लोक पढ़ कर आत्मा की स्तुति की। न शस्त्र उसे काट सके, न आग उसे जला सके, न पानी उसे गला सके और न हवा उसे सुखा सके। वह नित्य अमर है। फिर गरजते शब्दों में बोले— यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नाश कर दे।" फिर चारों ओर तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर सिंहनाद करते हुए कहा— किन्तु वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखाओ जो मेरी आत्मा का नाश करने का दावा करे। जब तक ऐसा वीर इस संसार में दिखाई नहीं देता तब तक मैं यह सोचने के लिये तैयार नहीं कि मैं सत्य को दबाऊंगा वा नहीं।' सारे हाल में सन्नाटा छा गया। रुमाल का गिरना भी सुनायी देता था।

व्याख्यान में कुछ देर हो गई थी। उठते ही ऋषि दयानन्द ने पूछा— भक्त स्काट आज दिखाई नहीं दिये। पादरी साहब किसी व्याख्यान से भी अनुपस्थित न होते थे और अलग भी प्रेम वार्तालाप किया करते थे इसलिये ऋषि को उनसे बड़ा प्रेम हो गया था। किसी ने कहा पास के गिरजे चेपल में आज उनका व्याख्यान था। सीढ़ियों के नीचे उतरते ही ऋषि ने कहा— चलो, भक्त स्काट का गिरजा देख आवें। अभी तीन चार सौ आदमी खड़े थे। वह सारी भीड़ चीरकर गिरजा पहुंचे। वहां व्याख्यान समाप्त हो चुका था श्रोता सौ के लगभग थे। पादरी साहब नीचे उतर आये, स्वामी जी को वेदी पुलपिट पर ले गये और कहा कि कुछ उपदेश दीजिए। आचार्य ने खड़े-खड़े ही बीस मिनट तक मनुष्य पूजा का खंडन किया।

एक अन्तिम घटना के साथ इस अपूर्व सत्संग की कथा समाप्त करता हूं। यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था तथापि मैं मन में सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पंडित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कना शक्ति का सामना करने वाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डाले। पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गई। मैंने कहा— "महाराज! आपकी तर्कना बड़ी तीक्ष्ण हैं आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है।" दूसरी बार फिर तैयारी करके गया, परन्तु परिणाम पूर्ववत ही निकला। तीसरी बार फिर पूरी तैयारी करके गया, परन्तु मेरे तर्क को फिर पछाड़ मिली। मैंने फिर अन्तिम उत्तर वही दिया— "महाराज! आपकी तर्कना शक्ति बड़ी प्रबल है, आप ने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।" महाराज पहले हंसे, फिर गम्भीर स्वर से कहा "देखो, तुमने प्रश्न किए, मैंने उत्तर दिए— यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।" अब स्मरण आता है कि नीचे लिखा उपनिषद्वाक्य उन्होंने पढ़ा था— **'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुंस्वाम्।'**

आर्य समाज अशोक विहार फेज-१, दिल्ली का रजत जयन्ती उत्सव सम्पन्न

दिल्ली। ७ से १३ जुलाई तक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर एवं भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त आर्य थे। इस समारोह में डॉ० सरोज दीक्षा (अध्यक्षा समाज कल्याण बोर्ड) श्री रामविलास खुराना (प्रधान, उत्तर दिल्ली वेद प्रचार मंडल) ने भाग लिया। डॉ० हर्षवर्धन (शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्री दिल्ली राज्य) एवं श्री लाल बिहारी तिवारी जी (सांसद) की शुभकामनायें प्राप्त हुई। समापन दिवस पर "चरित्र निर्माण" गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा, डी० ए० वी० संगठन के कर्णधार एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने की। श्री चोपड़ा जी ने चरित्र निर्माण हेतु युवाओं को आगे आने के लिए आह्वान किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द मानवता का संगीत

❑ पं० चमूपति एम. ए.

महान् पुरुष किसी उच्च विचार का साकार रूप होते हैं। महाराष्ट्र के लोग समर्थ गुरु रामदास को जिस भावना से पूजते हैं वह भावना छत्रपति शिवाजी से नहीं जोड़ी जा सकती। एक भक्ति का मूर्तरूप है तो दूसरा स्वाभिमान का। समर्थ रामदास को हम भक्ति का संगीत कह सकते हैं तो छत्रपति शिवाजी को वीरता का उद्घोष।

महात्मा ईसा दुःखों के निवारण में अग्रणी है, वह रोतों को हंसाता है, गिरतों को उठाता है और बिन मौत मरने वालों को बचाता है।

बुद्ध वैराग्य की प्रतिमा है। पत्नी पर अन्तिम दृष्टि डालता है। जिगर के टुकड़े ने इसी रात ही तो उजाला देखा है। परन्तु भ्रम के इस उजाले पर यदि मोहित हो तो बुद्ध कौन बने?

राम पितृभक्ति की स्वयं आप उपमा है। कर्त्तव्य के मार्ग में तपस्या है। दुःखियों की सहायता है, अत्याचारियों पर वज्र है।

कृष्ण नीति है, बुद्धिमत्ता है, व्यवहार कुशलता है और है सफलता का सूत्र। इस प्रकार जिस महापुरुष पर दृष्टि डालें वह गुणी नहीं साक्षात् गुण है। पौराणिक उन्हें निराकार का अवतार कहते हैं। हम उन्हें निराकार सद्गुणों की साकार मूर्ति।

भक्ति प्रकाश में आना चाहती थी तो समर्थ रामदास बनी। वीरता को रूप रंग की इच्छा हुई— उसे शिवा का रूप मिल गया। मसीहाई का प्रकाश ईसा में हुआ। वैराग्य को बुद्ध का रूप मिला। न्याय का आधार राम बना। नीति का रूप श्रीकृष्ण।

दयानन्द किस विचार का चमत्कार था— कौन-सा सद्गुण स्पन्दित हुआ कि उसे दयानन्द के हृदय में जगह मिली। हां, दयानन्द किस विशेषता का प्रतिरूप था, किस महत्ता का उत्तराधिकारी और किस उच्चता का द्योतक?

दयानन्द केवल भक्ति नहीं, केवल वीरता नहीं, स्वतन्त्र मान नहीं, पूजा-पाठ नहीं, न्यायप्रियता और विद्वत्ता नहीं, दयानन्द ये सब कुछ है। किसी को बुरा न लगे तो दयानन्द मानवता है। दयानन्द की बात को इसलिए न मानो कि यह दयानन्द का वचन है; अपितु इसलिए मानो कि तुम्हारी बुद्धि के अनुकूल है। अशुद्ध तथा अपवित्र बुद्धि के नहीं अपितु स्वच्छ और पैनी बुद्धि के अनुकूल। दयानन्द को इस बात का भय नहीं है कि कोई उससे बढ़ जायेगा। सयाने पिता की तरह उसे इस बात की प्रसन्नता है कि उसकी सन्तान उससे अधिक योग्य बन जाये।

मनुष्य की उन्नति की कोई सीमा नहीं है? उन्नति आध्यात्मिक हो या शारीरिक, असीम है। पूर्ण तो केवल परमेश्वर है। उससे नीचे कोई जो जहां जिस स्थान पर है, उसके लिए उन्नति का मार्ग खुला है।

परमात्मा और आत्मा

नास्तिकों ने परमात्मा की सत्ता मिटाना चाही। कहा कि हम हैं, परन्तु वो नहीं है। इधर वेदान्त का विषय ही परमात्मा की सत्ता था। परमात्मा न हो तो वेदांत ही न रहे, उन्हें नास्तिकों की बात खटकी। नास्तिकों के विरोध में उन्होंने घोषणा की कि वह (ईश्वर) तो है परन्तु हम नहीं हैं। आत्मा की सत्ता एक भ्रम है। भ्रम मिट जाना स्वयं भ्रम का ब्रह्म बनना है। दोनों में प्रतियोगिता हुई और जीते भ्रम वाले, परन्तु विजयी होकर भ्रम और पक्का हो गया मिटा नहीं, न मिटा तो परमात्मा भी न हुआ, परिणाम ये निकला कि हम भी भ्रम हो गये और ब्रह्म भी भ्रम रह गया। दयानन्दी मानवता ने ये देखा तो उसका मन्यु जाग उठा, उसने दोनों को ललकारा और कहा कि दोनों का भ्रम मिथ्या है। दोनों की प्रतिज्ञा का स्वीकृति पक्ष सत्य है। मानवता है, इसका प्रमाण तुम्हारी हां और ना दोनों देती है। अपनी सत्ता को स्वीकार करो तो जिसको स्वीकार करो वो मानवता है। अपनी सत्ता से निषेध करो तो जिससे तुम्हें निषेध है वही मानवता है। स्वीकृति भी, अस्वीकृति भी, दोनों मानवता की स्वीकृति है। मानवता पूर्णता नहीं, उसकी सत्ता उसके अपूर्ण होने की स्वीकृति है। मानवता प्रयास है, प्रयास का फल नहीं। मानवता उन्नति का सोपान है, उन्नति की पराकाष्ठा नहीं। सोपान को पराकाष्ठा चाहिए। प्रयास को परिणाम चाहिए। अन्वेषण को लक्ष्य चाहिए। वो पराकाष्ठा, वो परिणाम, वो लक्ष्य परमात्मा है। यह अमूल्य मोती हाथ आयेगा? नहीं! हाथ बढ़ाते जाओ, पग बढ़ाने में खोज का आनन्द है। यात्रा का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आनन्द ध्येय प्राप्ति में नहीं, यात्रा में ही है।

वेद में जीव को क्रतु कहा गया है, अर्थात् कर्मशील, सौ वर्ष से भी अधिक जीने का आदेश है। किन्तु साथ ही कहा है, कर्म करता हुआ जीने की इच्छा कर अर्थात् जो क्षण कर्म के बिना व्यतीत होगा वो जीवन नहीं मृत्यु है।

नास्तिकों के सम्मुख कोई लक्ष्य नहीं था, इस लिए वो ठहर गये। जीव को ब्रह्म मानने वाले स्वयं को ही अपना लक्ष्य समझ बैठे थे। अतः बैठ रहे थे। जीव उन्नति की इच्छा रखता था, क्योंकि उसका स्वभाव प्रगति करना ही है परन्तु उसके पग ठहरे हुए सिपाही का कालचिह्न मार्कटाइम थे। मानवता के संगीत ने स्वयं ब्रह्म होने का भ्रम भी मिटा दिया और ब्रह्म से निषेध का अज्ञान भी दूर किया। मानवता को प्रयास बनाया, चरम सीमा की खोज बनाया, न रुकने वाली प्रगति बनाया, सतत प्रयत्न बनाया।

मानवता के संघ

मानवता के भी संघ थे, मनुष्य बाल की खाल उतार कर भी सन्तुष्ट न हुआ, अतः ख्याल की खाल उतारने लगा। मानवता गुण थी। मनुष्य ने उसके टुकड़े किए, कोई ब्राह्मण हुआ कोई शूद्र, कोई गोरा हुआ कोई काला, छूत-अछूत पवित्र-अपवित्र लाखों समुदाय बन गये। मानवता को पीड़ा हुई कि मुझे काटा जा रहा है, स्वस्थ और पूर्ण देह पर शस्त्र चलाये जाते हैं। एक चीत्कार हुआ अत्याचार न करो, स्वयं अपने ऊपर दया करो। रूप चाहे लाख हों परन्तु मानवता एक है। मनुष्य जब तक मनुष्य है अछूत नहीं हो सकता, उसका परमात्मा से सीधा सम्बन्ध है। वो वेद पढ़ सकता है। परमेश्वर का अमृत पुत्र कहला सकता है। मानवता ब्राह्मण होकर वेद नहीं पढ़ती, वेद पढ़ कर ब्राह्मण बनती है। गोरा वो है जिसका हृदय साफ है, विचार पवित्र हैं, वचन शुद्ध और आचरण पवित्र है। दिल साफ हो रंग काला है तो क्या? खाक का पुतला है मटियाला है तो क्या? राम और कृष्ण दोनों सांवले थे। परन्तु मानवता का रंग गोरा था, अतः गोरा लक्ष्मण और गोरा बलराम उन दोनों की छाया के समान रहे।

स्त्री? पुरुष?

दयानन्द ने विवाह नहीं किया। गृहस्थ न बना। स्त्रियों से दूर रहता था। मगर पुत्र तो एक स्त्री का ही था। स्त्री उसकी मानवता का एक अंग थी। कर्णवास में एक बुढ़िया उसके चरणों में आई और उपदेश चाहा। दयानन्द ने कहा गायत्री का जाप किया कर, बुढ़िया चकित रह गई। स्त्रियां और मन्त्र? मानवता के पुतले की आंखों में आंसू आ गये। कहा बलवानों ने अबला की कोमलता को दुर्बलता में बदल दिया है। लगे हाथ उसे जीवन के अधिकारों से भी वंचित कर दिया है। स्त्री मृदु, सौम्य है, स्वयं परमात्मा भी मृदु है। ज्ञान भी मृदु है। और सौम्य का सौम्य पर अधिकार है। स्त्री संस्कृति की पोषिका है और आज सांस्कृतिक परिवेश में हम उसे बाहिर किये बैठे हैं। मानवता की वृद्धा माता! तू प्राचीन मानवता का अधिकार ले। वाक् और श्रद्धा के समान वेदवाणी पर अधिकार कर और उसके माधुर्य की (सरिता) संसार में नहा। किसी देवी ने समाधि में माथा टेका तो प्रायश्चित किया। दो दिन भूखे रहे। छोटी बच्ची को माथा झुकाकर प्रणाम किया। मानवता ने मानवता के स्रोत को पहचाना और उसके महत्त्व के सम्मान से स्वयं को सम्मानित और महत्त्वशाली बनाया।

स्वतंत्रता और अनुशासन

दयानन्द स्वतन्त्रता का देवता है। वो स्वतंत्रता को मानवता का प्रथम अधिकार मानता है। पशु बन्धन से वश में आता है, मनुष्य उन्मुक्त होने से। उसका बन्धन उसकी स्वतंत्रता की भूमिका है। बच्चे को अंगुली से पकड़ते हैं इसलिए कि उठ सके। सिधाना-सिखाना स्वतंत्र मानवता का राजपथ है। उच्छृङ्खल होना स्वतंत्रता नहीं। न ही जंजीरों में बांधना शिक्षा का साधन है। स्वतंत्रता में बन्धन है और बन्धन में स्वतंत्रता है। दयानन्द का परमात्मा अपने नियमों में आबद्ध है। वह किसी उच्छृङ्खल परमात्मा का उपासक नहीं, दुष्टों के लिए नियम बन्धन है परन्तु सज्जनों के लिए नियम स्वतंत्रता है। दयानन्द का परमात्मा अपने नियमों में आबद्ध है। वह किसी उच्छृङ्खल परमात्मा का उपासक नहीं, स्वतंत्र मानवता नियम बनाती है और नियम के अधीन रहती है। उसकी दृष्टि में नियम भंग पतन है। शिक्षित आत्मा स्वभावतः स्वतंत्र है और नियम पालन उसका स्वभाव है।

तपस्या, विश्राम?

लोग नई सभ्यता पर मोहित हैं। दयानन्द ने प्राचीन सभ्यता को पुकारा, आ! वो पर्वतों से निकली और तपस्या बन गई। संसार ने शारीरिक सुखों को सभ्यता समझा था। उसने तपस्या की, पराकाष्ठा प्रस्तुत की और कहा कि वास्तविक सभ्य वनों में रहते हैं। पर्वत जंगलियों के घर नहीं, सभ्य लोगों की कुटिया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी राजाओं का राजा था। उदयपुर के राणा आते हैं तो धरती पर बैठते हैं। क्योंकि गुरु के सम्मुख शिष्य का आसन धरती ही है। परन्तु गुरु की सरलता देखिये। भ्रमण से लौट रहे हैं गाड़ीवान की गाड़ी कीचड़ में धंस गई है, निकाले नहीं निकलती। मेरा कुन्दन जैसा स्वामी कीचड़ में उतरता है और बैलों को खोलकर स्वयं गाड़ी खींचता है। इस सभ्यता के न्यौछावर और इस मानवता के बलिहार। सरवरे कायनात ने तो संसार को सताने में अपना बड़प्पन जाना। मेरे मानव संन्यासी ने कहा नहीं! बड़प्पन रक्षा करने में है। राष्ट्रीय कार्यों में विद्वानों का गुरु, सामाजिक क्षेत्र में समाज का पथ प्रदर्शक, उद्योगधन्धों में उद्योगपतियों का मार्ग-दर्शक, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा के सम्बन्ध में गोखले का भी नेता कौन था? वही मानवता का संगीत है, जिसे दयानन्द कहते हैं।

शरीर? आत्मा?

कोई शरीर को सुखाता था, कोई शरीर को जलाता था। शरीर का घटना आत्मा की उन्नति समझा जाता था। उधर कोई-कोई अपनी इन्द्रियों को ही आत्मा बता रहा था। शारीरिक सुखों को आत्मिक आनन्द का पर्याय बतला रहा था। एक ओर सुख का दर्शन था तो दूसरी ओर दुःख का। पहले को पढ़ा तो प्रसन्न हो गये। दूसरे का अध्ययन किया तो आंसू बहा दिये। मिठास बढ़ते-बढ़ते कड़वी हो गई। दर्द पराकाष्ठा पर पहुंचा तो दवा बन गया। मिठास का इच्छुक मिठास से वंचित रहा और पीड़ा का अभ्यस्त पीड़ा से। शान्ति न यहां थी न वहां थी। मानवता की तार हिली उससे तान निकली। शरीर आत्मा का कवच है। इन्द्रियां शस्त्र है। उनके बिना न शत्रुओं से युद्ध हो सकता है और न व्यक्तित्व की सुरक्षा। शारीरिक कोमलता आत्मा की स्वच्छता नहीं। घटाने का नाम क्यों लेते हो दोनों को बढ़ाओ। भीतर की आंखें बाहर के नेत्रों की अपेक्षा रखती हैं। उपनेत्र लगाना विद्वत्ता का सूचक नहीं। सूखी हड्डियों से तपस्या क्या होगी। मेरे स्वामी ने एक हाथ से बग्घी को रोका और दूसरे से दिल को। पहलवान उसके बलिष्ठ भुजाओं को न झुका सके तो वेश्या उसके मन को न झुका सकी।

व्यष्टि? समष्टि?

लोग संसार से मुख मोड़ते और ईश्वर से नाता जोड़ते हैं जैसे ईश्वर संसार से दूर है। किसी कुटिया में बन्द है, नगर में नहीं रहता। निवृत्ति रखता है, प्रवृत्ति नहीं। स्वामी ने नदी के तट से मन हटाया, पर्वतों की गुहाओं से आसन उठाया कि यहां तरंगें हैं, सर-सर है। मन की एकाग्रता नहीं रहती। अपने मन को कुटी में स्थिर किया, न कोई दूसरा होगा न एकाग्रता मिटेगी। समाधि के आनन्द लिये, आत्मा ने आत्मा को देखा। आनन्द हुआ, शान्ति हुई। परन्तु पूर्णरूपेण परमेश्वर के दर्शन न हुए। नगरों से शोर उठा इधर आओ, खेतों से आवाज आई हमें देखो, यहां परमात्मा है। व्यवसायी के व्यवसाय, कृषक की खेती, राजाओं का राज, सन्तों की मस्ती, किसके कारण से है। आज तक विश्राम करने वाले परमात्मा को देखा है तो काम करने वाले परमात्मा को भी देख, निठल्ले के दर्शन किए हैं तो व्यस्त के भी कर। मौन की समाधि लगाई है तो कोलाहल की समाधि भी लगा। इस कोलाहल में भी एकाग्रता है।

स्वतंत्र? परतन्त्र?

मानव समाज के दस नियम बने, पांच व्यक्तिगत जीवन के लिए और पांच सामाजिक जीवन के लिए। स्वतंत्र और परतंत्र की भी एक पहेली थी जिसे कोई न बुझाता था। एक बुझारत थी जो किसी की समझ न आती थी। यहां घोड़े के बिना गाड़ियां चलती थीं। समुद्र राजमार्ग बन गये थे। लोग हवा में उड़ते थे। आवाजें दौड़ती थीं। अब की बार के पार की वस्तु कंधार के पार न थी। मनुष्य की दृष्टि पर्वतों को चीर गई थी। सब कहते थे मनुष्य स्वतंत्र है। प्रकृति सेविका है मनुष्य स्वामी है। परन्तु फोड़ा निकला और अच्छा न हुआ। घाटा पड़ा और पूरा न हो सका। मृत्यु आई और टाले न टली। जब प्रयासों में असफलता देखी तो झट बोले मनुष्य परतन्त्र है और भाग्य के भरोसे निकम्मे हो बैठे। कभी पुरुषार्थ सूझा तो जानतोड़ परिश्रम किया। इस प्रकार जीवन दो विरोधों का संगम हो गया।

मानवता की पहेली का समाधान मानवता रहती है। और कहा कि कर्म करने में स्वतंत्र और फल भोगने में परतन्त्र। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के कुछ नियम हैं। उसके अधीन हम हैं और अनादि और अनन्त हैं, पुण्य का आदेश भगवान् करते हैं। परन्तु आचरण करने का बोझ हम पर है। कर्म करना जीव का स्वभाव है। पुण्य-पाप का अन्तर परमेश्वर की कृपा से पता लगता है। इसके पश्चात् हमारी पसन्द है हम जिधर हो लें। बुराई भी भगवान् के पल्ले मढ़ना और भलाई भी। यह सर्वशक्तिमान की महिमा को बढ़ाता नहीं। पुण्य और पाप सदा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से थे क्योंकि जीव सदा था। यदि जीव का आरम्भ हो तो परमात्मा उससे पहले होगा तब पाप कहां से आ गया। जीव की स्वतंत्रता अनादिकाल से है जैसे उसकी परतन्त्रता अनादिकाल से है। कर्म वह अपनी इच्छा से करता है। परन्तु फल पाने में उसकी इच्छा नहीं पूछी जाती। वर्तमान जीवन के दुःख जीव के पूर्व जीवन के कर्मों का फल है। जो हमने बोया है उसका फल हमें हर मूल्य पर काटना होगा। अतः वर्तमान जीवन के दुःखों को प्रसन्नता से सहना और भविष्य केलिए शुभ कर्मों की खेती करना ये जीव की परतन्त्रता और स्वतंत्रता दोनों हैं। दोनों में वीरता है और दोनों में मानवता।

आवागमन का दर्शन हमें आलसी नहीं बनाता निराशा नहीं पैदा करता— ये दर्शन हमें साहस और वीरता देता है। भाग्य के आगे हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाना और पुरुषार्थ के पांव में जंजीर डाल देना ये मानवता के संगीत के विरुद्ध है। उसने स्वतंत्रता और परतन्त्रता केस्वर के आरोह-अवरोह को एक किया और राग का सुर मिला दिया।

सरगम

१. दयानन्द परमात्मा न था, ये नीचा सुर था। दयानन्द परमात्मा का प्रतिनिधि था जैसे हम हैं, ये ऊंचा सुर था।

२. दयानन्द पूर्ण न था, ये नीचा सुर था। दयानन्द पूर्णता का प्रयास था, ये ऊंचा सुर था।

३. दयानन्द ने ब्राह्मण को मनुष्य कहा, ये नीचा सुर था। दयानन्द ने शूद्र को ब्राह्मण बनाया, ये ऊंचा सुर था।

४. दयानन्द ने पुरुष को पुरुष कहा, ये नीचा सुर था। दयानन्द ने स्त्री को पुरुष की माता बताया, ये ऊंचा सुर था।

५. दयानन्द ने तपस्या को सभ्यता कहा, ये कठोर सुर था। दयानन्द ने शरीर को आत्मा का कवच कहा, ये कोमल सुर था।

६. दयानन्द व्यक्ति हुआ, ये पतला सुर था। दयानन्द समाज बन गया, ये मोटा सुर था।

७. दयानन्द फल भोगने में परतन्त्र रहा, ये मद्धिम सुर था। दयानन्द कर्म करने में स्वतंत्र था, ये ऊंचा सुर था।

संगीत क्या था पूरी सरगम थी। दयानन्द ने ये संगीत सुना, गाया और स्वयं संगीत बन गया। हम संगीत विद्या में सिद्धहस्त नहीं हैं। इसलिए पूरा ताल नहीं समझे। इस विद्या में जानकार आएं और संगीत को पहिचानें तथा अपनी समझ के अनुसार मानवता के पुतले दयानन्द का गीत गायें।

मन की रावण वृत्ति जलाएं

वृत्ति दानवी फैल रही है,
निर्भय होकर बसुन्धरा पर।
हिंसा का, आतंकवाद का,
छाया है साम्राज्य धरा पर।
ईर्ष्या-द्वेष बढ़ा है जग में,
काम-क्रोध-मद-मत्सर बढ़ता।
मुरझाया है सुमन त्याग का,
स्वार्थ निरन्तर ऊपर चढ़ता।
लज्जा लुटती है नारी की,
बढ़ता है नारी उत्पीड़न।
मुंह बाए दानव दहेज का,
बढ़ता है उत्साह चिरन्तन।
आज राम के बंशज सारे,
देख रहे यह अत्याचार।
कानों पर जूं नहीं रेंगती,
देख भयावह यह व्यभिचार।
देख दशा अब महिलाओं की,
रावण भी मन में शरमाए।
त्रिजटाओं की फौज बढ़ रही,
स्वच्छ चरित्र कहां से लाएं।
दूरदर्शनी संस्कृति ने है,
मानवता का किया सफाया।
बिलख रही है भारतमाता,
घर-घर भौतिकवाद बढ़ाया।
उठो राम के वंशज! वीरो!!
भारत माता रही पुकार।
चलो राम के पुण्य पथों पर,
हरो धरा का हाहाकार।
मर्यादित जीवन बन जाए,
राम सदृश हम करें आचरण।
मानवता फिर बने विजयिनी,
मंगल पथ का करें वरण।
रावण के पुतले के बदले,
मन की रावण वृत्ति जलाएं।
राम राज्य की पावन गरिमा,
पूर्ण धरा पर हम फैलाएं॥

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, उ० प्र०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला

❑ उमा राव

"मैं एक धधकती ज्वाला को देख रहा हूं, अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला जो समस्त द्वेष दावानल को भस्मसात कर देगी। इस धधकती ज्वाला का नाम है आर्य समाज।"
—अमेरिकन योगी एंड्रो जैक्सन डेवी।

विगत शताब्दी में पतनोन्मुख हिन्दू समाज एवं धर्म के उत्थान में आर्य समाज एक अद्वितीय आन्दोलन के रूप में उभरा। यह आन्दोलन हिन्दू समाज की गली सड़ी मान्यताओं के विरुद्ध स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्यक्तिगत विद्रोह से प्रारम्भ हुआ। हिन्दू जीवन पद्धति में सन्निहित कुरीतियों एवं निरर्थक कार्यकलाप को तिरोहित करने के लिये आर्य समाज एक सशक्त माध्यम बना। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदकथित सत्य सनातन व्यवस्थाओं को तथा प्राचीन ऋषियों के शाश्वत सर्व कल्याणकारी सिद्धान्तों को आर्य समाज का आधार बनाया। भारत के महान योगी श्री अरविन्द ने स्वामी दयानन्द को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखा था— "दयानन्द समस्त गिरिशिखरों के मध्य एक ऐसे सर्वोच्च शिखर हैं जो अपनी दिव्यता एवं भव्यता के कारण अपने आप में ज्योर्तिमय है और चहुं ओर प्रकाश विकीर्ण कर रहा है।" वस्तुतः स्वामी दयानन्द सरस्वती के समर्थ व्यक्तित्व ने और सबल कृतित्व ने आर्य समाज को विधायक तथा आक्रामक स्वरूप प्रदान किया, इसमें किंचित भी संदेह नहीं।

दूसरी ओर स्वामी दयानन्द सरस्वती के समक्ष विदेशी धार्मिक मतों के साथ समझौता करने का कोई प्रश्न ही नहीं था। विदेशी धार्मिक मतों से प्रताड़ित हिन्दू समाज को स्वामी दयानन्द सरस्वती के आक्रामक दृष्टिकोण ने बौद्धिक बल प्रदान किया और आत्मिक साहस से भर दिया।

विगत शताब्दी में गतिशील पाश्चात्य विचारधारा ने गतिहीन तथा रुढ़िग्रस्त हिन्दू मानस को एक बार झकझोर कर रख दिया था और हिन्दू समाज केलिये आत्म अस्तित्व की सुरक्षा एवं आत्मीयता की खोज अपरिहार्य हो गई थी। चारों ओर विजय प्रयाण करते हुए पाश्चात्य संस्कृति के मूल्यों की उपेक्षा करना हिन्दू समाज के लिये भयावह सिद्ध होता। इस अनिवार्य मुठभेड़ में पूर्ण समर्पण अथवा प्रबल संघर्ष के अतिरिक्त कोई अन्य पथ लक्षित नहीं हो रहा था। वैसे स्वामी दयानन्द के आने से पूर्व बंगाल में ब्रह्मसमाज तथा बम्बई में प्रार्थना समाज के रूप में विदेशी सांस्कृतिक आक्रमण का सामना करने का काम प्रारम्भ हो गया था। ब्रह्मसमाज तथा प्रार्थनासमाज का नेतृत्व करने वाले लोग पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा से प्रभावित लोग थे और भारत की शाश्वत संस्कृति के मूल से उनका अधूरा परिचय था। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा से पूर्णतया अपरिचित थे। इसके सम्बन्ध में श्री हरविलास शारदा ने स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र में लिखा है— "स्वामी दयानन्द को गढ़ने में विदेशी संस्कृति, पाश्चात्य सभ्यता एवं शिक्षा का किंचित भी हाथ न था। स्वामी दयानन्द सरस्वती को अंग्रेजी भाषा न आती थी और वे योरोपीय संस्कृति तथा विचारों से प्रभावित न थे। यही कारण था कि आर्य समाज देसी रंगरूप में ढला था। इसी कारण से आर्य समाज भारतीय जन-मानस केनिकट आ सका और जनजीवन को प्रभावित कर सका। इसीलिए आर्यसमाज एक विशुद्ध भारतीय आन्दोलन की ख्याति अर्जित कर सका।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म टंकारा में १८२४ में हुआ। बाल्यावस्था में ही शिवरात्रि की घटना ने उन्हें बौद्धिक धरातल पर जाकर एक अभिनव बोध से युक्त कर दिया। प्यारी बहन तथा सम्माननीय चाचा जी की मृत्यु ने उन्हें एक बार आत्मिक तल पर झकझोर दिया। इन घटनाओं ने उन्हें जीवन के परमसत्य की खोज पर आरूढ़ कर दिया और इस तरह स्वामी दयानन्द सरस्वती परम शिव और मुक्ति की खोज में निकल पड़े। यह खोज उन्हें मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द के पास ले गयी। स्वामी विरजानन्द के सम्पर्क में स्वामी दयानन्द ने नई ज्योति पाई। गुरुवर स्वामी विरजानन्द के आदेशानुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रसारार्थ और अज्ञान अंध विश्वास को दूर करने के लिये कृतसंकल्प हो भारत में निकल पड़े।

धार्मिक जगत् में तहलका

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी अगाध विद्वत्ता तथा आकट्य युक्तियों से सत्यसनातन वैदिक धर्म के रूप को प्रतिपादित करना प्रारम्भ कर दिया। दार्शनिक जगत् में अद्वैत वेदान्त के विरुद्ध स्वामी जी ने वेदों के आधार पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

त्रैतवाद परमात्मा, प्रकृति और जीवात्मा— का प्रतिपादन किया। संसार माया नहीं अपितु कर्मक्षेत्र है जहां जीवों को अपने कर्मानुसार फल प्राप्त होते रहते हैं। यह जीव स्वतन्त्र सत्ता है, परमात्मा का अंश नहीं। यह जीव साक्षी नहीं, कर्ता एवं भोक्ता है। जीवात्मा के अच्छे अथवा बुरे कर्मों का भोग अनिवार्य हैं। भाग्यवाद का नाम लेकर कोई पुरुषार्थ के दायित्व से मुक्त नहीं हो सकता। कर्मानुसार जीवात्मा का आवागमन होता रहता है। संसार के समस्त कर्त्तव्य कर्मों को करते हुए परम मुक्ति को उपलब्ध किया जा सकता है। परमात्मा के सत्य सनातन सिद्धान्तों को मानने से, पाप से, सार्वजनिक कल्याण केकार्यों को करने से, न्याय तथा धर्मादि के आचरण से परम मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में मुक्ति भी सावधि है, क्योंकि सान्त कर्मों का अनन्त फल नहीं हो सकता। स्वर्ग-नरक मनुष्य की अपनी ही कृति है। परमात्मा निराकार है और उसी की उपासना करनी चाहिए। परमात्मा अवतार नहीं लेता, मूर्ति पूजन वेद विरुद्ध है—ऐसी सत्य बातों से स्वामी दयानन्द ने भारत के दार्शनिक, धार्मिक जगत् में तहलका मचा दिया।

समाज में नई चेतना

इसके साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू समाज को यह विदित कराने का निश्चय किया कि हिन्दू समाज में प्रचलित बाल विवाह आदि गर्हित प्रथाओं तथा अन्य अनेक कुरीतियों को वेदों में कोई मान्यता प्राप्त नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती को इस बात से अत्यन्त क्षोभ था कि ज्ञान-विज्ञान और सभ्यता संस्कृति की जन्मदात्री भारत भूमि अपनी निजता तथा प्रतिभा से प्रभाहीन हो रही है। जात-पांत केव्यर्थ के ढकोसले ने समाज को संज्ञाहीन बना दिया था। पंडित पुरोहितों के वेदशास्त्र सम्बन्धी अज्ञान एवं विभ्रम के कारण ही यह सब संभव हो पाया था। श्री राजगोपालाचारी के अनुसार, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धार्मिक शास्त्रीय जगत् के झाड़झंखाड़ को निर्ममता से काटकूट कर उसे जीवन जीने के योग्य बनाने का महत् प्रयास किया। स्वामी दयानन्द ने जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को वर्ज्य घोषित किया और स्त्री-पुरुष की समानता का प्रतिपाद किया। स्त्री शिक्षा तथा प्रौढ़ विवाहों का समर्थन किया। विदेश यात्रा से पाप की बात को हास्यापद बताया। अनावश्यक कर्मकाण्डों की आलोचना की। सारे समाज को झकझोर कर जगाने की स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भरपूर चेष्ट की। समस्त भारतवर्ष में धार्मिक जगत् में नई उहापोह को जन्म देकर जीवनहीन समाज में नई चेतना उत्पन्न कर दी। महाभारत के महाविनाशकारी युद्धोपरान्त वेद और वैदिक साहित्य का अध्ययन छूट जाने से पतन की परम्परा पैदा हुई और नाना मतमतान्तरों ने अज्ञान अंधकार को चारों ओर फैला दिया। इस्लामी आक्रमणकारियों के अत्याचार और ईसाइयत के प्रलोभनकारी कार्यकलापों ने हिन्दू राष्ट्र में विभक्त राष्ट्रीयता को जन्म देकर पारस्परिक विद्वेष भावना को बढ़ावा दिया। ऐसी अवस्था में इस्लाम ईसाइयत तथा अपने ही देश में प्रचलित ऊटपटांग मतमतान्तरों की साहसपूर्ण समीक्षा स्वामी दयानन्द सरस्वती के आक्रामक व्यक्तित्व तथा उनकी अटूट राष्ट्रीयता को अभिव्यक्त करती है।

धर्म को विशुद्ध स्वरूप में प्रस्तुत करना, यही स्वामी दयानन्द का उद्देश्य था। इस महत् कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्होंने नये विद्वान ब्राह्मणों की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा— 'वही व्यक्ति ब्राह्मण है जो विद्वान और सच्चरित्र हो।' जन-जन में सर्वाधिक धर्म एवं शिक्षा का प्रसार होना चाहिए।' इसके लिए वेदों के पठन-पाठन का अधिकार सबको प्रदान किया और वेदों की शिक्षाओं केअनुसार आचरण को सार्वजनिक कल्याण के लिये आवश्यक बताया। वेदों से ही सर्वत्र संसार में ज्ञान का प्रकाश हुआ ऐसा स्वामी दयानन्द का दृढ़ अभिमत था जिससे कोई उन्हें डिगा न सकता था।

जन भाषा को अपनाया

१८६३ से १८७५ तक स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रचार करते हुए भारत भ्रमण करते रहे। कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डनी पताका लगाकर और प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ में स्वामी जी ने धर्म के ठेकेदारों से टक्कर लेकर धार्मिक गढ़ को हिलाने का सफल प्रयास किया। १८७२ में स्वामी जी कलकत्ता पहुंचे। वहां वे ब्रह्म समाज के प्रसिद्ध नेताओं के सम्पर्क में आए। ब्रह्म समाज के तत्कालीन नेता श्री केशवचन्द सेन के परामर्श पर स्वामी जी ने हिन्दी भाषा को अपने प्रचार का माध्यम बनाया। प्रारम्भ में स्वामी जी साधारण वार्तालाप तथा भाषणों में संस्कृत भाषा का ही प्रयोग करते थे। संस्कृत भाषा के माध्यम से स्वामी जी केवल विद्वानों तक ही पहुंच सकते थे। परन्तु जन जीवन के जागरण के लिये जनता की भाषा को अपनाना अनिवार्य था। इसलिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी जी ने अधिकाधिक जनता तक पहुंचने के लिये हिन्दी भाषा को अपना लिया।

१८७५ में स्वामी जी ने अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' को प्रकाशित करवाया और इसी वर्ष बम्बई में आर्य समाज की विधिवत् स्थापना की। परन्तु पश्चिम भारत की बजाय विशेषतः उत्तर भारत स्वामी जी के विचारों का संदेशवाहक बना। १८७७ में स्वामी जी लाहौर पहुंचे। लोग उनके भाषणों की ओर आकर्षित हुए। पंजाब विदेशी आक्रमणों से सदैव संत्रस्त रहा और अनेक संस्कृतियों का संगम स्थल बना। पढ़ी-लिखी हिन्दू जनता अपनी अस्मिता के सुरक्षार्थ इधर-उधर ताक रही थी। स्वामी जी के भाषणों से उनके गिरते मनोबल को सहारा मिला और नवशिक्षित एवं क्षत्रिय वर्ग को स्वामी जी के विचारों में जनकल्याण अवरोधक तत्त्वों को नष्ट करने की प्रबल प्रेरणा प्राप्त हुई। इस्लाम और ईसाइयत की बुद्धिवादी समीक्षा से अपने प्राचीन धर्म में जन-जन की आस्था जागृत हो गई और अपनी ज्ञान-विज्ञान की थाती को संजोकर समृद्ध करने की आकांक्षा दृढ़ हुई। वैदिक ऐकेश्वरवाद ने सभी देवताओं से मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत कर दिया।

प्राचीनता और आधुनिकता

शिक्षित वर्ग तो वैसे ही अज्ञान अन्धविश्वासों को विनष्ट कर आधुनिकीकरण के लिये कृतसंकल्प था। धर्म में अन्धविश्वासों को नष्ट करने के प्रयास में शिक्षित वर्ग धर्म के भौतिक एवं सर्वजनोपयोगी तत्त्वों को ही भुला बैठा था और उसकी उपेक्षा कर रहा था। स्वामी जी ने समस्त आवश्यक समाज सुधार वेदों से सिद्ध कर दिये। पठित वर्ग को स्वामी जी के विचारों में प्राचीनता और आधुनिकता का अद्भुत संगम मिला। जो आधुनिकता की ओर बढ़ते हुए भी अपनी पुरातन आस्थाएं खोना नहीं चाहते थे, उनके लिये आर्य समाज वरदान सिद्ध हुआ। पंजाब में आर्य समाज केसर्वजनप्रिय आन्दोलन बनने का यही प्रमुख कारण बना।

लाहौर में ही स्वामी जी ने आर्य समाज के दस नियमों की घोषणा की। स्वामी जी के मरणोपरान्त डी० ए० वी० संस्था तथा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से उत्तर भारत में आर्य समाज का स्वर्ण काल समुपस्थित हो गया। 'वैदिक मैगजीन', 'सद्धर्म प्रचारक' आदि पत्र-पत्रिकाओं ने स्वामी जी के विचारों को प्रचारित करने में भरपूर कार्य किया। उपदेशक विद्यालय भी खोले गये। शुद्धि पर जोर दिया गया। दब्बूपन की वृत्ति जाती रही। उसमें तेजस्विता आ गयी। शिक्षा की समुचित व्यवस्था के कारण हिन्दू समाज प्रत्येक दिशा में उन्नति करने लगा। एन० जी० बेरियर के अनुसार ६७ उप सर्जन जो ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किये गये थे, उनमें ५२ हिन्दू और ९ मुस्लिम थे। प्रथम श्रेणी के ४८ वकीलों में २९ हिन्दू और ४ मुस्लिम थे। ये आंकड़े आर्यसमाज द्वारा प्रेरित शैक्षणिक क्रान्ति का पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

महात्मा हंसराज जी का अनुपम त्याग तथा सेवा भावना और स्वामी श्रद्धानन्द की अपूर्व श्रद्धाभावना ने आर्य समाज को महिमामण्डित कर दिया। इन महापुरुषों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रति नवोन्मेष और गरिमा की भावना को जन-जन में उत्पन्न कर दिया। लाला लाजपतराय जी के अनुसार इन शिक्षण संस्थाओं ने तत्कालीन पीढ़ी में आत्मविश्वास को जागृत कर राष्ट्र प्रेम को प्रज्वलित किया।

नव जीवन का संचार

कोई भी सुधार आन्दोलन सन्निहित स्वार्थों के लिए एक खतरा उपस्थित करता है। सभी स्वार्थ इस प्रकार के आन्दोलन का गला घोंटने के लिये आगे आ जाते हैं। केवल सबल व्यक्तित्व ही समस्त प्रहारों को सहते हुए मार्ग को प्रशस्त कर सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का ऐसा ही इस्पाती व्यक्तित्व था। रोमा रोंला के शब्दों में— स्वामी जी का व्यक्तित्व सूक्ष्म विचारकता एवं कर्मण्यता का अद्भुत संमिश्रण था। वेदों की मौलिक पुन-व्याख्या से स्वामी जी ने गड़ी-सड़ी मान्यताओं और घिसी-पिटी प्रथाओं से भारतीय समाज को मुक्त कर प्रगति पथ पर आरूढ़ कर दिया। मरणासन्न हिन्दू जाति में नवजीवन का संचार किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता एवं एकता का शंख फूंका और संस्कृति एवं धर्म के प्रति गौरव की भावना को जगाया।

आर्य समाज केवल छुटपुट समाज सुधार करने वाली संस्था नहीं। अपितु भारतीय समाज का आमूलचूल परिवर्तन करने वाली जाज्वल्यमान ज्वाला है। आर्य समाज है मानवता का मंगल करने वाली महाज्योति। स्वामी दयानन्द की निम्न उद्घोषणा में हम सबके लिए शाश्वत संदेश सन्निहित है—

"समस्त संसार अज्ञान और अन्धविश्वास की बेड़ियों में जकड़ा पड़ा है। इन बेड़ियों से आबद्ध लोगों को मुक्त करने के लिए मेरा आगमन हुआ है।" ❑

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जननायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

❑ श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा

बन्धुओ, अपना राष्ट्र सदा से ही पर्व प्रिय रहा है। यह आर्य अर्थात् हिन्दू जाति अपने उज्ज्वल, गौरवपूर्ण अतीत को इन पर्वों के माध्यम से स्मरण कर अपनी जीवनप्रद संस्कृति को जीवित रखती रही। जिस राष्ट्र में अपने पूर्वजों के सम्मान को पर्वों से जीवित रखा जाता है और पर्वों को सहर्ष मनाया जाता है वे राष्ट्र तथा जातियां सदा उन्नति करते हैं। अमावस्या की अंधकारपूर्ण रात में चारों ओर अंधकार व्याप्त था। तब कारागार की काल कोठरी में थे वसुदेव और माता देवकी। कारागार में जन्मे थे श्रीकृष्ण। उनका जन्म चुनौती था। उस राज्य सत्ता को जिसका सूत्रधार था वह अत्याचारी कंस जिसने धर्म की मान्यताओं का पूर्ण हनन किया था। राजनीति अपना विकृत रूप धारण कर चुकी थी। पिता पुत्र में राजनीति, भाई-बहन में राजनीति, मामा भांजे में राजनीति और गुरु तथा शिष्य के बीच राजनीति का सिलसिला चल रहा था। राजनीति भी ऐसी राजनीति नहीं थी जो समाज और राष्ट्र को जोड़ने वाला अमोघ तत्त्व है अपितु विघटनकारक राजनीति थी।

ऐसे अन्धकारमय युग में जन्मे श्रीकृष्ण का समग्र जीवन इसी तथ्य का परिचायक है समाज और राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधना ही उनका लक्ष्य था। भारत की उत्तरी और दक्षिणी धुरी को एकता के सूत्र में बांधने वाले श्रीराम, मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में विश्ववंद्य हो गए और अनेक श्रद्धालुजन ने उन्हें भगवान की संज्ञा प्रदान कर अपने अन्तस के श्रद्धा सुमन समर्पित किए तो भारत की पूर्वी और पश्चिमी धुरी को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य योगेश्वर श्रीकृष्ण ने संपन्न किया। श्रीराम ने श्रीलंका तक वैदिक संस्कृति की पावन धारा को प्रवाहित किया। अयोध्या में जन्मे श्रीराम ने लंकाधिपति रावण की निरंकुश सत्ता को चुनौती दी। श्रीराम की वह विजय यात्रा जनसाधारण को संगठन सूत्र में जोड़ कर शुरु हुई थी। राज परिवार में जन्मे श्रीराम स्वयं वनवासी बने तो उन्होंने वानर और रिक्ष (जिसे सामान्य भाषा में रीछ कहा जाता है, के भेष में रहने वाल वन जाति) को संगठित किया। एक ओर सम्पदा और भौतिक वैभव था और दूसरी ओर थी संस्कृति के प्रति समर्पित जनशक्ति। जिसके पीछे धर्म का बल सम्बल था। संघर्ष में विजयी हुई थे भगवान श्रीराम और इतिहास ने इसे अधर्म पर धर्म तथा असत्य पर सत्य का, अन्याय पर न्याय की विजय का घटनाक्रम बताया है। सत्ता से आसक्ति के भाव में भगवान विरक्त थे। वैदिक संस्कृति की मान्यताओं की समाज में पुनःस्थापना हुई थी और वही रामराज्य आज भी भारत के जन-जन के प्राणों का स्पन्दन बना हुआ है।

आज से ५००० वर्ष पूर्व जब भगवान कृष्ण ने अपने आलोक से संसार को आलोकित किया था तब भी समाज अनास्था के अंधकार से जूझ रहा था आज जैसी घृणित राजनीति समाज और राष्ट्र को तोड़ रही थी। उस परिस्थिति को श्रीकृष्ण के जन्म से चुनौती मिली थी असत्य के प्रसारक सत्य का गला घोट रहे थे। ब्रज मंडल का गोरस वहां के बालकों के लिए दुर्लभ तथा सत्ता के सूत्रधारों और उनके चाटूकारों के लिए सुलभ हो रहा था। श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं में उनके माखन झूठा करना और मटकियां फोड़ने जैसी कथाएं जुड़ी हैं। जो गोधन राष्ट्र संवर्धन का मापदण्ड था उसके द्वारा प्रदत्त दूध उसके बालकों के लिए दुर्लभ हो रहा था इसीलिए उन्होंने बाल्यकाल में ही अपने संगठन कौशल का परिचय दिया था। यही संगठन और संघर्षक्रम उनके सारे जीवन का प्रेरक दर्शन है।

लोकनायक या जननायक ही वास्तव में राष्ट्रनायक होता है। श्रीराम और श्रीकृष्ण अपने युग के ऐसे ही नायक थे। श्रीकृष्ण जिस युग में आए उस समय सत्ता के दो प्रमुख केन्द्र थे। एक था हस्तिनापुर और दूसरा था मथुरा। श्रीकृष्ण चाहे मथुरा में रहे या हस्तिनापुर में कहीं भी सत्ता पर आसीन नहीं रहे। लेकिन उस समय विश्व भर के सत्ताधारी उनके इर्दगिर्द मंडराते थे, मानों उनके चतुर्दिक चक्र का वलय हो। श्रीकृष्ण ने अन्य लोगों को सत्ता सौंपी लेकिन स्वयं सत्ता से विरक्त रहे। चाण्क्य भी अपने युग के इसी तरह के राष्ट्रनायक रहे जो पाटलीपुत्र के कुटीर में रहते हुए समूचे मगध साम्राज्य का सूत्र संचालन करते थे। जिनके इशारे पर चन्द्रगुप्त सिंहासन से उतर कर भागता हुआ उनकी पर्ण कुटीर तक नंगे पांव पहुंचता था। जिसके तेवर ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नन्द वंश को इस तरह धराशायी कर दिया था कि उस वंश में आगे चलकर कोई पुनः राजसत्ता में आने के लिए सिर उठाने वाला नहीं रह गया लेकिन वह स्वयं जीवन पर्यन्त सत्ता से दूर रहा। श्रीकृष्ण ऐसे राष्ट्रनायक थे जिनके इशारों पर सभी गोप ग्वाले कंस के विरुद्ध एकजुट हो गए थे। मध्यकाल में गोस्वामी तुलसीदास हालांकि सत्ता से कोसों दूर थे लेकिन उनकी रामचरितमानस आज भी जन-जन का कंठहार बनी हुई है। इसी प्रकार हाल में महात्मा गांधी सत्ता से पूरी तरह दूर थे। उन्होंने एक बार भी कांग्रेस का अध्यक्ष पद नहीं संभाला, यहां तक कि कांग्रेस के चवन्नी वाले सदस्य भी नहीं थे जो कि उस समय सदस्यता शुल्क था। लेकिन अपने जीवनकाल में उन्होंने कांग्रेस, समाज और समूचे राष्ट्र को दिशा दी थी।

श्रीराम सत्ता पर रहते हुए भी सदैव उनसे निर्लिप्त रहे। जैसे अहर्निश जल में रहते हुए भी कमल पत्र उससे लिप्त नहीं होता। श्रीराम की इस परम्परा को श्रीकृष्ण ने और आगे बढ़ाया। श्रीराम तो अपने जीवन में कुछ समय सत्ता पर आसीन रहे लेकिन श्रीकृष्ण सदा सत्ता से दूर रहे। उन्होंने अन्य लोगों को तो सत्ता पर बिठाया लेकिन स्वयं आराधना करते रहे। उनकी विनम्रता इस सीमा तक थी कि राजसूय यज्ञ में जब सभी को काम सौंपा गया तो श्रीकृष्ण ने लोगों की झूठी पत्तलें उठाने का जिमा खुद ले लिया। यह थी उनकी विनम्रता। उनका व्यक्तित्व इतना सम्मोहक था कि मनुष्यों की कौन कहे जब बांसरी बजाते थे तो कहा जाता है गायें भी दौड़कर उनके पास आ जाती थीं, गोपाल के ध्यान में आगे भी पीछे भी दायें भी बाएं भी गौएं ही नजर आती थीं।

जितेन्द्रिय श्रीराम व श्रीकृष्ण के समग्र विचार दर्शन का संक्षेप में एक संदेश है कर्म और धर्म की रक्षा। अपने धर्म अथवा कर्त्तव्य से जीवन भर कभी विमुख न होने से ही श्रीकृष्ण का तो एक विशिष्ट नाम अच्युत भी प्रसिद्ध हो गया था। 'गीता' में श्रीकृष्ण ने जीवन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ज्ञान, कर्म और भक्ति का प्रतिपादन पर बल दिया। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द श्रीराम व श्रीकृष्ण को आदर्श चरित्र सम्पन्न, पूर्ण ज्ञानी आदर्श पुरुष मानते थे।

वी-२८, लाजपतनगर-३, नई दिल्ली

विदेशों में रह रहे अपने परिजनों, अहिन्दी भाषी अंचलों में बसे मित्रजनों

को

दयानन्द के दर्शन और वैदिक चिन्तन से अवगत कराने के लिए विशिष्ट अवसरों पर

निम्नांकित अंग्रेजी साहित्य

उपहार स्वरूप भेंट कीजिए।

१.	लाइफ एण्ड टीचिंग्स ऑफ स्वामी दयानन्द (Life and Teachings of Swami Dayanand)	मूल्य २०० रु०
२.	वैदिक प्रेयर (Vedic Prayer)	मूल्य २० रु०
३.	लाइट ऑफ ट्रूथ (Light of Truth)	मूल्य १०० रु०
४.	रामायण एब्रिज्ड (Ramayan Abridged)	मूल्य ३५ रु०
५.	कन्सेप्ट ऑफ गाड (Concept of God)	मूल्य ५० रु०

अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान

२२८६, आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष : ५७२४७४१, ५८१५४५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपनिषद्, ब्राह्मण और वैदिक अलंकारों पर दयानन्द

❑ वेद प्रकाश गुप्त

वेद की आलंकारिक व प्रतीकात्मक भाषा अपने आप में एक पहेली है। तथा इसमें पाये जाने वाले अलंकार अनेक रहस्यपूर्ण निर्देशों से भरपूर है जो वेद के जिज्ञासु को अनेक प्रलोभनों में डाल देते हैं। इससे वह वेद को खोलने वाले वास्तविक पथ से भटक जाता है। जो विद्वान् वेद की इस अलंकारपूर्ण, निर्देशात्मक भाषा के प्रलोभन से पार हो जाता है वेद उसके लिये अपनी अमूल्य ज्ञान-निधि को खोल देता है। वेद की भाषा को समझने के लिये केवल संस्कृत के ज्ञान से काम नहीं चलता। साधारण मस्तिष्क की तो वहां पहुंच ही नहीं हो सकती। वेद के सनातन ज्ञान को प्राप्त करने के लिये दो बातों की नितान्त आवश्यकता है; (१) संस्कृत भाषा के वैदिक रूप के ज्ञान की तथा (२) समाधि - अवस्था की प्राप्ति की। भाषा व प्रतीकों की कठोर दीवार के पीछे छिपे वैदिक सत्यों को खोलने के लिये बाद के ऋषियों ने इसी प्रणाली का प्रयोग किया। इस महान् प्रयास के दो मुख्य रूप हमारे सामने आये—प्रथम ब्राह्मण ग्रंथ तथा दूसरे उपनिषद् ग्रंथ। यह दोनों ही ग्रंथ वेद के दो मुख्य विषय कर्म व ज्ञान का प्रतिपादन करते हैं।

ब्राह्मण ग्रंथ— ब्राह्मण ग्रंथों में वैदिक कर्मकाण्ड की आध्यात्मिक व लौकिक दोनों ही प्रकार से व्याख्या एवं व्यवस्था की है। ब्राह्मण, वेद (संहिता भाग) के व्याख्यान मात्र हैं। महर्षि दयानन्द इन्हें वेदों में स्वीकार नहीं करते। क्योंकि ब्राह्मण ग्रंथ ऋषियों के द्वारा निर्मित हैं तथा वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। ब्राह्मणों में वैदिक मंत्रों की प्रतीकें धर-धर कर उनकी व्याख्या की गई है जैसे शतपथ ब्राह्मणमें 'इषेत्वोर्जेत्वा' की 'इषेत्वोर्जेत्वेति' यह प्रतीक धर कर व्याख्या की गई है, ऐतरेय ब्राह्मण में ऋग्वेद के मंत्र की 'अभित्वादेव सवितरिति' यह प्रतीक देकर व्याख्या की गई है। परन्तु ब्राह्मण ग्रंथों में ऋषियों ने वैदिक प्रतीकों को एक नये प्रतीकवाद से बताने की चेष्टा की है। यद्यपि यह वेद के अर्थों को खोलने का प्रयास है तथापि बाद केविद्वानों के लिये यह वेदों के रहस्यवाद से भी अधिक कठिन सिद्ध हुआ। इससे पश्चातवर्ती विद्वानों ने ब्राह्मण ग्रंथों के यज्ञों की आध्यात्मिक व्याख्या को तो दृष्टि से ओझल कर दिया और नये प्रतीकवाद से ढके लौकिक अर्थों को ले लिया। इससे ये ग्रंथ केवल यज्ञ-याग सम्बन्धी ग्रंथ समझे जाने लगे, जबकि हम देखने हैं कि इनमें दार्शनिक तत्त्व भी हैं।

उपनिषद् ग्रंथ—उपनिषदों में ऋषियों ने ज्ञानकाण्ड को पकड़ा। उन्होंने वेदों में प्राप्त होने वाले आध्यात्मिक सूत्रों के रहस्यों का समाधि तथा आध्यात्मिक अनुभूतियों द्वारा साक्षात्कार किया। उन्होंने वेद के प्रतीकों की आध्यात्मिक व्याख्या की। उपनिषद् के ऋषियों ने भाषा की अधिक परवाह नहीं की, अतः इनकी भाषा वेद व ब्राह्मणों से अधिक सरल है। इन्होंने भाषा के सामने ज्ञान पर अधिक बल दिया तथा वेद के परम तात्पर्य ब्रह्म को अपना सीधा लक्ष्य बनाया। उपनिषदों में ब्रह्म का व्याख्यान पाया जाता है।

ब्राह्मण और उपनिषद् वेद की संहिताओं के बाद में ऋषियों द्वारा बनाये गये ग्रंथ हैं। ये वेद के भाग नहीं हैं जैसा कि कुछ विद्वान् मानते हैं। महर्षि दयानन्द उपनिषदों को भी वेद का भाग मानते। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि दयानन्द इन्हें प्रमाण न मानते हों। हां, दयानन्द ब्राह्मणों व उपनिषदों को ऋषियों के वचन होने से परतः प्रमाण मानते हैं, वेद के समान स्वतः प्रमाण नहीं।

क्या उपनिषदों में वेद के विरुद्ध क्रान्ति की गई है?— कुछ विद्वानों का विचार है कि उपनिषदों में वेदों के विरुद्ध क्रान्ति की गई है। वेद कर्मकाण्ड प्रधान ग्रंथ हैं तथा उपनिषदें ज्ञान प्रधान हैं। इनके मत में वेद की कर्मकाण्ड व यज्ञात्मक प्रणाली को उपनिषदों में न केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया वरन् उसे व्यर्थ और शरारतभरी भी बताया है। इसके अतिरिक्त उनका यह भी कहना है कि उपनिषदें वेदों को अपरा-विद्या के ग्रंथ बताती हैं तथा परा अर्थात् ब्रह्म विद्या का उनमें अभाव मानती हैं।

स्वामी दयानन्द इन विचारों से बिल्कुल सहमत नहा हैं। वेद, ब्राह्मण व उपनिषदों के मध्य विद्वत्-कल्पित द्वन्द के विषय में महर्षि दयानन्द का अन्य विद्वानों से मुख्य मतभेद यह है कि दयानन्द न तो वेदों को केवल कर्मकाण्ड व यज्ञ की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुस्तक मानते हैं और न उनमें कल्पित केवल यज्ञों द्वारा मुक्ति के सिद्धान्त को ही। यह हम पहिले ही कह आये हैं कि वेदों में कर्म और ज्ञान दोनों विषय उपलब्ध होते हैं तथा बाद में ब्राह्मण ग्रंथों व उपनिषदों ने इनमें से एक-एक को अपना मुख्य विषय बना लिया। ब्राह्मणों ने कर्म विषय का विस्तार किया और उपनिषदों ने ज्ञान का। सायण सरीखे भारतीय तथा सायण का अनुकरण करने वाले पश्चिमी विद्वानों ने वेद और उपनिषदों का जो आपस में विरोध प्रदर्शित किया है वह उनकेवेद के विषय को सही-सही रूप में न समझने के कारण है तथा साथ ही वे औपनिषदिक ऋषियों की वेद के सम्बन्ध में श्रद्धा व आदर से पूरित भावना को भी नहीं समझ पाये।

परन्तु इस पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि जब वेदों में कर्म के साथ-साथ ज्ञान विषय भी है और वेद ज्ञान को कर्मकाण्ड से श्रेष्ठ भी मानते हैं (जैसा किदयानन्द कहते हैं), तब उपनिषदों में यह कहकर कि 'यज्ञों की नाव भारी है'[6] वेदों की निन्दा क्यों की गई है? तथा वेदों को अपरा विद्या के ग्रंथ क्यों गिनाया गया है? इन दोनों प्रश्नों के समाधानार्थ हमारे विचार में उपनिषदों के उन मन्त्रों पर विचार करना अधिक ठीक होगा, जिनके आधार पर यह मिथ्या धारणायें बनी हैं। मुण्डकोपनिषद् १-२-७ में कहा गया है कि 'निश्चयपूर्वक इस प्रकार की यज्ञ रूप नौकायें (जो पार उतरने का साधन की गई हैं) जिनमें बैठे सोलह ऋत्विक, यजमान व यजमान पत्नी सहित अठारह यज्ञ करने वाले अविवेकी पुरुष इनको श्रेय मानकर प्रसन्न होते हैं वे निश्चयपूर्वक जरा और मृत्यु को पुनः पुनः प्राप्त होते हैं।[7] इस मन्त्र में केवल यज्ञों से मुक्ति प्राप्त करने वाले अविवेकी जनों के मत का खण्डन है जिसका वर्णन इस उपनिषद् के वक्ता ऋषि ने पिछले तीन मंत्रों (१-२-४, १-२-५ व १-२-६) में किया है। इस मंत्र में ऋषि ने उस मत की तुच्छता दिखाई है कि केवल यज्ञ करने से मुक्ति की प्राप्ति सम्भव नहीं है। वास्तव में उपनिषद् यज्ञ कर्मों के विरुद्ध नहीं है वरन् अग्निहोत्र मात्र से मुक्ति प्राप्ति की आशा के विरुद्ध है। इसका स्पष्ट प्रमाण हमें मुण्डकोपनिषद् के (१-२-१, १-२-२ व १-२-३) मन्त्रों में मिल जाता है जिनमें ऋषि के पुण्य कर्मों के साधनभूत अग्निहोत्रादि कर्मों का उल्लेख किया है।

अब यदि ऋषि को अग्निहोत्र सर्वथा त्याज्य होता तो वह यहां क्यों इसका वर्णन करता। इसके अतिरिक्त अन्य उपनिषदों में भी अग्निहोत्रादि यज्ञीय कर्मों की उपयोगिता को स्वीकार किया गया है। कठोपनिषद् में नचिकेता ने यम से द्वितीय वर के रूप में वैदिक अग्निहोत्र को मांगा था तथा यम ने नचिकेता के लिये उसका व्याख्यान किया। यदि वैदिक यज्ञ उपनिषदों को बिल्कुल ही मान्य न होते तब यम ने उसको हेय क्यों नहीं बताया। वास्तविकता क्या है, जब हम इस पर विचार करते हैं तब ईषोपनिषद् का मन्त्र हमारी सारी समस्या का समाधान कर देता है। मंत्र कहता है कि 'कर्म करते हुये सौ वर्ष तक जियो परन्तु कर्म इस प्रकार करो कि वह तुम्हें लिप्त करने वाले न हों।'[8] इस मंत्रमें सौ वर्ष तक जीवित रहकर निष्काम भाव से कर्म करने का आदेश है। सकाम भावना से किया गया कर्म सदैव बन्धनकारी होता है फिर चाहे वह वैदिक कर्मकाण्ड ही क्यों न हो। ब्रह्म की प्राप्ति के साधन के रूप में यज्ञों का खण्डन करने से उपनिषदों का तात्पर्य सकाम भावना से प्रेरित होकर किये गये यज्ञों से है। स्वामी दयानन्द उपनिषदों में यज्ञों के इसी निष्काम रूप को मानते हैं। उपनिषद् के एक मन्त्र का अर्थ करते हुये वे कहते हैं कि "जो बहुधा अविद्या में रमण करने वाले बाल-बुद्धि हम कृतार्थ हैं ऐसा मानते हैं जिसको केवल कर्मकाण्डी लोग राग से मोहित होकर नहीं जान और जना सकते, वे आतुर होकर जन्म-मरण रूप दुख में घिरे रहते हैं।[9] अब, यज्ञों के द्वारा मुक्ति प्राप्ति के विषय में, वेद क्या कहते हैं इस पर भी विचार कर लिया जाय। जहां तक सकाम भावना से किये गये कर्म और स्वर्ग की भावना से किये गये यज्ञों का प्रश्न है, वेद इस सम्बन्ध में उपनिषदों से सहमत है। वेद कहता है "जो उस ब्रह्म को नहीं जानता वेद की ऋचा उसका क्या लाभ करेगी?"[10] इस स्थल पर वेद स्पष्ट रूप से कह रहा है कि केवल वेद पढ़ लेने मात्र से मुक्ति नहीं मिल सकती। वेद के अनुसार मुक्ति का एक ही मार्ग है और वह है ब्रह्म की प्राप्ति। ऋग्वेद स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर रहा है कि "ब्रह्म के जानने से ही मृत्यु से छुटकारा प्राप्त हो सकता है, इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग मृत्यु से छूटने का नहीं है।"[11] अर्थात् वेद निर्देश करता है कि मृत्यु से तभी छूटा जा सकता है जब कि सत्य ज्ञान को प्राप्त कर लिया जाये, इससे पूर्व नहीं, फिर चाहे कितने भी यज्ञ क्यों न किये जायें। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि यज्ञों की मान्यता के विषय में वेद और उपनिषदों में कोई मतभेद नहीं है।

इसके उपरान्त अब हम इस दूसरे प्रश्न की कि क्या उपनिषदें वेदों को अपरा विद्या के ग्रंथ मानती है, समीक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुण्डकोपनिषद् १-१-५ 'तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः' दिखायी पड़ने में, चारों वेदों को अपरा विद्या के ग्रंथ बता रहा है। परन्तु किसी ग्रंथ के किसी विषय में वास्तविक अभिप्राय का उसके किसी एकाध वाक्य को देखने मात्र से पता नहीं चल सकता। इसके लिये हमें उस ग्रंथ की मूल भावना को अपने विचार का केन्द्र बनाना चाहिये। इसी उपनिषद् के एक अन्य मन्त्र में चारों वेदों को ब्रह्म की वाणी बताया है।[१] अब जबकि मुण्डकोपनिषद् का ऋषि वेदों को साक्षात् ब्रह्म से उद्भूत मानता हो तब यह समझ में नहीं आता कि वह इन्हीं वेदों को अपरा विद्या के ग्रंथ कैसे कह सकता है। तथ्य यह है कि वेदों में परा और अपरा दोनों ही विद्यायें विद्यमान हैं। परन्तु संसार में साधारण जन प्रेय अर्थात् अपरा विद्या से अधिक सम्बन्ध रखते हैं और फिर वेदों की भाषा भी कुछ ऐसी है, जो ऊपर से दीखने पर साधारण मस्तिष्क को प्रेयात्मक लगती है इसी से साधारण जन उन्हें अपरा विद्या से पूरित मानते हैं। यहां पर वेदों को अपरा विद्या कहने से ऋषि का केवल इतना ही तात्पर्य है कि साधारण जन वेदों में अपरा विद्या को ही देखते हैं और जो परा विद्या है वह भी वेदों में ही पायी जाती हैं, वह वो है जिससे अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

इसके विपरीत विपक्षियों— पश्चिमी विद्वानों का तर्क यह है कि उपनिषद् के उक्त मन्त्र की इस प्रकार की व्याख्या करना स्पष्ट ही अर्थों की खींचातानी है तथा वास्तव में वेदों में ब्रह्म विद्या नहीं है और उपनिषदों के अनुसार वेद अपरा विद्या के ही ग्रंथ हैं। इस आपत्ति के विरुद्ध दयानन्द हमारे सम्मुख एक और तर्क रखते हैं। उनका कहना है कि 'जो ब्रह्म-विद्या वेदों में न होती तो उपनिषद् के ऋषियों को इसका ज्ञान नहीं हो सकता था।[२] दयानन्द का यह तर्क ठीक भी है क्योंकि ब्रह्म विद्या अत्यन्त सूक्ष्म विद्या है और जिस रूप में यह उपनिषदों में पायी जाती है वह तो अत्यन्त परिष्कृत रूप में है। अतः यह मानना कि उपनिषद् के रचयिता ऋषियों ने इसे बिना किसी पूर्ववर्ती ज्ञान के स्वतंत्रत रूप से रच लिया, नितान्त असंगत है। यदि हम विकासवाद को लें, तो जिस प्रकार बिना बीज के अंकुर नहीं होता उसी प्रकार बिना बीजरूप ब्रह्मज्ञान के उपनिषदों का विस्तृत, स्पष्ट एवं परिष्कृत ब्रह्मज्ञान कैसे हो सकता था। इस विषय में श्री अरविन्द का कथन पूर्णरूप से दयानन्द के मत का समर्थन कर रहा है। वह कहते हैं ऐसे गम्भीर और चरम सीमा तक पहुंचे विचार, ऐसे सूक्ष्म और महाप्रयत्न द्वारा निर्मित अध्यात्मक विद्या की पद्धति जैसा कि सारतः उपनिषदों में पायी जाती है किसी पूर्ववर्ती शून्य से नहीं निकल आयी।[३] इसके लिये पूर्व विद्यमान आधार की आवश्यकता है, जिससे औपनिषदिक ऋषियों को प्रेरणा व विचार-सामग्री मिली है और इस आधार के रूप में हमारे पास वेद के ग्रंथ हैं।

वेदों में ब्रह्म विद्या अर्थात् परा-विद्या है या नहीं, इस विषय को अब हम दूसरे उपनिषदों में भी देखेंगे। कठोपनिषद् कहता है, "सारे वेद जिसे गाते हैं, योगी लोग जिसके लिये तप करते हैं, जिसकी प्राप्ति की कामना से मुमुक्षु ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं, वह पद संक्षेप में कहता हूं कि वह ब्रह्म है।[४] इस स्थल पर कठोपनिषद् बहुत ही स्पष्ट रूप से कह रहा है कि सारे वेद ब्रह्म का ही व्याख्यान कर रहे हैं। अतः हमारी समझ में नहीं आता कि वेदों को विशुद्ध अपरा-विद्या के ग्रंथ कैसे कहा जा सकता है और यहां हमें महर्षि दयानन्द का ही मत अधिक युक्तियुक्त लगता है कि वेदों में परा और अपरा दोनों ही विद्यायें हैं परन्तु इनमें परा विद्या (ईश्वर) का व्याख्यान करना वेदों का मुख्य लक्ष्य है।[५]

दयानन्द की उपनिषदों के सम्बन्ध में इस विचार-सरणि से द्रष्टव्य होकर हमको यह मानना ही पड़ता है कि वेदों में जिस परम सत्ता का वर्णन 'सृष्टि का अध्यक्ष', 'देवों का देव' व अनेक स्थलों पर 'ब्रह्मादि' नामों से किया जाता है, वही परम तत्त्व उपनिषदों का ब्रह्म है। इसी को उपनिषदें 'सबका आत्मा', 'नित्यों का नित्य' इत्यादि नामों से पुकारती है। डॉ० पी० के० आचार्य सरीखे विद्वानों के लेखों में भी दयानन्द के इसी मत का प्रभञ्जव प्रतीत होता है, जब वह कहते हैं कि 'पीछे के दार्शनिकों को उपनिषदों के सिद्धान्तों में वेदों का अन्त नहीं वरन् चरम तात्पर्य दिखाई पड़ा।'[६]

सन्दर्भ

१. देखिये ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृ० ९९। वेद संज्ञा विचार विषय।

२. 'मैं वेदों में एक ईशावस्था को छोड़कर अन्य उपनिषदों को (वेदों में) नहीं मानता किन्तु अन्य सब उपनिषद् ब्राह्मण ग्रंथों में हैं, वे ईश्वरोक्त नहीं।' —दयानन्द ग्रन्थमाला भाग२, पृ० ८५७।

३. "वेद स्वतः प्रमाण हैं और ब्राह्मण परतः प्रमाण।" वही पृ० ८५८।

४. In these Upanishads the whole ritual and sacrifical system of the Veda is not only ig-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

nored, but directly rejected as useless, nay, as mischievous."

(The Vedanta Phil. by Max-Muller P. 16 Cal. 1955)

५. 'तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्व वेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परायया तदक्षरमधिगम्यते।' —मु० उ० १-१-५। (मुण्डकोपनिषद के इस मन्त्र से विद्वान यह मानते हैं कि उपनिषदें वेदों को अध्यात्मक विद्या के ग्रन्थ नहीं मानतीं।)

६. 'प्लवा ह्येते अदृढ़ा यज्ञ रूपा।' मु० १-२-७।

७. प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म। एतच्छ्रे यो येऽभिनन्दन्ति मूढा जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति। मु० १-२-७।

८. "कुर्वन्नेहवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे"॥ ईशोपनिषद् २।

९. सत्यार्थ प्रकाश, पृ० १२४।

१०. "यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति।" (ऋ० मं० १, सूक्त १६४, मंत्र ३९)।

११. "तमेव विदित्वाऽति मुत्युनेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय।" —य० ३१-१८।

१२. मु० २-१-४

१३. "तस्माहृचः साम यजूषि दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च। संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः।" मु० २-१-६।

१४. दयानन्द ग्रंथमाला, भाग २ पृ० ८६५।

१५. वेद रहस्य, ले० श्री अरविन्द, भा० १, पृ० ४।

१६. "सर्वे वेदा यद पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्'॥ कठ० १-२-१५।

१७. "अत्र चत्वारो वेदविषयाः सन्ति। विज्ञान कर्मोपासना ज्ञानकाण्ड भेदात्। ..... अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधानत्वात्।" (दयानन्द ग्रंथमाला, भा० २ पृ० ३०२)

१८. (१) 'उपनिषदों में औदार्य" लेख। लेखक महामहोपाध्याय डा० पी० के० आचार्य, एम. ए., पी. एच. डी., डी. लिट. (कल्याण का उपनिषदांक जनवरी १९४९ पृ० ८७)

(२) 'The chief reason why the Upanishad's are called the end of the Vedas is that they represent the central aim and meaning of the teaching of the Vedas'. (The Principal Upanishads. P. 24, London 1953) By Dr. S. Radhakrishnan.

(३) "सन्ति खलु उपनिषदो वेदमूला इति सर्वेषामेव निर्विवादमभिमतम्।" (संस्कृत साहित्य विमर्श पृ० १४८, ले० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री १९५६)

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

१. 'जनज्ञान' के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जनज्ञान' के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।) नई सदस्य संख्या भी नोट करें।

२. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।

३. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।

४. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य सात रुपये है। वार्षिक शुल्क सत्तर रुपये है। आजीवन शुल्क ५०१ रुपये है।

५. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्ट कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

६. आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी०पी० द्वारा भेजा जाता है।

७. वी०पी० में अब चौदह रुपये डाक व्यय अतिरिक्त लगता है। जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है। अतः कृपया सूचना मिलते ही तुरन्त मनीआर्डर भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म् ध्वज का संदेश

❑ श्रीमती निर्मला चोपड़ा

आर्य समाज लाजपतनगर नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर आयोजित महिला सम्मेलन में ओ३म् पताका का उत्तोलन दयानन्द संस्थान की सक्रिय सहयोगी श्रीमती निर्मल चोपड़ा ने किया। इस अवसर पर आपने अपने प्रेरक भाषण में ओ३म् ध्वजा के महत्त्व पर अपनी ओजस्वी वाणी में प्रकाश डाला। उनके भाषण के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

"ओ३म्" यह परमात्मा का निज नाम है इसमें तीन अक्षर हैं। "अ उ म्" इन तीन अक्षरों से मिलकर बना है ओ३म्। यह तीन यात्राएं तीन वेदों से दुही गई हैं। अर्थात् ऋग्वेद से अ मात्रा, यजुर्वेद से 'उ' मात्रा और सामवेद से 'म' मात्रा सार रूप से दुही गई हैं।

'अ' मुख खुलते ही थोड़े ही प्रयत्न से पहली ध्वनि निकलती है। भीतर छिपे सब अर्थों को प्रकट करने के लिए जो वाणी में शब्द सृष्टि होती है उस शब्द सृष्टि के मूल में अ ही ध्वनि है। इसी प्रकार यह अ मात्रा परमात्मा के सहज स्वभाव रूप से सृष्टि बनाने का वर्णन करती है। इसलिए उ मात्रा परमात्मा के सृष्टि को धारण और म् मात्रा प्रलय करने की ओर संकेत करती है।

अ से सब अक्षरों का आरम्भ होने से वह कर्ता होने का बोध कराता है। उ के उच्चारण करते ही मुख खुल जाता है, यह सृष्टि की स्थिति का द्योतक है और म से मुख बन्द हो जाने से समस्त सृष्टि चक्र के रुक जाने अर्थात् प्रलय-संहार की सूचना मिलती है। इसलिए यह तीन मात्राएं ईश्वर के तीन स्वाभाविक कर्म उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का दर्शन कराती हैं।

ऐसा सुन्दर मधुर संक्षिप्त, बहुत अर्थों वाला व्यापक शक्ति वाला गम्भीर नाम परमात्मा का किसी अन्य भाषा में नहीं है। ऋषि मुनियों ने इसके जाप पर बहुत बल दिया है। "योगदर्शन" में लिखा है **'तस्य वाचकः प्रणवः तत् जयः तदर्थ भावनम्'**। 'ओ३म् ही हमारा प्रियतम है। वही आराध्य है। उसी ओ३म् की ऋचाओं से स्तुति करो। यजुषों से यजन करो और सामों से गान करो। मुक्तात्माएं उसी ओ३म् के सोम सरोवर में आनन्दमग्न हो तैरा करती हैं।

गोपथ ब्राह्मण में लिखा है कि तीन रात उपवास करके पूर्व की ओर मुख करके हजार बार इस ओ३म् का जाप करें तो सब मनोरथ तथा सब कर्म सिद्ध होते हैं।

यह ओम खं ब्रह्म है अर्थात् आकाश की तरह सब जगह व्यापक होने से खं और सब से बड़ा होने से ब्रह्म कहता है। उसी ओ३म् का यजुर्वेद में विधान है कि **"ओ३म् क्रतो स्मर"** अर्थात् मरण समय में ओ३म् का ही स्मरण करो। अन्य जगह यजुर्वेद में कहा है कि ओ३म् प्रतिष्ठ अर्थात् ओ३म् में प्रतिष्ठा=आस्था करो। शास्त्रों का निचोड़ यह है कि प्रवण ओम् अमृत है। इसी अमृत से मनुष्य मृत्यु को पार करता है। जैसे कोई बांस के द्वारा गढे को लांघ जाता है वैसे ही मनुष्य इस ओम् के जाप से संसार को लांघ जाता है। ब्रह्म ही प्रणव ओंकार है। सत्य तो यह है कि संसार चक्र अर्थात् जन्म मरण से छुटकारा प्राप्त करने के लिए ओ३म् ही एक मात्र सहारा है। बुद्धिमानों का यही कर्त्तव्य है कि इसी का सहारा लें।

आइये उसी ओ३म् का प्रेम से गायन करें **'सहस्त्रं साकमर्चत'** वेद के इस आदेशानुसार आप भी साथ दें तो यह आर्य मन्दिर ओ३म् नाम की गूंज से ओ३म्मय हो जाय।

"बोले मेरा रोम-रोम— ओ३म् ओम् ओम् ओम् ओम्।
गूंजे मेरा अन्तर व्योम — ओ३म् ओम् ओम् ओम् ओम्।

ओ३म् का ध्वज ऊंचा रहे।

अजमेर में वेद गोष्ठी

अजमेर। सद्भावी विद्वानों के सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में २४, २५, २६ अक्टूबर को आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर किया जा रहा है। वेद गोष्ठी के लिए विचारणीय विषय है— 'वेद और राष्ट्र'। विषयों की सूची मंगाकर आप जिस विषय पर लिखना चाहें उसकी सूचना संयोजक को देने की कृपा करें। लेख टाइप किये गये १० फुल स्केप से अधिक न हो। लेख में प्रस्तुत विचारों एवं तथ्यों के लिए वेद एवं वैदिक साहित्य के प्रमाण अवश्य उद्धृत करें। प्रमाणों को पूरा पता दें। शोध की स्पष्टता के लिए आवश्यक है। पत्र/निबन्ध की भाषा हिन्दी या संस्कृत हो सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वसुधैव कुटुम्बकम्

❑ डॉ० कर्ण सिंह

जब मानवता भूतकाल के भार और भविष्य की चुनौतियों के बीच असमंजस में पड़ी होती है, जब पुरातन ढहता और नवीन जनमने के लिए भीषण संघर्षरत होता है, जब उच्चतर चेतना की प्रत्याशा अपनी शक्तियों को प्रकट करना आरम्भ करती है, परन्तु घृणा और विनाश की शक्तियां भावी पीढ़ियों पर अपनी अशुभ छाया फैलाने लगती है, जब ज्ञान तीव्रगति से बढ़ता है किन्तु बुद्धिमत्ता क्षीण होती जाती है। जब विज्ञान ओर तकनीक हमें अविश्वनीय उपहार प्रदान करते हैं पर साथ ही कल्पनातीत विनाश के द्वार भी खोल देते हैं, तब पृथ्वीतल से इस सदी के अन्त तक गरीबी और भूख, निरक्षरता और बेरोजगारी के उन्मूलन की संभावना हमारी पहुंच में होती है, परन्तु मानव इतिहास और सभ्यता की सभी उपलब्धियां तब तक आणविक अग्निकांड में भस्म होती नजर आती हैं, जिसमें मानव जाति ही नहीं बल्कि हमारे ग्रह के सभी जीव नष्ट हो जाएंगे। यह दुखद विडम्बना है कि जिस धरती माता ने एक अरब वर्ष से आदिम सागर के पंक से लेकर आज तक चेतना को पालपोस कर बनाए रखा है वह आज स्वयं विकास में अग्रणी मानव जाति द्वारा जोखिम में डाल दी गई है।

मानवता के अनेक धार्मिक विश्वासों का प्रतिनिधित्व करने वाले अपनी इस धारणा में एक मत है कि ईश्वर संमस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। **ईशावास्यमिदम् सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्**—जैसा कि उपनिषद् में कहा है और इस ग्रह पर निवास करने वाला हर मानव मत अथवा संप्रदाय का विचार छोड़कर दैवीकृपा और दैवी अंतःशक्ति का किसी न किसी रहस्यमय रूप से प्रसाद प्राप्त करता है। इस संकटकालीन परिस्थिति में तो यह वांछनीय है कि शांति और कल्याण के लिए अलग-अलग आकांक्षाओं की अनेक धाराओं का एक संयुक्त प्रार्थना के रूप में विलयन हो जाए ताकि मानवता को सर्वनाश से बचाने के लिए यह ईश्वरी शक्ति से शक्तिशाली और प्रभावकारी वरदान पा सके। गीता में श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि जब कभी मानव जाति वास्तविक संकट में पड़ जाती है तब धरती पर धर्म तथा सदाचार की पुनर्स्थापना के लिए ईश्वरी अवतार होता है।

रचनात्मक सहजीवन प्रत्येक महान धर्म के रचनात्मक तत्त्वों का विलयन आज की इस घड़ी में भी अंधकार को दूर कर आत्मिक ऊर्जस्विता को प्रकट कर सकता है, जिसकी विश्व संकट का मुकाबला करने के लिए बड़ी आवश्यकता है। यह पंडित गोपीकृष्ण ने अपनी अद्‌भुत पुस्तक 'दि प्रेजेंट क्राइसिस' में सिद्ध किया है। यह विनाश के खतरे का सजीव चित्र ही अंकित नहीं करती बल्कि यह भविष्यवाणी भी करती है कि यदि पर्याप्त संख्या में लोग इसे जानें और उच्चतर चेतना का विकास कर लें तो आणविक युद्ध का निवारण किया जा सकता है। हमारे युग के अन्य महान विचारक, विशेषकर पूर्व में श्री अरविन्द और पश्चिम में तेल्हार्द दे चर्दिन ने भी इस संकटकालीन स्थिति के विषय में कहा है जो हमारे सामने धुंधली सी छाई हुई है और जिसे लांघने के लिए विकासमूलक छलांग लगाने की आवश्यकता है।

हिन्दू धर्म वेदों पर आधारित धर्म है जो मनुष्य मात्र को प्राप्त अति प्राचीन जीवंत धर्मग्रंथ है। इस धर्म ने हमारे सामने मानव मात्र के एकत्व का महान आदर्श प्रस्तुत किया है—**वसुधैव कुटुम्बकम्** यह हर मानव में निहित देवत्व, सभी धर्मों की मूलभूत एकता और मानव परिवार के भ्रातृत्व की घोषणा करता है। हमें हर व्यक्ति के हृदय में निवास करने वाली दैवीशक्ति के मर्म का पुनः अन्वेषण करना चाहिए जो सभी मतों और सिद्धान्तों का आधार है, जो मानव की उन सभी बनावटी बाधाओं को काट फेंकता है जो उसने समय के लम्बे और टेढ़े-मेढ़े पथ पर बहुत कष्ट उठाकर खड़ी की हैं और हमारे जीवन और आत्मिक विकास की कुंजी उसी के हाथ में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। ये ऐसे सत्य हैं जिन्हें हमें पुनः खोजना चाहिए, क्योंकि ईसा ने ठीक ही कहा था— "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।" कठोपनिषद् घोषित करता है—**सत्यमेव जयते नानृतम**, केवल सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।

घोर संकट की इस घड़ी में सांघातिक कटुता और संदेह से हम अपने मन और मस्तिष्क को साफ कर लें क्योंकि जीवित रहने के लिए हम सबको मिलकर उच्चतर चेतना का निर्माण करना चाहिए जो नास्तिकों समेत सभी धर्मों को अपने में समाहित कर ले ताकि हमारे बच्चे और उन बच्चों के बच्चे आने वाले हजारों वर्षों तक फलते-फूलते रहें। अनेक युद्ध ईश्वर के नाम पर लड़े गए हैं, लाखों लोग मारे गए हैं और अब भी इन युद्धों में मारे जा रहे हैं, जबकि मानव जाति के बड़े खंडों में नास्तिकतावादी शक्तियां भी अपना प्रभाव विस्तार करती रहती हैं। अपनी गणना किसी न किसी धर्म के मानने वालों में करने वाले हम सबको अब इसी उत्साह से शांति के लिए लड़ना चाहिए जिस उत्साह से हमने युद्ध छेड़ा था ताकि मानव-संघर्ष का युग इतिहास का विषय बनकर रह जाए और हम प्रेम तथा सहयोग के साहसिक कार्य का प्रारम्भ कर सकें जिसमें आपसी विनाश के स्थान पर आपसी कल्याण सुनिश्चित हो सके। हमें आगामी दिन की प्रतीक्षा न कर उससे पहले दिन, आज ही, अभी, शांति और मैत्री का संदेश धरती के इस छोर से उस छोर तक फैलाना चाहिए, जबकि हम आज भी बच्चों का मुक्तहास सुन सकते हैं और मानव सम्बन्धों का अंतरंग अनुभव कर सकते हैं, जबकि हम अभी तक संगीत की रमणीयता और रचनात्मक कला के उदात्त अनुभव से स्पंदित हो सकते हैं, जबकि हमारे हृदय महान साहित्य के विवेक और प्रेम की उत्तम पुलकन से अब भी प्रतिध्वनित हो रहे हैं।

हमें पृथ्वी के साधनों का इस प्रकार पुनर्गठित करना चाहिए ताकि समस्त मानवता का दो तिहाई भाग जो जीवन-निर्वाह स्तर के लिए अब भी संघर्षरत है, उसे भौतिक तथा बौद्धिक निवेश का आश्वासन दिया जा सके। जो अच्छे तथा सभ्य जीवन के लिए आवश्यक है, ताकि लाखों बच्चे रात में भूखे तथा अधपेट ही न सो जाएं अथवा अविकसित मस्तिष्क तथा शरीर लिए प्रौढ़ न बन जाएं ताकि लाखों लोग रोग से न मर जाएं जिनमें नये संघातिक तनाव भी शामिल हैं और जो चिकित्सा शास्त्र को निष्फल बना देते हैं या कुपोषण के कारण बरबाद हो जाते हैं। यह सब कुछ उपलब्ध हो सकता है यदि संसार के साधनों के दस प्रतिशत को शांतिपूर्ण कार्यों की ओर मोड़ दिया जाए जिसे अब तक संघातिक अस्त्रों की बढ़ोत्तरी में नष्ट किया जा रहा है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि इस धरती के प्रत्येक व्यक्ति को न्याय और स्वतंत्रता न दिला सकने पर शांति की चर्चा का अर्थ ही समाप्त हो जाता है क्योंकि हर व्यक्ति विलक्षण है और वह मानव सभ्यता को अनुपम योगदान देने की क्षमता रखता है।

हवा पूर्वाभास से बोझिल हो रही है और तनाव के काले बादल क्षितिज पर गहरे होते जा रहे हैं। हममें से उन लोगों को जिन्हें आंतरिक पथ पर चलना है, घिरते अंधकार में ही विश्वास बनाए रखना चाहिए। हजारों वर्ष पहले उपनिषदों के एक ऋषि ने आनन्दातिरेक में उद्घोषित किया था— "मैंने परमात्मा को अंधेरे से पार दूसरे छोर पर भव्यता के साथ चमकते देखा है।" हम सबको भी अपने अंतरतम को उस परमात्मा के प्रकाश और शक्ति की ओर उन्मुख रखना चाहिए ताकि हम दैवी ज्योति से ज्योतित हो सकें, अपनी विवेक बुद्धि का ऐसे कार्य करने में विकास कर सकें और जिससे इतना रमणीय और ऐसा सुकुमार हमारा सुन्दर ग्रह, अनन्तकाल तक सूर्य की परिक्रमा करने वाला बुझा हुआ अंगार न बने, बल्कि यह अति मानव की उच्चतर चेतना की शक्ति और गौरव को प्रतिबंधित करने वाला अवलम्ब बन सके। ❑

तपोवन का शरदोत्सव ८ अक्टूबर १९९७ से होगा

देहरादून। वैदिक साधना आश्रम, तपोवन (देहरादून) का शरदोत्सव दिनांक ८ अक्टूबर से १२ अक्टूबर तक होगा। योग साधना शिविर के निदेशक डॉ० त्रिलोकचन्द्र प्राध्यापक योग-विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय होंगे। यज्ञ की ब्रह्मा देवी प्रियंवदा वेद भारती, आचार्या गुरुकुल आर्ष कन्या महाविद्यालय नजीबाबाद होंगी। प्रवचनकर्ताओं में इनके अतिरिक्त आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार और आचार्य आर्य नरेश के पधारने की भी पूर्ण आशा है। युवा गायक श्री सुचित नारंग द्वारा संगीत भी प्रस्तुत किया जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२७ अक्टूबर को जन्मतिथि पर विशेष

जब यतीन्द्र के फेफड़े में दूध चला गया

❑ डॉ० के० एल जौहर

६३ दिन के लगातार अनशन के बाद १३ सितम्बर १९२९ को बोर्स्टल जेल लाहौर में जब यतीन्द्र नाथ दास शहीद हुए तो सारे देश में हाहाकार मच गई। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तथा अन्य सैकड़ों क्रान्तिकारियों ने जो भारत की विभिन्न जेलों में बंद थे, भारत के इस महान सपूत के सामने सिर झुका दिया। देश के कोने-कोने से देशभक्त इस महान क्रान्तिकारी की तरुण अवस्था में शहादत की प्रशंसा कर रहे थे। जब इनकी लाश को लाहौर से कलकत्ता ले जाया गया तो लाखों की संख्या में लोगों ने दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धाँजलि दी।

अनशन १३ जुलाई, १९१९ को आरम्भ किया गया था। जेल में राजनीतिक बंदियों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया जाता था। किसी प्रकार की कोई सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने पहले से ही अनशन शुरू कर दिया था। यतीन्द्र नाथ दास ने अन्य क्रांतिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा, "मेरे लिए अनशन का मतलब है विजय या मौत। मैं विचलित होकर अनशन तोड़ूंगा नहीं। मैं अपनी जान बचाने के लिए उसूलों की कुर्बानी नहीं दूंगा।" सभी ने दृढ़-निश्चय से तथा एक स्वर में अनशन करने का निश्चय किया।

२४ जुलाई को अन्य कैदियों की तरह उन्हें भी अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। सरकार ने कैदियों को जबरदस्ती खुराक देने का निश्चय लिया। नाक में नली डाल कर दूध पिलाया जाने लगा परन्तु इस महान क्रान्तिकारी ने अधिकारियों के हर प्रयत्न को विफल कर दिया। संघर्ष में जब दस हृष्ट-पुष्ट कैदियों ने उन्हें काबू कर रखा था और डाक्टर ने रबड़ की नली उनके नाक में डाली तो वह नली श्वास नली में प्रवेश कर गई और दूध पेट में जाने की बजाय फेफड़ों में चला गया। यतीन्द्रनाथ मछली की तरह तड़पने लगे। उन्हें निमोनिया हो गया। उन्हें बचाने के लिए हर सम्भव कोशिश की गई।

ज़ेल में खूब शोर हुआ। अन्य स्थानों में भी डाक्टर आए और यतीन्द्र का उपचार होने लगा। उसे बहुत समझाया-बुझाया गया परन्तु सब बेकार। भगत सिंह तथा अन्य लोगों ने कुछ सुविधाएं मिल जाने के बाद अनशन तोड़ दिया। उन्होंने यतीन्द्र के पास अस्पताल में जाकर कोशिश की कि वह भी अनशन तोड़ दें परन्तु वह कहां मानने वाले थे। वह तो देश की खातिर शहीद होना चाहते थे। वही हुआ। उनके जीवन के अन्तिम दिन सभी क्रान्तिकारी उनके पास इकट्ठे हो गए। विजय कुमार सिन्हा ने बंगला में एक क्रान्तिकारी गीत गाया। काजी नजरूल ने इस्लाम की नज्म गाई गई। अन्त में 'वन्देमातरम्' का राष्ट्रीय तराना गाया गया और इसके साथ ही लगभग एक बज कर ५ मिनट पर उन्होंने दम तोड़ दिया। उनकी शहादत क्रान्ति की एक मिशाल बनकर उठी और सारे देश में बगावत की रौशनी कर दी। एक नई चेतना का संचार किया।

यतीन्द्रनाथ का जन्म २७ अक्टूबर १९०४ को दक्षिण कलकत्ता में हुआ। उनके पिता बंकिम चन्द्र दास उनको अच्छी शिक्षा देना चाहते थे। उन्होंने मैट्रिक तथा इंटरमीडिएट प्रथम श्रेणी में पास की परन्तु इन्हीं दिनों उन्हें राजनीति का चस्का लगा और वह अभी १७ साल के ही थे कि उन्हें गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन (१९२१) में भाग लिया। ६ महीने की सजा हुई और उन्हें हुगली जेल में डाल दिया गया। इससे पहले जलियांवाला बाग अमृतसर में अंग्रेजों द्वारा निहत्थे लोगों का कत्लेआम वह भूल नहीं पाए थे। उन्हें भारत के अन्य क्रांतिकारी नौजवानों की भांति उस समय बहुत धक्का लगा जब १९२२ में चौराचौरी घटना के बाद गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जेल से रिहाई के बाद उन्होंने बी. ए. के लिए विद्यासागर कालेज में प्रवेश लिया। यहीं पर वह शचीन्द्र नाथ सान्याल के अटूट प्रभाव में आए। बंगाल में तो अंसुलिन पार्टी सक्रिय थी परन्तु उत्तरी भारत में शचीन्द्र नाथ सान्याल इसका गठन करने में लगे हुए थे। दास ने डटकर तथा निर्भीकता से सान्याल की सहायता की। इन्हीं दिनों उन्होंने बम बनाना भी सीख लिया और बाद में भगत सिंह, भगवतीचरण वोहरा तथा अन्य अनेक क्रांतिकारियों को कलकत्ता तथा आगरा में बम बनाने का प्रशिक्षण दिया।

लगभग इन्हीं दिनों अंग्रेजी सत्ता को हिला देने वाला 'काकोरी डकैती कांड' हुआ। दक्षेश्वर बम फैक्ट्री का भी भांडा फूट गया। बहुत सारे क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिए गए। यतीन्द्र ने न केवल पार्टी के गिरफ्तार लोगों की पैरवी की बल्कि पार्टी को भी जिन्दा रखा। वह अधिक देर पुलिस की नजरों से बच नहीं सके। २५ नवम्बर १९२५ को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और लगभग तीन साल तक जेल में रखा गया। १९२८ के अक्टूबर में जब उनकी इकलौती बहन लबयना का देहान्त हो गया तो उन्हें अपने पिता की देखभाल करने के लिए उनके पास रहने की इजाजत मिल गई। कलकत्ता कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया। सुभाष बाबू ने उन्हें बंगाल वालंटियर का मेजर बनाया, जिसमें उन्होंने अहम् भूमिका निभाई।

१४ जून, १९२९ को उन्हें कलकत्ता में गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें पूरक लाहौर षड्यंत्र केस में अभियुक्त बनाया गया। लारेंस गार्डन लाहौर में बम फटने से एक चपरासी की मृत्यु हो गई थी। इसे तथा सांडर्स हत्या केस को लेकर अभी अभियाग चलना ही था कि देश की आजादी का यह मतवाला देश केलिए शहीद हो गया। कहा जाता है कि चन्द्रशेखर आजाद तथा भगत सिंह इनकी मृत्यु पर फूट-फूट कर रोए।

शहीद यतीन्द्र नाथ दास की कुर्बानी देशभक्ति तथा कर्मपरायणता चिरस्मरणीय रहेगी और उनकेद्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उन्मूलन के लिए किए गए कार्य प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे।

कुरुक्षेत्र वि.वि. कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

स्वयंदीप

अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
घृणा-द्वेष के शूल समेटो भ्रातृभाव के फूल खिलाओ।
दीप उधारा मांग जलाया अपना वह वापिस ले लेगा।
आंगन में फिर मित्र तुम्हारे अंधकार खुलकर खेलेगा।
स्नेह समय पर मिले नहीं तो उसमें अपना रक्त मिलाओ।
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
लहरों में भंवरों में घिरकर घबराने से क्या होता है।
पानी में रहकर तो पगला ही आंसू से मुख धोता है।
अपने नैया स्वयं खिवैया भैया चप्पू खुद बन जाओ
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
घर में चोर घुसे हों बोलो किस मालिक को नींद सताये।
स्वयं निमंत्रण देकर बोलो विपदाओं को कौन बुलाये।
अपने सुप्त विवेक-वीर के कान मरोड़ो और जगाओ।
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
ऊंची-ऊंची दीवारों में कैदी दुल्हन औ दूल्हे हैं।
आंगन-आंगन खुदी खाइयां अलग-अलग सबके चूल्हे हैं।
नफरत की नाकेबंदी को प्रेम-प्यार से तोड़ गिराओ।
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
कैसी घातक तान सुनाते झूम-झूमकर दुष्ट सपेरे।
अंधियारों से संधि चले हैं करने कायर कुटिल सवेरे।
अपनी करुणा की अरुणा से वैमनस्य की आग बुझाओ।
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
पढ़ने के ये दिन हैं लेकिन हाथों में पालिस की डिबिया।
बचपन में ही फुर्र कर गई सुख सपनों की भोली चिड़िया
शिशुओं के सुखमय भविष्य को फुटपाथों पर नहीं सुलाओ।
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
ये निर्जीव लकीरें तेरा भाग्य नहीं है भोले भाई।
मेहनत के मन्दिर में पूजा कर ले मिलती पाई-पाई।
श्रम के सौरभ से अपनी किस्मत की क्यारी को महकाओ।
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।
ये मजहब के मोर सुनहले लगते हैं लेकिन नकली हैं।
फसलों का हिस्सा खा जातीं ये खर-पतवारें फसली हैं।
वैदिक पथ पर चलो 'मनीषी' उस पर सबको साथ चलाओ
अंधकार से जूझ-जूझकर अपने दीपक आप जलाओ।

डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अक्टूबर में जयन्ती पर

अश्फाक को उनके सहपाठी ने पकड़वाया

❑ डॉ० के० एल० जौहर

१९ दिसम्बर, १९२७ की सुबह को नए कपड़े पहन कर और कपड़ों पर इत्र छिड़क कर एक ऊंचा, लम्बा, खूबसूरत पठान शेर सी मस्तानी चाल से आगे बढ़ रहा था। 'कुरान शरीफ' उसके हाथ में और 'भारत माता की जय का नारा' उसकी जुबान पर था। यह दिन उसे फांसी लगने के लिए निश्चित किया गया था। फांसी के रस्से को देख कर अश्फाक उल्ला खां बोले, "मेरी दुल्हन, मैं सज-धज कर तुझसे निकाह करने की नीयत से आ गया हूं।" उन्होंने उसे चूमा, मुस्कराते हुए अपने गले में डाला और फिर क्षण भर में पैरों के नीचे से तख्ता हटाया और वह अपनी महबूबा के सहारे झूल गए। उनके बलिदान के बरसों बाद तक फैजाबाद जेल में उनका अपना लिखा हुआ यह शेर याद रखा गया और बरसो-बरस याद रखा जायेगा।

"तंग आकर हम भी उनके जुल्म से, बेदाद से।
चल दिए सूए अदम जिन्दाने फैजाबाद से॥"

फांसी लगने से दो दिन पूर्व अर्थात् १७ दिसम्बर को उनके दोनों भाई रियासत उल्ला खां और शहंशाह खां अपने बच्चों सहित उनसे मिलने आए थे। उनकी आंखों में आंसू देखकर अश्फाक ने उन्हें समझाया, आपको तो इस बात का गर्व होना चाहिए कि मैं अंग्रेजी साम्राज्यवाद के उन्मूलन की कोशिश केजुर्म में फांसी पर लटकाया जा रहा हूं। मैंने कोई घिनौनी या घटिया हरकत नहीं की है। मुझे अपनी देशभक्ति और देश प्रेम पर नाज है। इतना सुनने पर उनके भाई तथा भतीजे शांत और आश्वस्त हो गए।

अश्फाक उल्ला खां का जन्म अक्टूबर १९०० में शाहजहांपुर (यू० पी०) में हुआ। उनके पिता शफी उल्ला खां एक कट्टर मुसलमान थे परन्तु साम्प्रदायिकता से कोसों दूर हिन्दू-मुस्लिम एकता में विश्वास रखते थे। अश्फाक ने ८वीं का इम्तिहान शाहजहांपुर के एक स्कूल से पास किया। छात्रकाल से ही वह दासता की जंजीरों को काटने के बारे में सोचने लगे। वह मातृवेदी संस्था के सक्रिय सदस्य बन गए।

समय बीतता गया और उनका सम्पर्क पं० रामप्रसाद बिस्मिल से हुआ। एक कट्टर मुसलमान और दूसरा कट्टर आर्य समाजी, फिर भी दोनों एक-दूसरे से भाइयों से भी अधिक प्यार करते थे। वह अन्य साथियों से मिल कर शेरगंज, बिच्छपुरी तथा मैनपुरी की डकैतियों और अन्य क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेते रहे। उनका पं० रामप्रसाद बिस्मिल के प्रति न केवल अभूतपूर्व स्नेह था बल्कि उन पर अडिग विश्वास भी था। वह उन्हें राम कह कर ही पुकारते थे। एक बार वह बहुत बीमार पड़ गए और बेहोशी की हालत में राम-राम पुकारने लगे। उनके भाइयों और मुसलमान रिश्तेदारों को बड़ा अजीब लगा परन्तु एक हिन्दू पड़ोसी एकदम समझ गया और उसने कहा कि यह बेहोशी की हालत में पं० राम प्रसाद बिस्मिल को पुकार रहे हैं। बिस्मिल को बुलाया गया। उसने अश्फाक का हाथ अपने हाथ में लिया और उन्हें दो बार पुकारा। अश्फाक उल्ला खां ने आंखें खोलीं और धीरे-धीरे ठीक हो गए। एक बार शाहजहांपुर हिन्दू-मुस्लिम दंगों का पूरी तरह से शिकार हो गया। दर्जनों की संख्या में लोग रोज एक-दूसरे को मारने लगे। अश्फाक तथा राम प्रसाद बिस्मिल मुस्लिम तथा हिन्दू की ठेठ वेशभूषा में सड़कों पर निकल पड़े और जोर-जोर से चिल्लाए, हमें मार डालिए। हम दोनों एक ही जान हैं। उन्होंने जिस आपसी प्यार का परिचय दिया उससे दंगे शांत हो गए और शाहजहांपुर के लोग फिर प्यार से रहने लगे।

अश्फाक ७ अगस्त, १९२५ के दिन काकोरी ट्रेन डकैती का निर्णय लेने के लिए क्रांतिकारी साथियों में शामिल थे, जिनकी एक मीटिंग उस दिन रामप्रसाद बिस्मिल के मकान पर हुई थी। उस मीटिंग में चन्द्रशेखर आजाद भी शामिल थे। राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी योजना से साथियों को अवगत कराया। उन्होंने सहारनपुर लखनऊ पैसेंजर ट्रेन से सरकारी खजाने को काकोरी स्टेशन के पास लूटने की योजना रखी। अश्फाक ने इसका विरोध किया। इसलिए नहीं कि वह इससे डरते थे, इसलिए कि उनके विचार में अभी उनकी पार्टी इतनी सुदृढ़ नहीं थी, परन्तु जब ९ अगस्त १९२५ को गाड़ी से खजाने को लूटने का फैसला हुआ तो अश्फाक उनमें सबसे आगे थे। वह शचीन्द्र बख्शी तथा राजेन्द्र लाहिड़ी के साथ काकोरी स्टेशन से दूसरे दर्जे के डिब्बे में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सवार हुए और गाड़ी अभी थोड़ी दूर ही गई थी कि उन्होंने जंजीर खींच कर गाड़ी रोक दी। अपना पिस्तौल लेकर गाड़ी से नीचे कूद गए और लोगों को गाड़ी से न उतरने की चेतावनी दी। गार्ड के डिब्बे से सरकारी खजाने का बक्सा नीचे गिराया गया। जब उन्होंने देखा कि बक्से को तोड़ने में कुछ कठिनाई हो रही है तो अश्फाक ने ही पठानी अंदाज में अपने कुल्हाड़े से जोरदार प्रहार करके उसे तोड़ दिया और खजाना बटोर कर वह और उनके साथी सुरक्षित भाग निकले।

बदकिस्मती से एक क्रान्तिकारी अपनी खादी की चद्दर मौके पर छोड़ आया जिस पर एक धोबी का निशान था। यह पुलिस के लिए एक महत्त्वपूर्ण सुराग था। २९ सितम्बर १९२५ के दिन कई क्रान्तिकारियों को उनके घरों पर छापा मार कर गिरफ्तार कर लिया गया। राम प्रसाद बिस्मिल भी गिरफ्तार कर लिए गए। २६ लोगों पर काकोरी ट्रेन डकैती के नाम से केस चला। गोविन्द वल्लभ पंत, चंद्र भानु गुप्त, मोहन लाल सक्सेना तथा अजीत प्रसाद जैन जैसे चोटी के वकीलों ने इस केस की पैरवी की। अश्फाक घर से फरार हो गए। दो दिन गन्ने के खेत में छिपने के पश्चात वह बनारस पहुंचे और वहां छात्रावास में रुके। उसके बाद राजस्थान में अर्जुन लाल सेठी के घर पर रुके। उसके बाद डाल्टनगंज (बिहार) में चले गए और एक पब्लिक वर्क्स विभाग में क्लर्क के रूप में भर्ती हो गए। उन्होंने बंगला भाषा भी सीख ली। उर्दू जुबान में तो माहिर थे ही। वह बंगला और उर्दू में गीत गाने लगे तथा मुशायरों में भी गीत गाने लगे। एक इंजीनियर से प्रभावित होकर उन्होंने रूस में जाकर इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने की योजना बनाई और पासपोर्ट बनवाने के लिए दिल्ली पहुंच गए। एक मुसलमान दोस्त जो उनके गांव का भी था और सहपाठी भी था, उसके घर रुके। उस समय तक पुलिस ने उनके सिर पर बड़ा भारी इनाम रखा था। रुपए के लालच में उस सहपाठी दोस्त ने उन्हें गिरफ्तार करवा दिया। उन्हें लखनऊ ले जाया गया और लखनऊ पूरक डकैती केस के नाम से इन पर तथा भागलपुर से पकड़े गये शचीन्द्र नाथ बख्शी पर मुकदमा चला। काकोरी केस के अभियुक्त कचहरी में पहुंच कर तथा आते समय राम प्रसाद बिस्मिल तथा अश्फाक उल्ला खां द्वारा लिखे गए नगमे गाते थे। उनके सिर पर मौत खड़ी थी परन्तु उन्हें तनिक भी चिन्ता नहीं थी। पं० राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह तथा राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी की सजा सुनाई गई तथा अन्य अभियुक्तों को लम्बी-लम्बी सजाएं दी गई। ❐

ये कैसा दशहरा

भारती पर भी खतरा नजर आता है,
सारथी पर भी पहरा नजर आता है,
राम के भेष में फिर रहे रावण कई,
ये कैसा दशहरा नजर आता है।

न सीता ही सुरक्षित रही न गीता ही,
कानून और भी बहरा नजर आता है,
हर तरफ से टूट रही लक्ष्मण रेखायें,
संकट और भी दुहरा नजर आता है।

सत्ता लिप्सा को ले हो रहा तुष्टिकरण,
आरक्षण और भी गहरा नजर आता है,
नेता सत्तासुर का पर्याय बन रहे,
भ्रष्टाचरण और भी गहरा नजर आता है।

यन्त्रों के शोर में षड़यन्त्रों के दौर में,
प्रदूषण और भी गहरा नजर आता है,
दलों की दलदल में देश यूं फंसा
हर दल किसी का मुहरा नजर आता है।

कितनी बार किया सत्यार्थ प्रकाश
अन्धविश्वास फिर भी बिखरा नजर आता है,
ऐसे में क्या कहें वेद उपनिषदों की,
चरित्रवान अब, कचरा नजर आता है।

जब भी उठा दशहरे [illegible] का गूढ़ार्थ कहने
उसमें भी उन्हें मुजरा नजर आता है,
दंगों का दशानन, कही-कहीं आतंक का,
देशभक्त अब डरा नजर आता है।

क्या होगा देश का राम जाने वैसे
राम पर भी अब पहरा नजर आता है
विभीषण जैसी गति स्थिति "आजाद' की,
अयोध्या पर भी कोहरा नजर आता है।

त्रिपाठी कैलाश 'आजाद', ६८२, गणपती पेठ,
सांगली-४१६४१६ (महाराष्ट्र)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राष्ट्र नेपाल में आर्य समाज की स्थिति-२

❑ भवानीलाल भारतीय

नेपाल सरकार ने हिन्दुत्व के कुछ प्रतीकों को अपनाकर वस्तुतः अपनी सांस्कृतिक निष्ठा को सुरक्षित रखा है। उदाहरणार्थ वहां ईसाई उपासना को समर्पित रविवार को सार्वजनिक अवकाश नहीं रहती, अपितु वहां सरकारी छुट्टी शनिवार को होती है। जब मुझे विराटनगर में आयोजित होने वाले आर्य सम्मेलन की तिथियों की सूचना मिली तो मुझे यह आश्चर्य हुआ कि इस आयोजन को शनिवार तक ही क्यों रखा गया है, इसमें रविवार सम्मिलित नहीं किया यह मेरे लिये हैरानी की बात थी। हम लोग तो रविवार को अवकाश होने के कारण उसी दिन तक कार्यक्रम रखते हैं। बाद में वहां जाने पर इसका रहस्य ज्ञात हुआ कि नेपाल में सप्ताह शनिवार के अवकाश के साथ समाप्त होता है। रविवार को तो दफ्तर, स्कूल और बाजार खुल जाते हैं।

इसी प्रकार ईस्वी सन् और रोमन कैलेंडर को स्वीकार न कर नेपाल में विक्रम संवत् तथा देशी कैलेंडर को सरकारी मान्यता प्राप्त है। वहां सौर काल गणना का प्रचलन है इसलिये चन्द्र गणना वाला तिथियों के घटने बढ़ने का चक्कर नहीं है। नया वर्ष प्रथम वैशाख (१४ अप्रैल) से आरम्भ होता है। चैत्र, वैशाख आदि मास तथा विक्रम संवत् का जनसाधारण तथा सार्वजनिक जीवन में सर्वत्र प्रचलन है। किसी के मुंह से भूल कर भी ईस्वी सन् या तारीख, महीना नहीं सुनाई पड़ता। यहां तक कि समाचार पत्र, राजनीति, दैनिक व्यवहार तथा वैयक्तिक एवं सार्वजनिक जीवन में सर्वत्र स्वदेशी संवत् मास तथा दिनों का व्यवहार होता है। तारीख के लिये 'गते' का प्रयोग होता है। आप किसी से उसकी जन्मतिथि पूछें तो वह कहेगा २२ गते चैत्र २०२५ वि०। यों अन्य लोगों की सुविधा के लिये समाचार पत्रों पर ईस्वी सन् तथा मासादि का भी उल्लेख रहता है। हिन्दू पर्व त्यौहारों पर सार्वजनिक अवकाश रहता है। ईद, मुहर्रम, एक्समस के लिये कोई अवकाश नहीं रहता। वहां के कैलेंडर भी १ वैशाख से ही आरम्भ होते हैं। ईस्वी तारीखों का उल्लेख गौण रूप में होता है।

नेपाल की सामान्य जनता में देश के महाराजाधिराज के प्रति असीम भक्ति और प्रीति है। उन्हें 'श्री ५ सरकार' कहा जाता है। महारानी ऐश्वर्य राजलक्ष्मी 'श्री ५ बड़ा महारानी सरकार' कहलाती हैं। युवराज दीपेन्द्र तथा राजकुमारी श्रुति राजा की दो सन्तानें हैं। प्रत्येक सरकारी दफ्तर, सार्वजनिक संस्थान तथा घरों में नरेश दम्पती के चित्र लगे हैं। हम 'जय हिन्द' तथा 'भारत माता की जय' बोल कर प्रसन्नता अनुभव करते हैं जब कि नेपाल का राष्ट्रीय नारा है 'जय देश, जय नरेश।' कोई भी समय आर्य समाजी अत्युत्साह में भर कर विराटनगर या काठमांडू में आर्य समाज के सत्संग के बाद 'भारत माता की जय' का नारा लगा बैठे तो वह वहां के आर्यसमाजियों में उपहास का पात्र बनता है। हम भारत के आर्यसमाजियों ने आर्यसमाज के आन्दोलन को भारत तक सीमित कर अन्य देशों के आर्यों के साथ अन्याय किया है। इस तथ्य को गुरुकुल विराटनगर में एक गोष्ठ में नेपाल के भूतपूर्व मंत्री श्री काशीप्रसाद उपाध्याय ने उलाहने की शैली में जब मेरे सामने रखा तो मुझे उसमें निहित तथ्य को स्वीकार करना पड़ा। वैसे राजनैतिक तथा पारस्परिक सम्बन्धों को लेकर भारत एवं नेपाल के वैचारिक मतभेदों की चर्चा हम शासकों एवं राजनीतिज्ञों के लिये ही छोड़ते हैं। इसके कुछ आर्थिक कारण भी हैं। इसलिये जब उक्त भूतपूर्व मंत्री ने वार्तालाप के दौरान कहा कि भारत का व्यवहार हमारे प्रति मित्रवत नहीं है तो इस पर हमने कोई टिप्पणी नहीं की।

भारत की धरती से भिन्न देश में जब कोई आर्य उपदेशक जाये तो उसका 'भारत की स्वाधीनता में आर्य समाज की देन' जैसे विषयों पर बोलना निरर्थक ही होगा क्योंकि भारत की स्वाधीनता का विषय मारीशस, फीजी अथवा दक्षिण अफ्रीका के लिये अधिक प्रासंगिक नहीं है। प्रत्येक वक्ता को इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए। मैंने जब १४ मार्च को क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन के अवसर पर विराटनगर में ओम् ध्वजा का उत्तोलन किया तो अपने वक्तव्य में मैंने नेपाल के आर्यों को इस अवसर के लिये बधाई तो दी ही, यह भी आशा व्यक्त की कि ओम् ध्वजा से प्रेरणा लेकर नेपाल के आर्य बंधु अपने देश को उन्नत बनायेंगे और नेपाल को प्रगति के मार्ग पर ले जाकर सम्पूर्ण विश्व के कल्याण साधन में तत्पर रहेंगे। मेरे अन्य भाषणों में भी नेपाल देश के प्रति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंगल वाक्यों की ही प्रधानता रही।

नेपाल की राजनैतिक स्थिति

नेपाल का वर्तमान राष्ट्रीय स्वरूप अधिक पुराना नहीं है। जब भारत से आकर महाराजा पृथ्वी नारायण ने इस देश को राष्ट्रीय एक्य प्रदान किया और उसे हिन्दू जीवन मूल्यों पर आधारित रखने का निश्चय किया उस समय भारत में मुगल साम्राज्य अपने पतन की ओर अग्रसर था। मुसलमानों से पादाक्रान्त तत्कालीन भारत को नेपालवासी मुगलान (मुगलों का देश) कहते थे जब कि वे अपने देश (नेपाल) को सच्चा हिन्दुस्थान मानते थे। कालान्तर में नेपाल के राजपरिवार को एक भयानक विभीषिका से गुजरना पड़ा। राजा जंगबहादुर नेपाल के प्रधानमंत्री बने जो 'श्री ३ सरकार' कहलाते थे। उनके वंशज प्रधानमंत्रियों ने धीरे-धीरे नेपाल नरेश की स्थिति एक बंधक जैसी बना दी और देश की प्रशासनिक बागडोर अपने हाथ में ले ली। इन राणाओं के शासन में नेपाली प्रजा पर अमानुषिक अत्याचार हुए। जन साधारण प्रजा राणाशाही के पाशविक पंजों में पड़कर अत्यन्त दुर्दशाग्रस्त हो गई। प्रधानमंत्री का पद राणा परिवार की पैतृक सम्पत्ति बन गया और राजा तथा राजपरिवार के लोग बंदी का सा जीवन व्यतीत करने लगे। चन्द्र शमशेर, मोहन शमशेर आदि राणा वंशीय प्रधानमंत्रियों के शासन काल में नेपाल की पूर्ण अधोगति हुई। सामन्ती दमन अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया था।

अन्ततः महाराजा त्रिभुवन ने एक भारतीय नर्स के माध्यम से भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू को राणाशाही के अत्याचारों का तथ्यात्मक विवरण पत्र के माध्यम से भेजा और नेपाल के महाराजाधिराज कहलाने वाले नरेशों की दुर्दशा का चित्रण करते हुए भारत से सहायता की याचना की। उस गोपनीय पत्र को वह परिचारिका भारतीय दूतावास में ले आई और तत्कालीन भारतीय हाई कमिश्नर श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह (सी० पी० एन० सिंह) को लाकर दिया। राजदूत ने उसे दिल्ली भेजा, जहां पं० नेहरू तथा राष्ट्रपति डॉ० [illegible] प्रसाद ने पारस्परिक विचार-विमर्श के पश्चात् निश्चय किया कि नेपाल को राणाशाही से बचाना चाहिए। नर्स की चतुराई से महाराजा त्रिभुवन किसी प्रकार भारत के दूतावास में लाये गये और वहां से उन्हें वायु मार्ग से दिल्ली लाया गया। दूसरे दिन सारे संसार को यह विदित हो गया कि राणाशाही से त्रस्त महाराजा नेपाल स्वतंत्र भारत की राजधानी में हैं और वे भारत की राजनैतिक सहायता से नेपाल को राणाओं के अत्याचारों से बचाने के लिये बद्धपरिकर हैं।

उधर नेपाल की जनता भी राणाशाही के अत्याचारों से ऊब चुकी थी। प्रजा में विद्रोह के स्वर उभरने लगे और जब उसे भारत का राजनैतिकसम्बल मिला तो राणाशाही का खात्मा सुनिश्चित हो गया। थोड़े दिन दिल्ली में रहकर महाराजा त्रिभुवन स्वदेश लौटे, किन्तु अब वे राणाओं के कैदी, नाम मात्र के शासक नहीं थे। उन्हें भारत जैसे विशाल देश का सम्बल प्राप्त था और प्रजा भी राणाओं को समाप्त करने में उनको सहायता देने के लिये उत्सुक थी।

जनक्रांति के समक्ष जब रूस का जार और फ्रांस का सम्राट भी नहीं टिक सका तो छोटे से देश नेपाल के ये राणा किस खेत की मूली थे। जनता के प्रबल आन्दोलन तथा महाराजा के नेतृत्व में राणा शासन को उखाड़ फेंका और महाराजा को नेपाल का सर्वोच्च शासक वास्तविक रूप में स्वीकार कर लिया गया। नेपाल की इस आजादी की लड़ाई में लोकनायक जयप्रकाश नारायण, चन्द्रशेखर तथा हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार स्व० फनीश्वरनाथ रेणु आदि का भी प्रच्छन्न योगदान रहा है। महाराजा त्रिभुवन के निधन (१९५५) के बाद महाराजा महेन्द्र नेपाल के अधिपति बने। उन्होंने अपने देश में पंचायत राज्य पद्धति चलाई जो प्रजातंत्र का सीमित रूप था। इस शासन पद्धति की कुछ त्रुटियां तथा खामियां निश्चय ही थीं। अन्ततः जनता की राजनैतिक आकांक्षाओं ने जब संघर्षपूर्ण आन्दोलन का रूप लिया तो उसका परिणाम पूर्ण प्रजातंत्र की स्थापना ही थी। आज नेपाल में राजा की स्थिति इंग्लैंड के राजा की ही भांति है जिसे प्रजा का असीम प्यार, सम्मान व भक्ति तो प्राप्त है, किन्तु जनसाधारण द्वारा निर्वाचित सरकार ही वहां का शासन सूत्र संभालती है। यह दूसरी बात है कि अभी तक प्रजातंत्र को स्वीकार करने वाले नेपाल में राजनैतिक परिपक्वता नहीं आई है। पूर्ण बहुमत प्राप्त दल द्वारा शासन चलाना शायद भविष्य में ही सम्भव हो सकेगा। मनमोहन अधिकारी की साम्यवादी सरकार टिक नहीं सकी, वर्तमान प्रधानमंत्री शेरबहादुर देउबा की सरकार भी अनेक दलों के सहयोग से चल रही है। *(क्रमशः)*

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चों में डर पैदा न करें

❑ सीमा

बच्चों के साथ अपने दैनिक व्यवहार में हम बहुत सी भूलें कर बैठते हैं और उनका बच्चों के सम्पूर्ण जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। बहुत से मां-बाप अपने लाभ के लिए या बच्चों को सुधारने के लिए उन्हें तरह-तरह के भय दिखाया करते हैं। अबोध बच्चों को अक्सर "हौवा" से डराया जाता है। "जल्दी से जा दुबक जा नहीं तो हौवा आ जाएगा" ऐसे भय प्रधान संकेत बच्चों को दिए जाते हैं। अबोध बालक समझने लगता है कि "हौवा" नाम की कोई भयानक वस्तु है जो उसे खा जाएगी या पकड़ ले जाएगी। कुछ बड़ा हो जाने पर जब चलने फिरने लायक होता है तो कुत्ता, शेर पकड़ ले जाने वाले साधु बाबा का डर दिखाया जाता है। प्रत्यक्ष डर दिखाने के साथ-साथ ही घर में कहे जाने वाले किस्से, कहानी जिसमें राक्षस, भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि की प्रधानता रहती है बच्चों में कुछ कम भय पैदा नहीं करते। बहुत से घर वाले तो अमुक स्थान, पीपल का पेड़, मरघट, कब्र आदि को भूत प्रेत का निवास बताकर बच्चों को वहां जाने, चौराहा लांघने से रोकते हैं। किसी भी रूप में बच्चे को डराने की प्रवृत्ति बहुत हानिकारक सिद्ध होती है। इन बातों से बालक के कोमल मन पर भय की भावना इतनी दृढ़ता से जम जाती है कि वह जीवन भर नहीं छूट पाती। वह अंधेरे में कोई कपड़ा या वस्तु हवा से हिलती-डुलती देखकर उसकी घिग्घी बंध जाती है। जिन वस्तुओं का नाम लेकर डराया जाता है यथा कुत्ता, बिल्ली, बन्दर, भालू, सांप, छिपकली इनके सपने में आते ही बालक होश-हवाश खो बैठता है। भयावनी कहानियां उसकी विचारधारा और कल्पना को उसी दिशा में मोड़ देती है जिससे बालक अकारण ही भयभीत होता रहता है। बातचीत में, व्यवहार में, बच्चों के साथ सख्ती से पेश आना, उन्हें झिड़क देना भी बच्चों को दूसरे ढंग से भयभीत बना देता है। ऐसा बालक बात-बात में दूसरों से डरने लगता है। कुछ करने से पूर्व झिझकता है। धीरे-धीरे वह इतना बढ़ जाता है कि वह कुछ नहीं कर पाता। कई बार किसी पराजय अथवा कटु अनुभव होने पर बालक को चिढ़ाना, धिक्कारना, उस पर व्यंग कसना भी उसके साहस को कमजोर करना है। कुछ करने से पहले ही असफलता की, हानि की भविष्यवाणी कर देन भी बच्चों में एक प्रकार का भय पैदा करना है जिससे बालक फिर इस तरह के कामों में हाथ डालने पर सहम जाता है। दिन भर दिए जाने वाले भय प्रधान संकेत "देख ऐसा मत करना, अमुक वस्तु को मत छूना, शीशा मत तोड़ देना" आदि आदेश जो भय दिखाते हुए दिए जाते हैं और भूल हो जाने पर जब बच्चों को डांट फटकार सुननी पड़ती है तो बालक निर्भय होकर कुछ नहीं कर पाता वस्तु के टूट जाने, नुकसान हो जाने के भय से बालक इतना दब जाता है कि बात-बात में वहम करने लगता है, हिचकता है। किसी महत्त्वपूर्ण एवं जोखिम भरे काम में हाथ डालने की उसकी हिम्मत ही नहीं होती और जो व्यक्ति जीवन में कोई जोखिम नहीं उठा सकता वह कुछ कर भी नहीं सकता। किसी भी रूप में क्यों न हो बच्चों में भय के संस्कार पैदा कर देना उनके स्वाभाविक जीवन विकास क्रम में अवरोध पैदा कर देना, निर्द्वन्द्व, निर्भर बालक जल्दी प्रगति करता है, बजाय एक भयभीत मन स्थिति के बच्चे के, जो बालक कुत्ते, बिल्ली, छिपकली, हौवा, भूत, चुड़ैल के नाम से घिघियाते हैं, अकेले में रहने से परेशान हो जाते हैं, जो नाना भयप्रद कल्पनाओं में डूबते रहते हैं। उनसे क्या आशा की जा सकती है कि वे जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण काम कर सकेंगे?

कोई नुकसान हो जाए, वस्तु टूट-फूट जाए, बालक को कोई असफलता मिल जाए तो उसे आप न टोकें, न कोई दोष दें, न मीनमेख निकालें, गिरे हुए बालक को कोसने के बजाए उसे उठने, असफल हो जाने पर सफलता के लिए प्रोत्साहित कीजिए, खतरों, दुर्घटनाओं के लिए उसे डांट फटकार देने की अपेक्षा उसका हौसला बढ़ाइए। तभी उसका जीवन आने वाली बहुत सी असफलता, दुर्घटना, कठिनाइयों को झेल सकेगा। बच्चों से जो नुकसान हो गया वह तो पूरा होने का नहीं। अतः बच्चों को उनकी भूलों पर, असफलता पर, असावधानी पर शर्मिन्दा न करें, उन्हें न कोसें। बाल विशेषज्ञों का कहना है कि बच्चों को सहज रूप से खेलने-कूदने देना चाहिए। उनको बात-बात पर टोकना डिक्टेटर का सा हुकम चलाना, दण्ड देना अनुपयुक्त है। इससे बालक का मनोबल क्षीण होता है और वह सहमा-सहमा रहने लगता है।

एक बात और सबसे महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता, अभिभावकों को भूलकर भी अपने बच्चों के समक्ष कोई भय प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। वस्तुतः बालक अपने अभिभावकों को सर्व समर्थ समझता है और इसी विश्वास से वह उनके संरक्षण में रहकर निडर रहता है। लेकिन वे जब भययुक्त आचरण करते हैं तो बालक का विश्वास डगमगा जाता है। साथ ही वह भी भयभीत होने लगता है। जो मां-बाप स्वयं डरपोक होंगे तो उनके बच्चे साहसी, निडर बन जाएं ऐसा सम्भव नहीं। मां-बाप को चाहिए कि अपने बच्चों में निर्भयता, साहस की भावना जगाने के लिए स्वयं इस तरह का आचरण व्यवहार करें। इसमें कोई संदेह नहीं कि बाल्यकाल में बच्चों के कोमल मन में जमी हुई भय की भावना उन्हें जीवन भर के लिए अकर्मण्य, कायर एवं भीरू बना देती है। उन्हें एक प्रकार की मानसिकता गुलामी का जीवन बिताना पड़ता है, क्योंकि संसार में निर्भयी ही महत्त्वपूर्ण स्थान पा सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रचार में प्राप्त सहयोग

२०० रु० देने वाले

सर्वश्री :- गुलजारी लाल आर्य–गोरखपुर। राज विर्जन-अम्बाला। प्रेम कृष्ण बहल-दिल्ली। आर्य समाज सदर-झांसी। काशी प्रसाद शर्मा-छतरपुर। ब्रह्मरानी पाठक-हावड़ा। पन्नालाल-मुजफ्फरपुर। नरेश मोहन-दिल्ली।

१०१ रु० देने वाले

सर्वश्री :- अनन्त सिंघल-मेरठ। वीरेन्द्र कुमार सिंह-मेरठ। जयसिंह जी, गणपति जी-धनबाद। प्रिं० डी० ए० वी० कालेज फॉर गर्ल्स-यमुनानगर। बी० सी० सूद-कांगड़ा। शिवचरण शर्मा-लोट। जितेश शर्मा-दिल्ली। रामकिशन-दिल्ली। राजेश्वर-नयी दिल्ली। शीतलाप्रसाद आर्य-कलकत्ता। वीरेन्द्र कुमार गोयल-बांरा। एस० एल० गुप्ता-यमुनानगर। डॉ० नरेन्द्र सिंह-सहारनपुर। आज्ञाराम जुनेजा-अलीगढ़। रमेशचन्द्र प्रमोद कुमार-मेरठ। शंकरलाल पोद्दार-मुगलसराय। रामरक्ष पाण्डेय आर्य-बस्ती। मोतीलाल प्रजापति-सिरोही।

१०० रु० देने वाले

सर्वश्री :- आर्य समाज ठाकुरद्वारा-मुरादाबाद। दीपचन्द्र विजयकुमार-। महाराजसिंह-इटावा। गौरीशंकर कोठारी-सूरतगढ़। एन० डी० बजोरिया-नागपुर। आर्य समाज बिगोपुर-महेन्द्रगढ़। रमेशचन्द्र शर्मा-बहादुरगढ़। विमलभूषण गुप्ता-जाजपुर। स्वामी मेधानन्द-बम्बई। कमल पी० पटेल-बलसाड़। जगदीश प्रसाद दीक्षित-थाना। वासुदेव महतो-बेगुसराय। हीरालाल मुरारीलाल-गंगटोक। उमरावसिंह-अलवर। जगदीशप्रसाद-मन्दसोर। शकुन्तला खन्ना-दिल्ली। लीलावती गुप्ता-दिल्ली। डॉ० आर० के० गुप्ता-नयी दिल्ली। शिवकुमार सोनी-अम्बाला। रामकृपाल सिंह-गाजियाबाद। प्रभाकर पिरगुरियाल-कोल्हापुर। विजेन्द्रपाल सिंह-पीलीभीत। एम० एल० शर्मा-प्रतापगढ़। आर्य समजा बंगा-नवांशहर। जयराज छोटेलाल आर्य-मुम्बई। अरविन्द कुमार-नयी दिल्ली। विष्णुदेव आर्य-व्यावर। प्रेमक्रान्ति अरोड़ा-चंडीगढ़। राजकुमार भल्ला-दिल्ली। विष्णु सोनी-विलिमोरा। प्यारे लाल विश्वकर्मा-दिल्ली। सतीशचन्द्र-फिरोजपुर।

५१ रु० देने वाले

सर्वश्री :- राम जी सहाय-इलाहाबाद। रामचन्द्र महेन्द्र-सीतापुर। अनोखे लाल आर्य-मैनपुरी। वेदप्रकाश आर्य-इटावा। डॉ० राधेश्याम बंसल-गाजियाबाद। सहदेव प्रसाद गुप्ता-फर्रुखाबाद। नत्थनसिंह राठौड़-बदायूं। नत्थुराम-बम्बई। प्रेमसिंह राठौर-चित्तौड़गढ़। सत्यनारायण सिंह-हैदराबाद। बी० पी० देशमुख-अहमदाबाद। विद्युल क्लाथ मर्चेंट-निजामाबाद। कन्हैयालाल किशुक-उज्जैन। जगदीश कुमार शर्मा-नयी दिल्ली। विशम्बर-कृष्णनगर। पृथ्वीराज टंडन-बड़ौदा। रोहिताश्व कुमार-बम्बई। नन्दलाल बंकटलाल-परलीवैजनाथ। रामचन्द्र प्रसाद सर्राफ-समस्तीपुर। कालीप्रसाद सिंह-हजारीबाग। हनुमानदास महन्त-अलवर। शंकरलाल शर्मा-जयपुर। रामशंकर तिवारी-वालाघाट। शालिक राम आर्य-जौनपुर। ओमप्रकाश-हरिद्वार। शुभकरण दास-बहराइच। एम० पी० सरोज-उन्नाव। रामनारायण पाण्डे-बाराबंकी। भगवान दास डांगा-कलकत्ता। ध्रुव कुमार लारी-देवरिया। आर्य समाज-फरीदकोट। हरेन्द्र मिश्र-बक्सर। मुरारीलाल-खरगौन। आर्य समाज छोटी सादड़ी-चित्तौड़गढ़। राम कुमार गुप्ता-दिल्ली। रामचन्द्र मिश्र-दरभंगा। राधे मोहन सिंह-जौनपुर। सुभाष चन्द्र झा-सहरसा। रामचरित्र गुप्ता-गोरखपुर। कृष्ण कुमार शर्मा-मेरठ। देवदत्त शर्मा-मण्डी। आर० एस० बधवा-नयी दिल्ली। गणेश प्रसाद सरीन-धौलपुर। फूलवती बंसल-दिल्ली।

२५ रु० देने वाले

सर्वश्री :- डॉ० सन्तराम आर्य-बाराबंकी। जयदत्त उप्रेती-अल्मोड़ा। मोहन लाल अग्रवाल-लेन्सीडाउन। घनश्याम योगी-नांदेड़। सत्येश पुस्तक भंडार-नाथद्वारा। दर्शनलाल अग्रवाल-मुरैना। के० जे० श्रीकृष्ण-गंजाम। के० एल० मदान-मुम्बई। नरोतम जेठुलाल-मुम्बई। सूर्यदेव पंडित-सीतामढ़ी। बुद्धदेव आर्य-नबागढ़। प्रतापसिंह राठौर-मंडी। चतुरानन्द मिश्र-बक्सर। शंकर लाल आर्य-कलकत्ता। शंकर भानु लामानी-रायचूर। सिद्धइया मुषाड़ी-कोलर। भारतभूषण-अम्बेडकर नगर। प्रदीप कुमार गुप्त-जौनपुर। लक्ष्मणसिंह चौहान-मैनपुरी। भारतभूषण-अकबरपुर। जी० डी० पांडे-बरेली। राजमणी शुक्ल-मुम्बई। मुकेश जनरल स्टोर्स-भाभर। इतवारी लाल गुप्ता-गिरीगोह। मा० कर्णपाल-सहारनपुर। हरिद्वारी-पटना।

१० रु० देने वाले

सर्वश्री :- रामनिवास विद्यार्थी-मेरठ। पवन भंवरलाल-बुलढाणा। ब्रह्म प्रसाद गुप्ता-गंजाम। आर० वी० शर्मा-नई दिल्ली। प्रकाश महेश्वरी-बुलन्दशहर। बालकृष्ण युगल-नई दिल्ली। श्यामसुन्दर साह-दुमका। रामसिंह गुप्ता-ग्वालियर। के० आर० पाटिल-जलगांव। स्वामी सच्चिदानन्द-गोरखपुर। गोविन्दा-नातूर। गंगाराम पांचाल-गाजीपुर।

सर्वश्री :- कौशल्या ग्रोवर-देहरादून ५००० रु०। पी० एल० भारत-बम्बई ५०० रु०। श्री ऋचा मेहता-बंगलौर ५०० रु०। स्वामी योगी राज-मुजफ्फरनगर ५०० रु०। भद्रसेन छाबड़ा-बलसाड़ ५०० रु०। डी० वी० बत्रा- नई दिल्ली ३०० रु०। त्रिलोकी नाथ हितैषी -फैजाबाद ३०० रु०। डी० पी० तिवारी-गोवा २५० रु०। के० एल० जुनेजा-अलीगढ़ २५१ रु०। डॉ० नालिनीनाथ-वाराणसी २५० रु०। रामप्रकाश शुक्ला-जालौर १७० रु०। रामनिवास दरक-निलंगा १५१ रु०। स्वामी रामस्वरूप-कांगड़ा १५० रु०। नरेन्द्र कुमार-सहारनपुर १५० रु०। प्रेम पोखरियाल-पौड़ी गढ़वाल १२५ रु०। सीताराम आर्य-समस्तीपुर १२५ रु०। सी० पांडुरंगा-हैदराबाद ६१ रु०। रामशरण वैश्य-रायबरेली ६० रु०। नकुल प्रसाद बरनवाल-बीकानेर ५५ रु०। यशपाल महेश-बम्बई २५०रु०। टी० डी० चान्दना-आगरा ३० रु०। डॉ० एस० डी० शर्मा-मेरठ ३१ रु०। चन्द्रशेखर प्रसाद सिंह-चम्पारण ३५ रु०। योगेन्द्र राय-कानपुर ३० रु०। रामनारायण शर्मा-सरगुजा ३० रु०। शिवलाल यादव-पटना १५ रु०

–सभी दानदाताओं का धन्यवाद-व्यवस्थापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२६ अक्टूबर जिनकी जयन्ती है

योद्धा सम्पादक : गणेश शंकर विद्यार्थी

❑ जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

इलाहाबाद के "लीडर' के २१ फरवरी, १९२४ के अंक में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के बारे में एक लेख छपा था जिसमें कहा गया था— प्रताप के उस प्रभाव के पीछे क्या है? गणेश शंकर विद्यार्थी का व्यक्तित्व। अपने व्यवहार में वे बिल्कुल कृत्रिमता नहीं रखते, उनका हृदय गरीबों के लिए द्रवीभूत हो जाता है और उनके मुख मण्डल से उनके दीर्घ कष्ट सहन और पारदर्शी सच्चाई की आभा छिटकती है। यह गणेश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व का अपना आकर्षण है उन्होंने बहुत कष्ट उठाये हैं, अनेक मुसीबतों का सामना किया है, उनके जीवन में असंख्य दुःखप्रद दिवस तथा चिन्ताकुल रजनी व्यतीत हुई हैं। उन्हें तीन बार जेल भेजा जा चुका है और कष्ट सहिष्णुता में उनका रेकार्ड अद्वितीय है।

लेखक थे श्री बनारसी दास चतुर्वेदी जो उस समय महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में रह रहे थे और जो पूर्वी अफ्रीका में पूर्वी अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में जा रहे थे। परिस्थितियां ऐसी बनती गयीं, जो उन्हें पत्रकारिता में ले आयीं। गणेश जी का जन्म अवश्य प्रयाग में हुआ परन्तु उनकी शिक्षा अपने पिता के स्कूल में पहले मुगावली में और फिर विदिशा में हुई। उनके पिताजी मुगावली के ऐंग्लो-वर्नाकुलर मीडिल स्कूल में सैकेंड मास्टर थे। वे उर्दू और फारसी के बहुत बड़े जानकार थे और उन्होंने अंग्रेजी का भी अध्ययन कर लिया था। इसलिए गणेश शंकर जी को पहले उर्दू पढ़ाई गयी और फिर अंग्रेजी और जब उनके पिता का तबादला विदिशा हो गया जो उस समय भेलसा कहलाता था, तो गणेश जी की पढ़ाई वहां चालू रही। भेलसा से उन्होंने अंग्रेजी मीडिल की परीक्षा पास की जिसमें पहली बार हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में लिया था।

मीडिल पास करने के बाद उनके पिताजी ने उन्हें नौकरी करने के लिए कानपुर भेज दिया जहां गणेश जी के बड़े भाई शिवव्रत नारायण नौकरी कर रहे थे। विदिशा में अंग्रेजी मीडिल से आगे पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं थी, इसलिए उनके पिता जी ने यही सोचा कि नौकरी करेगा तो खर्च भी चलायेगा और परिवार का भी बोझ कम होगा। परन्तु उनके बड़े भाई ने यह पसन्द नहीं किया कि ऐसे कुशाग्र बुद्धि बालक को इतनी छोटी उम्र में पढ़ाई से हटा दिया जाये। इसलिए उन्होंने उनके लिये प्रवेश की परीक्षा की पाठ्यपुस्तकें खरीद दीं और यह सुझाव दिया कि वह घर जाकर परीक्षा की तैयारी करे और दो वर्ष बाद कानपुर के क्राइस्ट चर्च कालेज के केन्द्र से यू० पी० की प्रवेश परीक्षा का इम्तहान दे। श्री जयनारायण का तबादला फिर मुगावली हो गया था और गणेश जी ने मुगावली में रहकर ही पढ़ाई की उन्होंने १९०७ में द्वितीय श्रेणी में प्रवेश परीक्षा पास की। इस परीक्षा में उन्होंने द्वितीय भाषा के रूप में फारसी को लिया था जिसका ज्ञान उन्हें विरासत में प्राप्त हुआ था। प्रवेश परीक्षा पास करने के बाद वे इलाहाबाद कायस्थ पाठशाला कालेज में पढ़ने चले गये। परन्तु परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी और कालेज की पढ़ाई सात-आठ महीने ही हो सकी लेकिन इलाहाबाद के प्रवास में वे श्री सुन्दर लाल के सम्पर्क में आये। **उन दिनों इलाहाबाद से उर्दू का प्रसिद्ध पत्र 'स्वराज्य' निकल रहा था। इसके आठ सम्पादकों को सजा दी गयी, जिनमें तीन को कालेपानी की सजा दी गयी थी। श्री सुन्दर लाल साप्ताहिक "कर्मयोगी" निकाल रहे थे, जिसकी प्रसार संख्या दस हजार प्रतियां हो गयी थी।**

श्री सुन्दर लाल के कहने से श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'स्वराज्य' के लिए उर्दू में और 'कर्मयोगी' के लिए हिन्दी में टिप्पणियां लिखीं। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की पत्रिकारिता के संस्कार भी लोकमान्य तिलक की पत्रकारिता के प्रति आदर और 'स्वराज्य' तथा 'कर्मयोगी' के सम्पादकों के प्रति निष्ठा से पल्लवित हुए। लेकिन श्री गणेश शंकर विद्यार्थी बहुत दिन प्रयाग नहीं रह सके और कानपुर के करेंसी आफिस में उन्हें तीन रुपये मासिक पर नौकरी मिल गयी। यह नौकरी वे एक साल ही कर पाये।

इलाहाबाद में ही श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की रुचि "स्वराज्य" और "कर्मयोगी" के कारण क्रांतिकारी आन्दोलन में हो गयी। कलकत्ता से श्री चितरंजन दास, श्री बिपिनचन्द्र पाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और श्री सुबोधचन्द मलिक ने एक अंग्रेजी दैनिक वंदेमातरम् निकाला और उसके सम्पादक बनाये गये थे श्री अरविन्द घोष। वह पत्र क्रांतिकारियों का एक अखिल भारतीय पत्र था और बाद में अंग्रेजी में ही उसका साप्ताहिक संस्करण इसीलिए निकाला गया कि वह देश के कोने-कोने में भेजा जा सके। कानपुर में श्री प्रयाग नारायण शिवाला के अहाते में राय देवी प्रसाद पूर्ण ने एक वाचनायल खोल रखा था जिसमें यह पत्र आता था। "बन्देमातरम्" को पढ़ने के लिए ही श्री गणेश शंकर विद्यार्थी उस वाचनालय में जाया करते थे। उसी वाचनालय में उनकी भेंट श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा से हुई। श्री अरोड़ा लाला हरदयाल द्वारा क्रांतिकारी गतिविधियों में दीक्षित हो चुके थे। उनकी श्री गणेश शंकर विद्यार्थी से मित्रता हो गयी और उनकी सिफारिश पर विद्यार्थी जी को उसी स्कूल में बीस रुपये पर एक अध्यापक की जगह मिल गयी। परन्तु स्कूल के अध्यापक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी से इसलिए नाराज हुए कि वे "कर्मयोगी" पढ़ते थे जो आपत्तिजनक पत्र समझा जाता था। ९ दिसम्बर, १९०९ को उन्हें नौकरी मिली थी परन्तु वह एक साल भी नहीं चल पायी।

गणेश जी राजनीति लेखन को महत्त्व देते थे। परन्तु "सरस्वती" की जो नीति थी, उसमें इस प्रकार के लेखन की अधिक गुंजाइश नहीं थी। इसलिए उन्हें जब प्रयाग में साप्ताहिक "अभ्युदय" में सहायक सम्पादक का प्रस्ताव मिला तो उन्होंने स्वीकार कर लिया और वे "अभ्युदय" में चले गये। "अभ्युदय" वैसे तो प्रसिद्ध पत्र था परन्तु उस समय देश में उग्र राजनीतिक चेतना थी और "अभ्युदय" नरमदली पत्र समझा जाता था। इसी बीच उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और वे स्वास्थ्य लाभ के लिये कानपुर चले आये। कानपुर में उनके मित्रों की राय हुई कि कानपुर से ही पत्र निकाला जाये और तीन मित्रों, श्री गणेश विद्यार्थी, श्री शिवनारायण मिश्र और श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा ने मिलकर "प्रताप" नाम से एक साप्ताहिकपत्र निकालने का निर्णय किया। कोरोनेशन प्रेस के मालिक श्री योदानन्दन जो इस पत्र को निकलने के लिए राजी हुए, इसलिए उन्हें भी साझीदार मान लिया गया। श्री अरोड़ा जी कुछ समय बाद हट गये और 'प्रताप' का अपना प्रेस भी हो गया। लेकिन श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने "प्रताप" के द्वारा न केवल कानपुर नया प्राण फूंक दिया बल्कि एक ऐसा समाचार पत्र दिया जो सारी हिन्दी पत्रकारिता की अस्मिता और शक्ति का प्रतीक बन गया।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी को १९२१ से लेकर १९३१ तक पांच बार जेल जाना पड़ा और यह प्रायः "प्रताप" में प्रकाशित किसी समाचार के कारण होता था। उस समय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी को शिकोहाबाद के एक थानेदार के बारे में, जिनकी जांच हो रही थी, भ्रष्टाचार का आरोप लगाने पर मानहानि के मुकदमें में ४०० रुपये जुर्माने या छह महीने की सजा हो गयी। गणेश जी जेल चले गये। बाद में उनके साथियों ने जुर्माने की रकम अदा कर दी, लेकिन फैसले के विरुद्ध अपील कर दी। इलाहाबाद न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि असहयोगी या कांग्रेसी होने से कोई आदमी विश्वास और सत्य की सीमा से बाहर नहीं निकाला जा सकता। "प्रताप" सम्पादक ने थानेदार सम्बन्धी बातें अच्छी तरह से जांच पड़ताल के बाद नेक नीयती से ही छापीं। सार्वजनिक हित की दृष्टि में ऐसा करने के लिए वे दोषी नहीं ठहराये जा सके। न्यायालय ने यह भी निर्णय दिया कि थानेदार के खिलाफ रिश्वत लेने के जो तेरह मामले पेश किये, उनमें चार मामलों पर उस पर मुकदमा चलाया जाये और वह मुकदमा सेशन जज की अदालत में हो और उस पर रिश्वत लेने की जो जांच रुक गयी थी, वह आगे बढ़ायी जाये। इस मुकदमे में ४१ गवाह पेश किये गये थे और "प्रताप" के दो हजार रुपये व्यय हुए। इस पर गणेश जी ने लिखा था— "प्रताप" गरीब पत्र है, इतने रुपये उसके पास न थे, इधर-उधर से लेकर काम चलाना पड़ा, तब भी यह नतीजा है तो हर तरह के अंधेरे को देखते रहने की अपेक्षा हम इसे अच्छा समझेंगे कि "प्रताप" बंद हो जाये।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की पत्रिकारिता के लिये अनेक अवदान हैं। एक तो वे आदर्श हैं, वह निर्भय हैं और दुःख झेलने की वह क्षमता है जो संसार के किसी भाषा में पत्रकार के लिये प्रेरणा-स्रोत बने। उनमें लोक संग्रह की भावना भी बहुत अधिक थी, वे स्वयं महापुरुष थे, परन्तु उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता में अपने जैसे ही अनेक पत्रकार निर्मित करके दिये। श्री माखनलाल चतुर्वेदी, पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री श्रीराम शर्मा, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, पं० बालकृष्ण शर्मा "नवीन", श्री दशरथ प्रसाद त्रिवेदी, श्री मुकुटविहारी वर्मा आदि ऐसे अनेक प्रतिष्ठित पत्रकार हैं जो स्वयं मार्ग-द्रष्टा माने गये। यद्यपि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने कभी "प्रताप" में कार्य नहीं किया, परन्तु उन्हें प्रोत्साहन देने में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की भूमिका कम नहीं थी।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का राष्ट्रीय जीवन के लिये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक दूसरा योगदान भी है। वे पहले राष्ट्रीय नेता थे, जिन्होंने काकोरी षड्यंत्र केस के अभियुक्तों के मुकदमे की पैरवी कराई और कानपुर को क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र बनने दिया। श्री भगतसिंह, "प्रताप" कार्यालय में बलवन्त सिंह के नाम से अज्ञातवास कर रहे थे और श्री चन्द्रशेखर आजाद, श्री विजयकुमार सिन्हा तथा राजकुमार सिन्हा जैसे क्रांतिकारी गणेश जी से प्रेरणा पाते थे। यही कारण था कि जब लाहौर षड्यंत्र केस में अभियुक्तों ने भूख हड़ताल कर दी, तो उसे तुड़वाने के लिय श्री गणेश शंकर विद्यार्थी से अनुरोध किया गया कि वे लाहौर जाकर सरदार भगत सिंह, श्री बटुकेश्वर दत्त तथा अन्य क्रांतिकारियों से मिलें क्योंकि उनका उन क्रांतिकारियों पर विशेष प्रभाव समझा जाता था। जब वे सहयोगी सरदार भगत सिंह की फांसी का विरोध करने के लिये हड़ताल कराने का आह्वान कर रहे थे, तभी ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने कानपुर के संभावित आक्रोश को मोड़ देने के लिये उसे हिन्दू-मुस्लिम दंगे के रूप में परिवर्तित करा दिया और वहीं सम्भवतः विद्यार्थी जी की जिन परिस्थितियों में मृत्यु हुई, वह एक षड्यंत्र का परिणाम थी। उत्तेजना में आकर किसी ने उन्हें नहीं मारा, उन्हें मारने के लिये ही लोग भेजे गये थे। कुछ वर्ष पूर्व जब रायबरेली की अदालत में मुंशीगंज गोलीकांड के मामले में "प्रताप" पर मानहानि का मुकदमा चल रहा था तो स्थानीय गवर्नर महोदय की यह राय बतायी जाती थी कि जब तक कानपुर का "प्रताप" जीवित है, उत्तर प्रदेश में शक्ति स्थापित नहीं रह सकती। गणेश जी की बलि ली गयी, परन्तु अंग्रेजी राज तक "प्रताप" जीवित रहा और उसने उत्तर प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्यशाही से लड़ने के लिये भारतवर्ष का अभेद्य दुर्ग बना दिया।

गणेश जी का शव २५ मार्च, १९३० को अस्पतालों की लाशों में पड़ा मिला। इतना फूल गया था कि साधारणतया पहचान नहीं हो सकती थी। २१ मार्च को उनका अन्तिम संस्कार हुआ परन्तु उनका यशः शरीर कभी क्षय नहीं होगा।

आखिर वेद क्या है?

आज के युग में

वेदों की प्रासंगिकता

श्री अरविन्द के एक अत्यन्त मार्मिक, ज्ञानवर्धक एवं खोजपूर्ण निबन्ध का भाषान्तर

३२ पृष्ठ की नयनाभिराम कवरयुक्त सुन्दर पुस्तिका
डाक व्यय सहित १५/- अग्रिम भेजकर मंगाएं।

श्री अरविन्द चेतना समाज
(शिक्षात्मक न्यास पंजीकृत)
६५६२/९, चमेलियान रोड, दिल्ली-११०००६
फोन : ०११-३५५६२१२, फैक्स : ०११-७५२३२००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज सुभाषनगर, फैजाबाद में श्रावणी पर्व

फैजाबाद रक्षाबन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक आर्य समाज सुभाषनगर, फैजाबाद के वेद मन्दिर में वेद प्रचार सप्ताह हर्षोल्लास से मनाया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिदिन सन्ध्या, यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा सायंकाल विद्वानों के प्रवचन एवं भजनोपदेश हुए। यमुनानगर (हरियाणा) से पधारे पं० ज्ञानेश्वर "भारती" जिनका पूर्वनाम मोहम्मद मुस्तकीम था तथा मुरादाबाद (उ० प्र०) से पधारे पं० ज्ञान प्रकाश शर्मा 'विद्यावाचस्पति' ने वेदों पर सम्यक् चर्चा की। और उन्होंने बताया कि श्रावणी पर्व प्राचीन काल से मनाने की परम्परा है और इसी दिन ब्रह्मचारियों का 'वेदारम्भ' संस्कार सम्पन्न कर यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। हम इस दिन वेदों की रक्षा का संकल्प लेते हैं इसी परिपेक्ष्य में इसे रक्षाबन्धन के रूप में भी मनाते हैं। श्री भारती ने कहा कि परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में संसार के सभी मनुष्यों के लिये चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा के हृदयों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद का ज्ञान प्रकाशित किया जिसे श्रुति परम्परा से आजतक विद्वानों द्वारा कण्ठाग्र करके सुरक्षित रखा जाता रहा है। वेद का अर्थ "ज्ञान' है। संसार के सभी मजहबों में जो-जो सब अच्छी बातें हैं वो वेदों से ही प्राप्त की गयी हैं। मनुष्यों में स्वाभाविक ज्ञान जन्म से होता है किन्तु नैमित्तिक ज्ञान 'वेद' को सृष्टि के आरम्भ में प्रदान कर विश्व के मानवों को मनुर्भव अर्थात् "मनुष्य" बनने का उपदेश किया है। आज वेद ज्ञान से विमुख होने के कारण मानव-मानव आपस में ही संघर्षरत हैं। श्री ज्ञानेश्वर जी ने यह भी बताया कि वेदों में इतिहास तथा जीवन चरित्र नहीं है। वेदों में परमात्मा ने **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अर्थात् मानव को आर्य या श्रेष्ठ बनाने की शिक्षा दी है। वेदों का ज्ञान शाश्वत है। समागत विद्वानों ने वेदों पर विस्तृत व्याख्या करते हुये बताया कि वेदों में पूर्व से ही विद्यमान एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को कुरान में तौहीद के रूप में अपनाया गया है। वेद प्रतिपादित ईश्वर, जीव, प्रकृति के त्रैतवाद के नियम को भी कुरान में खुद, रुह व माद्दा हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम एवं योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन दर्शन में जिन उदात्त गुणों, आदर्शों एवं मानवीय मूल्यों का दिग्दर्शन होता है जो सब वेदों द्वारा ही प्रतिपादित हैं जिनका आदि स्रोत ये चारों वेद ही हैं। धर्म के दस लक्षणों धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध की व्याख्या करते हुए बताया कि इन गुणों को धारण करने से मनुष्य धार्मिक होता है, वह चाहे जिस मजहब का हो। श्री पं० ज्ञान प्रकाश शर्मा ने इस अवसर पर आर्य समाज के द्वारा किये गये समाज सुधार के कार्यों की समीक्षा करते हुये कहा कि लाला लाजपतराय, पं० राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महान् क्रान्तिकारियों के हृदय में देश की भावना का संचार आर्य समाज ने ही किया। महिलाओं के उत्थान हेतु उन्हें शिखा, वेदाध्यन तथा यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार आर्य समाज की ही देन है। स्वराज शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में किया और १८५७ ई० के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में आजादी के दीवाने क्रान्तिकारियों का मार्ग-दर्शन कर महान् योगदान किया। जन्माष्टमी पर कृष्ण के जीवन पर विचार व्यक्त करते हुये आमंत्रित विद्वान ने बताया कि श्री कृष्ण का जीवन आप्त महापुरुषों के सदृश है। वे महान नीतिज्ञ थे।

प्रसंग के अनुसार श्री राम प्रकाश आर्य एवं राजनारायण आर्य ने प्रतिदिन युगल गीत गाये। वेद प्रचार सप्ताह के इस अवसर पर नन्हें-नन्हें बच्चों ने भी अपने गीत प्रस्तुत किये। यज्ञ सम्बन्धी व्याख्या श्री सरजू प्रसाद आर्य ने की तथा ब्रह्मा रूप में पं० गया दत्त जी ने योगदान किया। इस अवसर पर श्री धर्मेन्द्र आर्य ने आमंत्रित विद्वानों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। आर्य समाज के कार्यवाहक प्रधान श्री राम प्रकाश आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा मंत्री राजनारायण आर्य ने श्रोताओं एवं कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आन्तरिक वस्त्रों में अग्रणी-ग्रोवर सन्स

आजकल के इस कम्प्यूटर युग में महिलाओं की इच्छाओं के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं में भी अनेक परिवर्तन हुए हैं। कल की सुविधाएं आज की जरूरत बन गई हैं इस तरह महिलाओं के रहन-सहन में आधुनिक क्रांति आई है। लेकिन रेडीमेड वस्त्रों में पहला क्रांतिकारी परिवर्तन आज से करीब १०० साल पहले ही हो गया जब फ्रांस के हरनाम रैडशेली ने पैरिस में ब्रेजियर का आविष्कार किया था। तब से आज तक में ब्रेजरी उद्योग में अनेक परिवर्तन हुए हैं। आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व महिलाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए चमन लाल ग्रोवर के नाम से अंतरराष्ट्रीय स्तर के ब्रा एवं पैंटीज का उत्पादन शुरू किया।

ग्रोवर सन्स के ब्रा एवं पैंटीज सादे डिजाइनों के साथ-साथ एक से बढ़कर एक फैंसी डिजाइनों में उपलब्ध हैं। जो सूती, रूबिया, टैरीकाट, कैमारिक तथा विभिन्न सिंथेटिक कपड़ों तथा नायलान लैस के कपड़ों से बनाई जाती हैं। दिल्ली के प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र करोल बाग के ग्रोवर सन्स के डायरेक्टर राकेश ग्रोवर ने एक भेंट में बताया कि ग्रोवर सन्स द्वारा बनाए जा रहे स्पर्श, शालिनी, सरिता ब्रा एवं पैंटीज की फैंसी रेंज के सभी प्रान्तों के हर वर्ग की महिलाओं के फैशन के अनुसार आधुनिक डिजाइन में बनाए जाते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाचार दर्शन

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वेद प्रचार सप्ताह

मुम्बई : आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा रविवार १० से १७ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार थे। श्रीमती सुनीता शास्त्री, श्री ललित साहनी, श्रीमती संगीता कपूर के भजन एवं प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार जी के प्रवचन हुए। १२ अगस्त को आर्य महिला समाज का आयोजन किया गया। अध्यक्षता श्रीमती लक्ष्मारानी गोयल स्वतंत्रता सेनानी ने की। १७ अगस्त को यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात विमल स्वरूप सूद प्रधान— आर्य समाज की अध्यक्षता में श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया गया। बंगलौर से पधारे स्वामी डॉ० सत्यम् जी ने विदेशों के अनुभव सुनाते हुए सर्वत्र वेद प्रचार पर बल दिया। श्री सत्यदेव वर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी वर्मा (मंत्री— हरियाणा सरकार) ने श्रोताओं को वेदानुकूल चलने, सुसमृद्ध संस्कृत भाषा को अपनाने तथा समाज व राष्ट्र के प्रति सदैव सजग एवं कर्त्तव्य परायण रहने का आह्वान किया।

आर्य समाज मुम्बई (काकड़वाड़ी)

आर्य समाज (काकड़वाड़ी) में श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तकवेद प्रचार सप्ताह का आयोजन हुआ। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, संस्कृत रक्षा सम्मेलन, नवीन यज्ञोपवीत धारण, हैदराबाद के बलिदानी आर्यवीरों के प्रति श्रद्धांजलि कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावोत्पादक रहे।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (कुलपति गुरुकुल प्रभात आश्रम) के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। संयोजक पं० देवदत्त शर्मा एवं पं० श्रवणकुमार शर्मा थे। स्वामी विवेकानन्द जी, डॉ० सुमेधा व्याकरणाचार्या तथा डॉ० वागीश शर्मा के प्रवचन प्रेरणादायक रहे। अन्तिम दिन समारोह में आर्य समाज के मंत्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय ने पधारे हुए संन्यासियों, विद्वज्जनों का धन्यवाद ज्ञापन किया आर्य समाज के प्रधान श्री झाऊलाल शर्मा एवं उपप्रधान श्री कर्सनदास जी राणा ने माल्यार्पण करके विद्वानों को सत्कृत किया।

आर्य समाज मन्दिर सुन्दर नगर कालोनी (हि०प्र०)

आर्य समाज मन्दिर सुन्दर नगर कालोनी में श्रावणी पर्व का आयोजन किया गया। सर्वकल्याणार्थ "स्वस्ति याग" के मंत्रों द्वारा यज्ञ में अनेक यजमानों द्वारा आहुतियां प्रदान की गई। चिरंजीलाल तथा पं० शेरसिंह के उपदेश हुए। श्री दयानन्द शास्त्री (रोहतक) तथा आचार्य आर्य नरेश द्वारा वेद कथा की गई। आचार्य आर्य नरेश जी के प्रवचन खुले मैदान में भी हुए। ब्रह्मा दयानन्द शास्त्री थे। २३ अगस्त को महिला सम्मेलन २४ अगस्त को वेद सम्मेलन एवं वेद के विषय पर शंका समाधान हुआ। वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के जीवन पर भी प्रकाश डाला।

वैदिक शोध संगोष्ठी सम्पन्न

मेरठ। गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला में स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान ने स्वामी समर्पणानन्द के जन्मदिवस श्रावण शुक्ल एकादशी १४ अगस्त को एक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया। शोध संगोष्ठी का विषय था वेदों में निर्वचन प्रकार एवं ब्राह्मण ग्रंथों में निर्वचन प्रकार। गोष्ठी के अध्यक्ष मूर्धन्य विद्वान् आचार्य विशुद्धानन्द एवं मुख्य वक्ता डॉ० अवनीन्द्र व डॉ० सत्यकाम वर्मा थे। शोधपत्र प्रस्तुत करने वालों में दिल्ली विश्वविद्यालय, मेरठ विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कुमायूं विश्वविद्यालय, गढ़वाल विश्वविद्यालय आदि विश्वविद्यालयों के विद्वान् उपस्थित थे जिनमें डॉ० जयदत्त उप्रैति, डॉ० जयपाल विद्यालंकार, डॉ० कृष्णकुमार, डॉ० सोमदेव शतांशु आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। संस्थान के अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी के आशीर्वचन के पश्चात् गोष्ठी के संयोजक डॉ० निरुपण विद्यालंकार ने गोष्ठी समाप्ति की घोषणा की।

आर्यरत्न मोहन लाल मोहित को पुत्र शोक

आर्य समाज की महान विभूति आर्यरत्न श्री मोहनलाल जी मोहित 'मारीशस' के छोटे पुत्र प्रिय सुभाष मोहित का ५० वर्ष की आयु में दिनांक १० सितम्बर को प्रातः देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पत्नी एवं तीन बच्चे छोड़ गये। श्री सुभाष की पत्नी आर्य नेता श्री भगवती प्रसाद गुप्त, मुम्बई की सुपुत्री हैं। इससे पूर्व श्री मोहनलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती धनवन्ती देवी जी का देहावसान लगभग एक वर्ष पूर्व हो गया था। उसके पश्चात् उनके छोटे भाई का देहावसान हुआ। इस आर्य परिवार में एक के पश्चात् एक संकट आता रहा है।

दयानन्द संस्थान और 'जनज्ञान' परिवार की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं श्री मोहनलाल मोहित एवं परिजनों को इस संकट का सामना करने की शक्ति प्रदान करे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं

(परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 1600/– रु०
अभी लेने पर 1200/– रु०

(मन्त्र–शब्दार्थ–छन्द–स्वर–देवता आदि सहित)
23×36 से०मी० साइज में, पृष्ठ 2200
बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन लगभग 8 किलो

श्रेष्ठ बढ़िया पेपर पर 3000/– रु० अब 2250/– रु० में प्राप्त करें

आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा ½ धन अवश्य भेजें।

पं० राकेशरानी–अध्यक्ष **दयानन्द संस्थान**

वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, दिल्ली–110036

सम्पर्क कार्यालय : 2286, आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली–110005, दूरभाष–5724741

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

10

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर —महात्मा
वेदभिक्षुः सेवाश्रम लेखरामनगर (इब्राहीमपुर)
पो. आ. मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३६

आश्विन 2054
अक्टूबर 1997

Posted at N. D. PSD on
Date 5 & 6-Delhi Postal
Registration No DL-11185/97
R. N. 10719.65

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य 1600 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड)	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने हुये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	35 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	65 रु.
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या	60 रु.
6.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	6 रु.
7.	धरती का स्वर्ग	6 रु.
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र)	50 रु.
9.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	10 रु.
10.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	6 रु.
11.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	4 रु.
12.	वैदिक सम्पत्ति	151 रु.
13.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	6 रु.
14.	योगासन	4 रु.
15.	योग और ब्रह्मचर्य	6 रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	Concept of God	50 रु.
18.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
19.	Light of Truth	100 रु.
20.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	10 रु.
21.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	50 रु.
22.	संक्षिप्त महाभारत	50 रु.
23.	संक्षिप्त रामायण	15 रु.
24.	ऋग्वेद शतकम	6 रु.
25.	वैदिक सान्ध्य गीत	6 रु.
26.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	3 रु.

100 रु० से अधिक साहित्य पर 15 प्रतिशत 300 रु० से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 रु० से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारूल इस्लाम बनने देंगे?	1.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षुः	1.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? - वेदभिक्षुः	1.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं- वीर सावरकर	1.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? "राकेश रानी"	1.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ - जहीर नियाजी	1.00 रु.
7.	हिन्दू जागो! देश बचाओ	1.00 रु.
8.	इस्लाम - एक परिचय	1.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षुः	1.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	1.00 रु.
11.	बाईबल की चुनौती	1.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	1.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	1.00 रु.
14.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	1.00 रु.
15.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	1.00 रु.
16.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	1.00 रु.
17.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा।	1.00 रु.
18.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे
19.	वीर सावरकर - संक्षिप्त जीवन परिचय	4.00 रु.
20.	मोपला (उपन्यास) - वीर सावरकर	6.00 रु.
21.	जनज्ञान का 'सावरकर विशेषांक'	6.00 रु.

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक - दयानन्द संस्थान
2286-आर्य समाज मार्ग, नई दिल्ली-5

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi